आदिवासी एक्सप्रेस

आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार

रांची, रविवार
01 जून 2025
वर्ष: 38, अंक: 176
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3 रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961

फीचर

अनन्या पांडे के भाई का बॉलीवुड डेब्यू, साथ में दिखेगी ये खूबसूरत एक्ट्रेस, फिल्म का टीजर आ गया

झारखंड

पर्यावरणविद ने गरीब कन्याओं की कराई शादी, कन्या व पौधा दान कर किया विदाई

हजारीबाग

समाज को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक दायित्वबोधः कन्हाई बारीक

झारखंड बोर्ड 12वीं साइंस में अंकिता दत्ता तो कॉमर्स में चाईबासा की रेशमी बनी टॉपर

बिशेष संवाददाता द्वारा

रांची। शनिवार को झारखंड बोर्ड के 12वीं कक्षा का रिजल्ट जारी किया गया। इस परीक्षा में टुंडी रोड गोविंदपुर के रहने वाले इलेक्ट्रीशियन हेल्पर प्रलय कुमार दत्ता की बेटी अंकिता दत्ता ने इंटर साइंस स्टेट टॉपर बनकर गोविंदपुर और जिले का नाम रोशन किया है। इसके अलावा मजदूर के बेटे हसन शेख कॉमर्स स्ट्रीम में राज्य में सेकंड टॉपर बने हैं। स्टेट टॉपर अंकिता राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय गोविंदपुर की छात्रा थी। अंकित तीन बहनों में सबसे बड़ी है। उसकी मां मालती दत्ता गृहिणी है।

हसन शेख मिहिजाम के मस्जिद रोड मिहिजाम का रहने वाला है। इनके पिता असगर शेख आसनसोल के समीप जामुड़िया स्थित ग्लास फैक्ट्री में मजदूरी करते हैं। वह आगे कॉमर्स से स्नातक की पढ़ाई पूरी करेगा। इसके पश्चात चार्टड एकाउंटेंट बनना चाहता है। बताया कि स्कूल के अलावा घर पर पांच-छह घंटे नियमित पढ़ाई करता है। खेल में कोई विशेष रुचि नहीं है । सेल्फ स्टडी से इंटरमीडिएट कॉमर्स संकाय में बेहतर अंक हासिल किए हैं।

पीयूष साव ने इंटरमीडिएट कॉमर्स में राज्य में तीसरे स्थान पर रहे है। वह प्लस टू हाई स्कूल मिहिजाम के छात्र हैं। पीयूष मिहिजाम मेन रोड के रहने वाले हैं। इनके पिता निरंजन साव मिहिजाम में ही हॉर्डवेयर की दुकान का संचालन करते हैं। कॉमर्स में स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात आगे चार्टड एकाउंटेंट बनना चाहते हैं। माता-पिता और विद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से ही यह उपलब्धि हासिल हुई है।

इंटरमीडिएट की परीक्षा में राज्य में कोडरमा जिले को साइंस में दूसरा और कॉमर्स में छठा स्थान मिला है। इस साल जिले से कुल 3005 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी थी। इसमें साइंस से 2572 और कॉमर्स से 433 विद्यार्थी शामिल थे। इस बार की परीक्षा में कुल 2651 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। इनमें साइंस से पास होनेवाले विद्यार्थियों की संख्या 2237 और कॉमर्स से पास होनेवाले विद्यार्थियों की संख्या 414 है। साइंस में कुल मिलाकर 86.97 और कॉमर्स में 95.61 फीसदी बच्चों ने सफलता पायी है। इस बार साइंस और कॉमर्स में मिलाकर 2203 परीक्षार्थियों ने प्रथम श्रेणी से सफलता अर्जित की। साइंस में 1919 और कॉमर्स में 284 विद्यार्थी शामिल हैं। जिले में द्वितीय श्रेणी से पास होनेवाले परीक्षार्थियों की संख्या 448 है। इसमें साइंस में 318 और कॉमर्स में 130 परीक्षार्थी शामिल हैं

लातेहार जिला कॉमर्स व साइंस दोनों में पूरे झारखंड में अव्वल रहा है. कॉमर्स में लातेहार का रिजल्ट शत प्रतिशत हुआ है, जबकि साइंस में 88.2 प्रतिशत रहा है. जिला शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार, इस वर्ष जिले में कॉमर्स के कुल 171 छात्र व छात्राओं ने अपना पंजीयन कराया था. परीक्षा में 169 छात्र-छात्राएं शामिल हुए. इनमें 160 ने प्रथम श्रेणी में और नौ ने द्वितीय श्रेणी से सफलता पाई है. इसी प्रकार इंटरमीडियट साइंस में इस वर्ष लातेहार जिले से कुल 1050 छात्र-छात्राओं ने अपना पंजीयन कराया था, जबकि 1044 ने परीक्षा दी थी. इनमें से 819 प्रथम श्रेणी में व 100 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं. पिछले साल इंटरमीडियट साइंस में लातेहार का रिजल्ट 90 प्रतिशत था. कॉमर्स में उत्क्रमित प्लस टू उच्च विद्यालय नावागढ़ का छात्र क्षितिज सोनी ने 434 अंक प्राप्त कर जिला टॉपर बना है. जबकि राजकीय इंटर कॉलेज बालुमाथ की लक्ष्मी कुमारी ने दूसरा और संत तेरेसा बालिका प्लस टू स्कूल महुआडांड़ की कुमकुम कुमारी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है. इसके अलावा राजकीय इंटर कॉलेज बालुमाथ का सूरज कुमार, संत जोसेफ प्लस टू स्कूल महुआडांड़ का पंकज सिंह, राजकीय इंटर कॉलेज बालुमाथ की ममता कुमारी, उत्क्रमित प्लस टू उच्च विद्यालय कुमंडीह की निशा कुमारी, राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय चंदवा का निखिल कुमार, संत तेरेसा बालिका प्लस टू विद्यालय की रेणु केरकेट्टा व तनवी श्रेया ने क्रमशः चौथा से 10 वां स्थान प्राप्त किया है.

जबकि विज्ञान (साइंस) में राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय चंदवा का पीयूष कुमार गुप्ता ने जिला टॉपर का स्थान प्राप्त किया है. जबकि राजकीय इंटर कॉलेज बालुमाथ की रेशमी कुमारी व राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय बरवाडीह की अर्शी अंजुम ने दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया है. जबकि संत जोसेफ प्लस टू स्कूल महुआडांड़ का हुजैफा अहमद व सिफ्ते रजा, आरके हाई स्कूल मनिका का रंजन कुमार, राजकीय इंटर कॉलेज बालुमाथ का आनंद कुमार, उत्क्रमित प्लस टू उच्च विद्यालय नावागढ़, लातेहार का मो रेहान अंसारी, राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय बरवाडीह का मो आदिल अंसारी व ज्ञान प्रकाश ने क्रमशः चौथा से दसवां स्थान प्राप्त किया है.

जिले का बड़कागांव रत्नगर्भा है. एक ओर जहां बड़कागांव देश को कोयला उपलब्ध करा रहा है. वहीं दूसरी ओर यहां के छात्र भी पूरे राज्य भर में अपना परचम लहरा रहे हैं. जिले के एक किसान के बेटा ने पूरे राज्य में विज्ञान संकाय में तीसरा स्थान लाकर पूरे जिले का नाम रोशन किया है. किशोर कुमार ने बड़कागांव प्लस टू हाई स्कूल से पढ़ाई की है. उन्होंने यह साबित कर दिया कि गांव के स्कूल में भी पढ़ाई करके पूरे राज्य भर में कीर्तिमान स्थापित किया जा सकता है. इसके लिए उन्होंने कोचिंग या ट्यूशन भी नहीं ली.

कड़ी मेहनत और ईमानदारी से किए गए हर काम का परिणाम सकारात्मक होता है. इस बात को बड़कागांव के रहने वाले किशोर कुमार ने साबित कर दिया है. उसने जैक बोर्ड के इंटरमीडिएट परीक्षा में विज्ञान विषय में राज्य में तीसरा स्थान लाकर इतिहास रच दिया. किशोर कुमार बेहद गरीब परिवार से तालुक रखते हैं. उसके पिता किसान हैं. खेती करके ही पूरे परिवार का भरण पोषण करते हैं. मां घर का काम करती हैं.

अभाव भरे जीवन में किशोर कुमार ने यह बता दिया कि ईमानदारी से पढ़ाई किया जाए तो कामयाबी कदम चूमती है. किशोर कुमार की इस उपलब्धि पर बड़कागांव समेत हजारीबाग का नाम राज्य भर में रोशन हो रहा है.

आईईडी की चपेट में आने से ग्रामीण घायल, नक्सलियों ने पुलिस के लिए बिछाया था जाल!

क्राइम संवाददाता द्वारा

चाईबासा: पश्चिमी सिंहभूम जिला में नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन लगातार चलाया जा रहा है. इस सर्च ऑपरेशन के दौरान सारंडा छोटानागरा थाना क्षेत्र अंतर्गत बलिबा में आईईडी विस्फोट हुआ है. आइईडी की चपेट में आने से एक ग्रामीण घायल हो गया है. नक्सलियों द्वारा पूर्व के दिनों में लगाए गए आईईडी ब्लास्ट होने की पुष्टि पश्चिमी सिंहभूम पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन ने की है. जिला पुलिस की ओर से बताया गया कि बलिबा गांव में रहने वाले ग्रामीण अपने जीवनयापन के लिए जंगल के ही भरोसे रहते हैं. ग्रामीण अक्सर जंगल में साल के पत्ते व जलावन की लकड़ियां चुनने जाते हैं.

शुक्रवार को लकड़ी चुनने के क्रम में एक ग्रामीण आईईडी की चपेट में आ गया. आईईडी विस्फोट की सूचना मिलते ही पुलिस के जवान वहां पहुंचे और ग्रामीण को इलाज के लिए मनोहरपुर स्थित अस्पताल पहुंचाया गया. जहां ग्रामीण का इलाज चल है. बता दें कि नक्सलियों ने पुलिस जवानों को नुकसान पहुंचाने के लिए पूर्व के दिनों में जंगलों में आईईडी लगा रखा था. जिसकी चपेट में ये ग्रामीण आ गया.

बता दें कि इससे पहले 30 मई को दोपहर में जराईकेला थाना अंतर्गत तिरिलपोसी के आसपास पहाड़ी जंगल क्षेत्र में भाकपा माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ हुई. जिसके बाद सर्च ऑपरेशन में मौके से विस्फोटक और अन्य दैनिक उपयोग की सामग्री को बरामद किया गया. जिसे विधिवत जब्त किया गया है.

वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व में लगाये गये आईईडी में विस्फोट हुआ. जिसकी चपेट में आने से कोबरा 209 बटालियन के सीटी/जीडी सुनील कुमार टीएस मामूली रूप से जख्मी हो गये. फिलहाल जख्मी जवान की स्थिति स्थिर है.

नक्सली साजिश का पर्दाफाश, एनआईए ने तीन कट्टर माओवादियों पर कसा शिकंजा

क्राइम संवाददाता द्वारा

रांची: राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) ने झारखंड में प्रतिबंधित संगठन सीपीआई (माओवादी) से जुड़े तीन नक्सलियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। एजेंसी ने शुक्रवार को रांची स्थित एक विशेष अदालत में यह पूरक आरोप पत्र दायर किया। एनआईए के मुताबिक, चार्जशीटेड नक्सली कृष्ण हांसदा उर्फ सौरव दा उर्फ अविनाश दा, अभिजीत कोरह उर्फ मतला कोरह उर्फ सुनील कोरह, और रामदयाल महतो उर्फ निलेश दा उर्फ बच्चन दा हैं। इनमें से कृष्ण हांसदा और रामदयाल महतो झारखंड के रहने वाले हैं, जबकि कोरह बिहार का निवासी है। एनआईए ने बताया कि तीनों माओवादी संगठन के सक्रिय सदस्य थे और गिरिडीह जिले के परसनाथ क्षेत्र में जबरन वसूली, हथियारों से धमकाने और लोगों की जबरन भर्ती जैसे अपराधों में शामिल थे। इनकी संलिप्तता उस समय उजागर हुई जब जनवरी 2023 में गिरिडीह जिले के डुमरी थाना क्षेत्र के लूसियो जंगल से कृष्ण हांसदा को गिरफ्तार किया गया। उसके पास से पुलिस ने लेवी का पैसा, एक 7.65 मिमी बोर की पिस्टल और कई आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए थे। इसके बाद स्थानीय पुलिस ने हांसदा, कोरह और महतो सहित अन्य अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। पुलिस ने सबसे पहले हांसदा के खिलाफ चार्जशीट दायर की थी। जून 2023 में एनआईए ने इस मामले को अपने हाथ में लेकर दोबारा केस दर्ज किया और अब तीनों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है।

बोकारो में सामूहिक दुष्कर्म का मामला, पुलिस ने चार आरोपी को किया गिरफ्तार

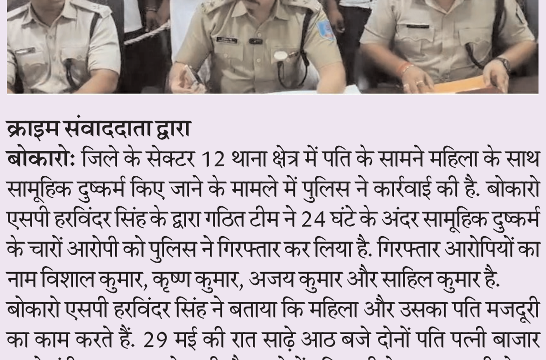

क्राइम संवाददाता द्वारा

बोकारो: जिले के सेक्टर 12 थाना क्षेत्र में पति के सामने महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म किए जाने के मामले में पुलिस ने कार्रवाई की है. बोकारो एसपी हरविंदर सिंह के द्वारा गठित टीम ने 24 घंटे के अंदर सामूहिक दुष्कर्म के चारों आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. गिरफ्तार आरोपियों का नाम विशाल कुमार, कृष्ण कुमार, अजय कुमार और साहिल कुमार है.

बोकारो एसपी हरविंदर सिंह ने बताया कि महिला और उसका पति मजदूरी का काम करते हैं. 29 मई की रात साढ़े आठ बजे दोनों पति पत्नी बाजार करने दुंदीबाद गए हुए थे. इसी दौरान दोनों पति पत्नी ने शराब का भी सेवन किया था. नशे की हालत में आरोपी विशाल कुमार ने एक टोटो में घर छोड़ने की बात कहकर दोनों को चढ़ा लिया, टोटो कृष्ण कुमार चला रहा था.

इसी दौरान घर छोड़ने के बहाने आरोपियों ने दोनों को सेक्टर 12 स्थित एक खंडहरनुमा स्कूल में ले जाया गया. जहां चारों ने पति के सामने बारी-बारी से महिला के साथ गलत काम किया. घटना को अंजाम देने के बाद चारों आरोपी घटनास्थल से फरार हो गए थे.

ठगी के लिए फर्जी कंपनी का बैंक खाता, दुबई से चल रहा था सिंडिकेट

क्राइम संवाददाता द्वारा

रांची: सीआईडी की साइबर क्राइम थाना ने एक बड़े साइबर ठगी का पर्दाफाश किया है। ठग व्हाट्सएप कॉल के जरिए ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) अधिकारी बनकर लोगों को मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में फंसाने की धमकी देते थे। इस तरह उन्होंने एक करोड़ 39 लाख 70 हजार रुपये की ठगी की। रांची पुलिस ने टेक्निकल सेल और सबूतों के आधार पर तेलंगाना और मिजोरम से 3 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से ठगी में इस्तेमाल होने वाले सामान भी बरामद किए गए हैं। तकनीकी जांच और दस्तावेज़ी साक्ष्यों के आधार पर की गई छापेमारी में पुलिस ने तेलंगाना और मिजोरम से तीन साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया। आरोपियों में ईशाक अहमद, कुन्नापुल्ली सुब्रमण्या शर्मा और लालदुहसंगा शामिल हैं। इनके कब्जे से चार मोबाइल फोन, चार सिम कार्ड, पांच एटीएम कार्ड, एक लैपटॉप, तीन चेकबुक, एक पेन ड्राइव, आधार कार्ड, वोटर कार्ड और संबंधित व्हाट्सएप चैट बरामद किए गए हैं।

जांच में सामने आया कि कुन्नापल्ली इंपैक्स प्राइवेट लिमिटेड के नाम पर एक फर्जी आईसीआईसीआई बैंक खाता (नं. 631205033949) खोला गया था। ठगी की गई राशि इसी खाते में जमा कराई जाती थी। केवल एक दिन में इस खाते में कुल 1.72 करोड़ रुपए की क्रेडिट एंट्री दर्ज हुई। इस खाते के संबंध में विभिन्न राज्यों से कुल 15 शिकायतें दर्ज की गई हैं।

गिरफ्तार मुख्य आरोपी कुन्नापुल्ली सुब्रमण्या शर्मा की जांच से यह भी खुलासा हुआ कि वह दुबई स्थित साइबर क्राइम सिंडिकेट के साथ मिलकर काम कर रहा था। इस गिरोह द्वारा दुबई की राकबैंक से खोले गए प्रोप्राइटरशिप फॉर्म और बैंक खातों के माध्यम से भारत में फर्जीवाड़ा किया जाता था। भारत में खोले गए बैंक खातों का उपयोग ठगी की रकम को ट्रांसफर करने में किया जाता था।

साइबर अपराधी पीड़ितों को पहले वीडियो कॉल करते थे और खुद को ईडी अधिकारी बताते थे। कॉल के दौरान सरकारी वर्दी पहने एक व्यक्ति का वीडियो दिखाया जाता था ताकि भरोसा कायम किया जा सके। इसके बाद पीड़ित को मनी लॉन्ड्रिंग या किसी अन्य गंभीर अपराध में फंसाने की बात कहकर डिजिटल अरेस्ट की धमकी दी जाती थी। भयभीत होकर पीड़ित बड़ी रकम आरोपियों के बताए बैंक खातों में ट्रांसफर कर देते थे।

निर्माण शुरू होने से पहले रिम्स-2 की जमीन को लेकर गहराया विवाद

संवाददाता द्वारा

रांची। रांची में रिम्स-2 के निर्माण पर संकट के बादल छंटने का नाम नहीं ले रहे हैं. राज्य सरकार ने पहले कांके के सुकुरहुटू में 102 एकड़ जमीन चिह्नित की थी, लेकिन विवाद के बाद अब कांके के नगड़ी में नई जमीन चिह्नित की गई है. हालांकि, इस नई जमीन पर भी विवाद बढ़ रहा है. ग्रामीणों के विरोध के बीच इस मुद्दे पर सियासत भी तेज हो गई है.

31 मई 2025 को नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने नगड़ी के विवादित स्थल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया. उन्होंने राज्य सरकार से इस जमीन पर रिम्स-2 का निर्माण न करने का अनुरोध किया. रैयतों से मुलाकात के बाद मरांडी ने कहा कि यह जमीन कृषि योग्य है और यहां वर्षों से खेती हो रही है. उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार को इसके आसपास 5-10 किलोमीटर के दायरे में बंजर जमीन पर निर्माण कराना चाहिए. उन्होंने कहा, राज्य में खाद्यान्न की कमी है. ऐसी उपजाऊ जमीन का इस तरह उपयोग करना उचित नहीं है. अगर सरकार को बंजर जमीन नहीं मिलती, तो हमें बताए, हम मदद करेंगे.

बाबूलाल मरांडी ने चेतावनी दी कि यदि इस जमीन पर निर्माण कार्य नहीं रोका गया, तो बड़ा आंदोलन होगा, जिसमें राज्य भर के आदिवासी शामिल होंगे. उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार इस बहाने आदिवासियों को उनके खेतों से बेदखल कर रही है. उन्होंने मुख्यमंत्री से अपील की कि स्थानीय लोगों को खेती करने की अनुमति दी जाए, अन्यथा व्यापक आंदोलन किया जाएगा.

स्वास्थ्य विभाग ने रांची में 1,074 करोड़ रुपये की लागत से रिम्स-2 के निर्माण का निर्णय लिया है. इसके लिए 110 एकड़ जमीन की आवश्यकता होगी, जिस पर 700 बेड का अस्पताल बनेगा. इस परियोजना में स्नातक (UG) और 50 स्नातकोत्तर (PG) सीटों के लिए पढ़ाई की व्यवस्था की घोषणा की गई है. हालांकि, जमीन को लेकर चल रहे विवाद के कारण निकट भविष्य में इसका शिलान्यास होने की संभावना कम नजर आती है.

मंईयां सम्मान योजना के लाभुकों को जल्द मिलेगी एक और बड़ी खुशखबरी!

संवाददाता द्वारा

रांची: झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के लाभुकों को इस महीने तो उनके खाते में पैसा सररकार ने भेजना शुरु कर दिया है. हालांकि, पहले बोला गया था कि मई महीने में एकमुश्त दो महीने का 5000 हजार रुपए मिल जायेगा. लेकिन ऐसा नहीं हुआ ढाई हजार रुपए ही बैक खाते में आया. महिला और बाल विकास विभाग द्वारा राशि जारी होने के बाद विभिन्न जिलों में लाभुकों के खाते में ढाई हजार रुपए की राशि ट्रांसफर होने लगी . फिलहाल हर लाभुक के खाते में अप्रैल महीने की ही राशि ढाई हजार रुपये हस्तांतरित हो रही हैं. अब ऐसा माना जा रहा है कि मई महीने की राशि भी जून महीने में दी जा सकती है यानि कुल 5 हजार रुपए की राशि बैंक खाते में आ सकती है.

हरेक जिले में जिला प्रशासन को जांच पड़ताल में ही काफी समय लगा. इसके चलते ही मई के आखिरी महीने में पैसे दिए गये. अभी भी अयोग्य लाभुकों को हटाने के लिए पड़ताल की जा रही है. कईयों लाभुको का तो बैंक खाता आधार से लिंक नहीं था. इसके चलते उन्हें पैसा नहीं मिला या होल्ड कर दिया गया. पूर्वी सिंहभूम जिले में तो 77 हजार लाभुकों को होल्ड पर रखा गया है. इनके खाते में मंईयां सम्मान योजना की राशि नहीं भेजी जाएगी. इसमें सबसे ज्यादा संख्या जमशेदपुर अंचल में है, जहां 14,662 महिलाओं को मंईयां सम्मान योजना का लाभ यानि मासिक किस्त नहीं मिलेगी.

पूर्वी सिंहभूम जिला प्रशासन की तरफ से 77 हजार लाभुकों के आवेदन की जांच की जा रही है. जांच पड़ताल के दौरान जो महिलाएं अयोग्य पाई जाएंगी उनका नाम मंईयां सम्मान योजना के लाभुकों की सूची से हटा दिया जाएगा. इतना ही नहीं ऐसी महिलाएं जो मंईयां सम्मान का पिछला पैसा उठा चुकी है. उनसे वसूली भी की जाएगी. जिला प्रशासन अपनी तरफ से जांच प्रक्रिया को तेज किए हुए और सभी के दस्तावेजों को बारिकी से जांच कर रही है. जिन महिलाओं का बैंक खाता आधार से लिंक नहीं है. उसे जल्द ही लिंक करने के लि भी बोला गया है.

राज्य सरकार को पैसा भेजने में देरी की वजह कई सारी रही. इतनी गड़बड़ियां और फरेब सामने आए कि जिला प्रशासन के भी होश उड़ गये. ऐसे-ऐसे लोगों ने मंईयां सम्मान का पैसा उठाया, जो इसकी पात्रता ही कहीं से नहीं रखती थी. ऐसे लोगों को खिलाफ जिला प्रशासन ने सख्त एक्शन भी लिया है . सबसे पहले तो उनका नाम हटाया गया. अब उनपर कानूनी कार्रवाई भी करने की तैयारी की जा रही है.

झारखंड सरकार की मंशा साफ है और उसकी कोशिश सिर्फ योग्य लाभुकों को ही मंईयां सम्मान योजना का पैसा देने की हैं. इसके लिए विभाग अपने स्तर से पूरा प्रयास कर रहा है. हेमंत सोरेन सरकार ने विधानसभा चुनाव से पहले ढाई हजार रुपए हर महीने 18 से 50 साल की महिला को देने का एलान किया था. अपनी इस महत्वकांझी योजना के जरिए हेमंत सरकार चाहती थी कि महिलाएं आर्थिक रुप से मजबूत हो और आगे बढ़े.बीच-बीच में दिक्कते सही लाभुको को देने को लेकर आ रही है. लेकिन, अब इन चिजों को भी लगभग दूर कर लिया गया है. अगले छह महीने के लिए इस योजना के पैसों का आवंटन भी कर दिया गया है. यानि हर महीने पैसा मिलेगा. मालूम हो कि आधार सीडिग की प्रक्रिया पूरी होने के बाद 52 लाख से यादा महिलाएं महिला सम्मान योजना की राशि पाने की योग्यता रखती है.

प्रधानमंत्री ने गोवा के लोगों को राज्य दिवस पर बधाई दी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गोवा के लोगों को राज्य दिवस के अवसर पर बधाई दी है। मोदी ने कहा कि गोवा की अनूठी संस्कृति भारत का गौरव है। गोवा के लोगों ने विविध क्षेत्रों में अपनी मजबूत पहचान बनाई है। यह राज्य हमेशा से दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है।प्रधानमंत्री ने एक्स पर पोस्ट किया, गोवा की अनूठी संस्कृति भारत का गौरव है। गोवा के लोगों ने विविध क्षेत्रों में अपनी मजबूत पहचान बनाई है। यह राज्य हमेशा से दुनिया भर से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। पिछले दस दशक में बहुत से ऐसे काम हुए हैं जो गोवा की प्रगति को आगे बढ़ा रहे हैं। आशा है कि आने वाले समय में राज्य विकास की नई ऊंचाइयों को छूता रहेगा।

पीएम मोदी के मार्गदर्शन में दिल्ली में विकास की रफ्तार थमेगी नहीं : रेखा गुप्ता

नई दिल्ली । राजधानी दिल्ली में भाजपा सरकार के 100 दिन पूरे होने पर शनिवार को दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि पीएम मोदी के मार्गदर्शन में दिल्ली में विकास की रफ्तार नहीं थमेगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट किया। उन्होंने पोस्ट में लिखा, 'पीएम मोदी ने जब मुझे दिल्ली की सेवा का अवसर दिया, तो यह सिर्फ एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक संकल्प था- जनसेवा पर केंद्रित राजनीति, और नीति जो जनकल्याण के लिए हो। इन 100 दिनों में हमने हर वादा जमीन पर उतारने की दिशा में प्रभावी काम किया। हमारी प्राथमिकता साफ थी- विकास ऐसा जो दिखाई भी दे और महसूस भी हो। स्वच्छता, सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण और ई-गवर्नेंस- हर मोर्चे पर हमारी कोशिश यही रही कि दिल्ली एक सशक्त, सुरक्षित और समावेशी राजधानी बने। पीएम मोदी की प्रेरणा, मार्गदर्शन और 'सबका साथ, सबका विकास' के विजन से ही यह संभव हो पाया है। दिल्ली की जनता का विश्वास ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है। बदलाव की नींव रखी जा चुकी है, विकास की रफ्तार अब थमेगी नहीं। दिल्ली अब सुशासन और सेवा के संकल्प के साथ, निरंतर आगे बढ़ती रहेगी।दिल्ली सरकार के 100 दिन पूरे होने पर एक वर्कबुक जारी की गई। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है इस वर्कबुक में सरकार की अब तक की प्रमुख उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं का विवरण शामिल है। आयुष्मान भारत योजना का विस्तार, यमुना सफाई अभियान और महिला समृद्धि योजना जैसे महत्वपूर्ण कदम इन 100 दिनों की सेवा का प्रतिबिंब है। हमारी सरकार पीएम मोदी के दिखाए गए 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के राह पर अग्रसर है।

दिन निकलते ही गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंजा ग्रेटर नोएडा, मुठभेड़ में तीन शातिर लुटेरे गिरफ्तार, एक घायल

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के बीटा-2 कोतवाली पुलिस ने शनिवार तड़के एनआरआई कट परी चौक के पास चेकिंग के दौरान लुटेरों से मुठभेड़ में एक बदमाश को घायल कर तीन शातिर लुटेरों को गिरफ्तार किया है। मुठभेड़ के दौरान बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग की। जिसके जवाब में हुई कार्रवाई में एक बदमाश को पैर में गोली लगी। उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। गिरफ्तार आरोपी राह चलते लोगों से बंदूक की नोक पर मोबाइल लूट की वारदात को अंजाम देते थे। एडिशनल डीसीपी सुधीर कुमार का कहना है कि शनिवार तड़के एनआरआई कट के पास चेकिंग के दौरान एक ईको गाड़ी को रुकने का इशारा किया गया। लेकिन उसमें सवार बदमाश तेजी से वाहन चलाकर भागने लगे। पुलिस ने शक के आधार पर पीछा किया तो घिरते देख तीनों बदमाश गाड़ी छोड़कर भागने लगे और पुलिस पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग की। जवाबी फायरिंग में एक बदमाश घायल हो गया। उसकी पहचान आकाश निवासी गांव भदेढू थाना राजपुर जिला चित्रकूट के रूप में हुई है। वह वर्तमान में फेज-2 कोतवाली क्षेत्र के भंगेल में किराये पर रह रहा था। घायल आकाश के दो अन्य साथियों कृष्ण निवासी बुलंदशहर व राम मौर्या निवासी कासगंज को पुलिस ने कॉम्बिंग के दौरान गिरफ्तार कर लिया। दोनों भंगेल क्षेत्र में किराये पर रह रहे थे।

वायु प्रदूषण रोकने के लिए ऊंची इमारतों पर एंटी-स्मॉग गन लगाना अनिवार्य, नहीं तो होगी सख्त कार्रवाई

नई दिल्ली। दिल्ली की वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए दिल्ली सरकार ने ऊंची इमारतों पर सालभर एंटी-स्मॉग गन लगाना अनिवार्य कर दिया है। यह देश में पहली बार है जब किसी शहर ने वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए ऊंची इमारतों को कानूनी रूप से शामिल किया है। पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि यह हमारे बच्चों की शुद्ध सांसों के लिए उठाया गया ऐतिहासिक कदम है। अब बहानों की कोई जगह नहीं है। एंटी-स्मॉग गन लगाने का आदेश व्यावसायिक परिसरों, मॉल, होटलों और संस्थागत भवनों पर लागू होगा। इसका निर्मित क्षेत्र 3,000 वर्ग मीटर से ज्यादा होगा और ऊंचाई ग्राउंड फ्लोर के अलावा 5 मंजिल या उससे अधिक होगी। आवासीय भवनों, ग्रुप हाउसिंग सोसाइटियों और व्यक्तिगत मकानों को इसमें छूट दी गई है।

राष्ट्रपति ने 15 नर्सों को प्रदान किए राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार

एजेंसी
नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में 15 नर्सों को वर्ष 2025 के लिए राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार से सम्मानित किया। राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार की स्थापना स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने उत्कृष्ट नर्सिंग कर्मियों द्वारा प्रदान की गई सराहनीय सेवाओं को मान्यता देने और सम्मानित करने के लिए की थी।

पुरस्कार प्राप्त करने वालों में अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह से रेखा रानी सरकार, आंध्र प्रदेश वलिवेती सुभावती, दादर एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव से सरोज फकीरभाई पटेल, लक्षद्वीप से रजिया बेगम पी बी, महाराष्ट्र से सुजाता अशोक बागुल, असम से बीना पानी डेका, अरुणाचल प्रदेश से किजुम

सोरा कारगा, नई दिल्ली के आरएमएल अस्पताल से डिम्पल अरोड़ा, नर्स दिल्ली से मेजर जनरल शीना पी डी, कर्नाटक से डॉ बानू एम आर, मणिपुर से लीमापोकपम रंजीता देवी, मिजोरम से वी लालमंगई, पुडुचेरी से एल एस मणिमोझी, तमिलनाडु से अलामेलु मगयारकरसी और पश्चिम बंगाल से डॉली बिस्वास शामिल हैं। इस मौके पर केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने देश के समर्पित नर्सिंग पेशेवरों को राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कार 2025 से सम्मानित करने के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का आभार व्यक्त किया। अपने एक्स पर साझा किए अपने संदेश में जेपी नड्डा ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान मानवता की सेवा के प्रति आपके समर्पण का जश्न मनाता है और आपको सकारात्मक प्रभाव डालते रहने के लिए प्रेरित करेगा।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ब्रिक्स संसदीय फोरम में लेंगे भाग

एजेंसी
नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला 3 से 5 जून तक ब्राजील के ब्रासीलिया में आयोजित होने वाले 11वें ब्रिक्स संसदीय फोरम में भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल (आईपीडी) का नेतृत्व करेंगे। इस फोरम का मुख्य विषय अधिक समावेशी और दीर्घकालिक वैश्विक शासन विधि के निर्माण में ब्रिक्स संसदों की भूमिका है। लोकसभा सचिवालय के अनुसार, फोरम में ब्रिक्स देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका, सऊदी अरब, मिस्र, संयुक्त अरब अमीरात, इथियोपिया, इंडोनेशिया और ईरान) और आमंत्रित देशों के संसदीय अध्यक्ष और सांसद भाग लेंगे। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला फोरम के पूर्ण सत्र में इंटर-पार्लियामेंट्री सहयोग के लिए जिम्मेदार और समावेशी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य विषयों पर बोलेंगे। फोरम में भारत की डिजिटल पहल, जिसमें भाषिनी भी शामिल है, पर प्रकाश डाला जाएगा।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के नेतृत्व में भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल में राज्यसभा के उपाध्यक्ष हरिवंश, राज्यसभा सदस्य सुरेंद्र सिंह नागर, लोकसभा सदस्य विजय बघेल, विवेक ठाकुर, डॉ. शबरी बिरेड्डी, लोकसभा के महासचिव उत्पल कुमार सिंह और राज्यसभा के महासचिव पीसी मोदी शामिल होंगे। फोरम का उद्देश्य ब्रिक्स संसदों की भूमिका को मजबूत करना और वैश्विक शासन में अधिक समावेशी और सतत विकास को बढ़ावा देना है। फोरम में विभिन्न सत्रों में ब्रिक्स देशों के बीच सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देने पर चर्चा होगी।

चार देशों के राजदूतों ने राष्ट्रपति को अपने परिचय-पत्र प्रस्तुत किए

एजेंसी
नई दिल्ली। चाड, बेनिन, अल्जीरिया और नाइजर सहित चार देशों के राजदूतों ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की और उन्हें अपने परिचय-पत्र प्रस्तुत किए। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी बयान के अनुसार, राष्ट्रपति को अपने परिचय-पत्र प्रस्तुत करने वालों में चाड की राजदूत इल्दजिमा बद्दा मल्लोत, बेनिन के राजदूत एरिक जीन-मैरी जिन्सोउ, अल्जीरिया के जनवादी गणराज्य के राजदूत अब्देनोर खलीफी और नाइजर के राजदूत ज़ादा सेडौ शामिल हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इन राजदूतों का स्वागत किया और भारत के साथ संबंधों को मजबूत बनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि भारत इन देशों के साथ मिलकर विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने और आपसी हितों को बढ़ावा देने के लिए काम करेगा। इन राजदूतों की नियुक्ति और परिचय-पत्र प्रस्तुत करने की प्रक्रिया दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों को मजबूत करने और आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। यह दोनों देशों के

बीच विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में मदद करेगा। इन राजदूतों की नियुक्ति से भारत और इन चार देशों के बीच व्यापार, संस्कृति, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ने की संभावना है। यह भारत के लिए अपने वैश्विक संबंधों को मजबूत करने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने का एक अवसर है।

आयुष सुरक्षा पोर्टल की शुरुआत, भ्रामक विज्ञापनों पर रखेगा नजर

एजेंसी
नई दिल्ली । भ्रामक विज्ञापनों और दवा को लेकर गलत सूचना को संबोधित करने के लिए आयुष मंत्रालय ने सुरक्षा पोर्टल लॉन्च किया। यह पोर्टल आयुष से संबंधित दवाओं के भ्रामक विज्ञापनों एवं गलत सूचनाओं पर निगरानी रखेगा। आयुष मंत्रालय में आयोजित प्रेसवार्ता में आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव ने कहा कि आयुष सुरक्षा पोर्टल नागरिकों और पेशेवरों को सक्रिय भागीदार बनने के लिए सशक्त बना रहा है। यह पोर्टल भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ निगरानी तंत्र के रूप में कार्य करेगा और सुनिश्चित करेगा कि केवल विश्वसनीय उत्पाद ही लोगों तक पहुंचे। आयुष सुरक्षा पोर्टल राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरणों, राष्ट्रीय फार्मा को विजिलेंस केंद्रों और प्रमुख नियामक हितधारकों से डेटा एकीकृत करके, पोर्टल भ्रामक विज्ञापनों और प्रतिकूल दवा प्रतिक्रियाओं पर निगरानी, व्यवस्थित विश्लेषण और समन्वित कार्रवाई की सुविधा प्रदान

करता है। आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने कहा कि इस पोर्टल को जनता के लिए सुलभ बना दिया गया है ताकि कोई भी नागरिक सीधे पोर्टल के माध्यम से भ्रामक विज्ञापनों या एडीआर की रिपोर्ट कर सके। आयुष सुरक्षा पोर्टल को रिट याचिका (सिविल) संख्या में सुप्रीम कोर्ट के 30 जुलाई, 2024 के आदेश के अनुसार विकसित किया गया है, जिसमें कोर्ट ने भ्रामक विज्ञापनों और प्रतिकूल दवा प्रतिक्रियाओं से संबंधित डेटा की निगरानी और प्रकाशन के लिए एक केंद्रीकृत डैशबोर्ड की आवश्यकता पर बल दिया था। कोर्ट ने भारत संघ को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरणों को शिकायतों की रिपोर्ट करने, अंतर-राज्यीय रेफरल साझा करने और की गई कार्रवाई की स्थिति को अपडेट करने की अनुमति देने के लिए ऐसी प्रणाली स्थापित की जाए।

राहुल गांधी के रहते कांग्रेस के चार टुकड़े हो जाएंगे : मुख्तार अब्बास नकवी

एजेंसी
नई दिल्ली। भाजपा के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के 'पीओके' वाले बयान पर जोरदार पलटवार किया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के रहते संभव है कि कांग्रेस पार्टी के चार टुकड़े हो जाएं। समाचार एजेंसी से बातचीत के दौरान भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि पीओके जल्द भारत में शामिल होगा। जहां तक राहुल गांधी का सवाल है, उनके रहते पीओके का तो पता नहीं, उनकी पार्टी के ही चार टुकड़े हो जाएंगे।रेवंत रेड्डी के बयान कितने राफेल नष्ट किए गए, इस पर भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि कुछ लोगों को देश की जीत पर भ्रम पैदा करने और नकारात्मकता फैलाने की आदत हो गई है। वैसे लोग देश की सफलता पर दुर्भावना के गीत गाते हैं। ऐसे लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हमारी सेना ने किस तरह आतंकवादियों को नष्ट किया है और बहादुरी और पराक्रम का परिचय दिया है। आतंकवादी रो

रहे हैं और उनके नेता उनके आंसू पोंछ रहे हैं। उनकी असहिष्णुता पीएम मोदी की सफलता के खिलाफ हो सकती है, लेकिन देश की सफलता के प्रति असहिष्णुता और नकारात्मकता उनके हित में नहीं है।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर पर भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि शशि थरूर कभी कांग्रेस पार्टी के चहेते थे। लेकिन, आज वे पार्टी की आंख की किरकिरी बन गए हैं, क्योंकि वह राष्ट्रहित में बोल रहे हैं, आतंकवाद को खत्म करने के लिए मजबूती से खड़े हैं। वह कांग्रेस की नकारात्मक मानसिकता से सहमत नहीं हैं और इसलिए उनके लिए परेशानी का सबब बन गए हैं। जो व्यक्ति कभी उनका पसंदीदा हुआ करता था, वही अब उन्हें बर्दाश्त नहीं हो रहा है। यह कांग्रेस पार्टी की असली मानसिकता को दर्शाता है।

कांग्रेस सांसद सलमान खुर्शीद की ओर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने की तारीफ पर भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने कहा कि जो भी जमीनी हकीकत को समझता है, वह कांग्रेस की तरह झूठा प्रचार नहीं करेगा।

यह सच है कि अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद जम्मू-कश्मीर के लोग प्रगति, समृद्धि और राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदार बने हैं। आपको याद होगा कि स्थानीय निकाय चुनाव, जो पहले कभी नहीं हुए, अब कराए गए हैं। विधानसभा और लोकसभा के चुनाव भी हुए हैं। 370 के खत्म होने के बाद 370 से अधिक समस्याएं खत्म हो गई हैं।

दिल्ली में कई न्यायिक अधिकारियों के तबादले

एजेंसी
नई दिल्ली। दिल्ली में न्यायपालिका से जुड़ी बड़ी प्रशासनिक कार्रवाई के तहत कई न्यायिक अधिकारियों के तबादले किए गए। इस फेरबदल में कड़कड़डूमा कोर्ट में 2020 के दिल्ली दंगों से संबंधित मामलों की सुनवाई कर रहे अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (एएसजे) समीर बाजपेयी और एएसजे पुलस्त्य प्रमाचला जैसे प्रमुख न्यायिक अधिकारियों के नाम भी शामिल हैं।दिल्ली उच्च न्यायालय की आधिकारिक वेबसाइट पर जारी अधिसूचना के अनुसार, एएसजे समीर बाजपेयी को साकेत कोर्ट (दक्षिण-पूर्व जिला) में एएसजे-फास्ट ट्रैक कोर्ट (एफटीसी) के रूप में स्थानांतरित किया गया है।वह अब तक उत्तर-पूर्वी दिल्ली में 2020 में हुए दंगों मामले की सुनवाई कर रहे थे, जो यूएपीए (गैरकानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम) के तहत दर्ज है। इस मामले में शेरजील इमाम, उमर खालिद, ताहिर हुसैन, खालिद सैफी और सफूरा जरगर सहित कई प्रमुख आरोपियों के खिलाफ आरोप तय करने की प्रक्रिया चल रही थी।वहीं, एएसजे पुलस्त्य प्रमाचला, जो कड़कड़डूमा कोर्ट में कार्यरत थे, उन्हें पटियाला हाउस कोर्ट में जिला न्यायाधीश (वाणिज्यिक न्यायालय) के रूप में स्थानांतरित किया गया है। प्रमाचला भी कई संवेदनशील मामलों की सुनवाई से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, राऊज एवेन्यू कोर्ट के विशेष सीबीआई जज संजीव अग्रवाल का भी तबादला किया गया है। वह अगस्ता वेस्टलैंड घोटाले की सुनवाई कर रहे थे। उन्हें अब तीस हजारी कोर्ट में जिला जज (कमर्शियल कोर्ट) के पद पर नियुक्त किया गया है। हाल ही में जज संजीव अग्रवाल ने अगस्ता वेस्टलैंड केस में मुख्य आरोपी और ब्रिटिश बिचौलिये क्रिश्चियन मिशेल जेम्स से यह कहते हुए नाराजगी जाहिर की थी कि यह देखकर दुख हुआ कि सात साल में भी मुकदमा शुरू नहीं हुआ है।

नई दिल्ली में हुई भारत-अमेरिका आर्मी-टू-आर्मी स्टाफ वार्ता

एजेंसी
नई दिल्ली । भारत और अमेरिका के वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों की एक महत्वपूर्ण वार्ता हुई है। यह भारत-अमेरिका आर्मी-टू-आर्मी स्टाफ वार्ता है, जिसका आयोजन 28 से 30 मई तक नई दिल्ली में किया गया। भारतीय सेना के मुताबिक, इन विचार-विमर्शों का उद्देश्य मौजूदा समय में चल रहे द्विपक्षीय रक्षा सहयोग की समीक्षा करना है। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति का मूल्यांकन, सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान, अंतर-संचालन क्षमता को सशक्त बनाना और व्यापक रणनीतिक साझेदारी को मजबूती प्रदान करना भी इस वार्ता का उद्देश्य था। भारतीय सेना के मुताबिक, दोनों पक्षों ने वैश्विक शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में एक मजबूत भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की है। गौरतलब है कि इससे पहले, लेफ्टिनेंट जनरल जे.बी. वॉवेल, डिप्टी कमांडिंग जनरल, यूएस आर्मी पैसिफिक ने 28वीं एग्जीक्यूटिव स्टीयरिंग ग्रुप (ईएसजी) बैठक के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल एन.एस. राजा सुब्रमणि, उपसेनाध्यक्ष (वीसीओएएस) से मुलाकात की थी। यह संवाद भारत और अमेरिका के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत

करने और आर्मी-टू-आर्मी सहयोग को बढ़ावा देने के प्रति भारतीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सेना का कहना है कि हम मिलकर विश्वास, आपसी सहयोग और साझा रणनीतिक हितों की एक मजबूत नींव तैयार कर रहे हैं। गौरतलब है कि भारत विश्व के विभिन्न देशों के साथ अच्छे सामरिक, आर्थिक और सामाजिक संबंध रखता है। जहां एक ओर अमेरिकी सेना के वरिष्ठ अधिकारियों से वार्ता का यह दौर पूरा हुआ है, वहीं शनिवार से भारत और मंगोलिया की सेना एक संयुक्त सैन्य अभ्यास करने जा रही हैं। यह अभ्यास मंगोलिया में होगा। परंपरागत सैन्य अभ्यास से हटकर इस संयुक्त सैन्य अभ्यास की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यहां दोनों सेनाएं साइबर युद्ध संबंधित एक्सरसाइज करती दिखाई देंगी। इसके अलावा, दोनों देशों के सैनिक एक-दूसरे के परिचालन अनुभवों से भी सीखेंगे।

एनसीआर में मौसम ने बदला मिजाज, अगले तीन दिन बारिश के आसार

एजेंसी
नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में तेज हवाओं ने मौसम का मिजाज बदल दिया। हालांकि तापमान में ज्यादा गिरावट न होने के कारण रात भर उमस भरी गर्मी लोगों को परेशान करती रही। से ही आसमान में हल्के बादल छाए हुए हैं और मौसम में नमी बनी हुई है। मौसम विभाग ने लिए एनसीआर में करीब 4 मिलीमीटर बारिश की संभावना जताई है। भारतीय मौसम विभाग की वेबसाइट पर जारी जानकारी के अनुसार, अगले तीन दिनों तक यानी 30 मई से 4 जून तक एनसीआर और इसके आसपास के इलाकों में रुक-रुक कर बारिश होती रहेगी। 30 मई को आईएमडी ने गरज-चमक के साथ तेज हवाएं चलने और बिजली गिरने की चेतावनी दी थी। 40-50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की संभावना जताई गई थी। हालांकि 31 मई और 1 जून को 'नो वार्निंग' रही, लेकिन मौसम में अस्थिरता बने रहने की संभावना है। 1 जून को आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए रहने और गरज के साथ बिजली गिरने की संभावना जताई गई है। अधिकतम तापमान 37 डिग्री और न्यूनतम 28 डिग्री रहने का अनुमान है। 2 जून को गरज-चमक के साथ बारिश का पूर्वानुमान है, वहीं 3 जून को भी मध्यम बारिश के साथ बादलों की मौजूदगी बनी रहेगी। 4 जून को बारिश या गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है। तापमान में मामूली गिरावट देखने को मिलेगी, लेकिन ह्यूमिडिटी अधिक रह सकती है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि इस समय पश्चिमी विक्षोभ और बंगाल की खाड़ी से आ रही नम हवाओं के कारण एनसीआर में लगातार मौसम में बदलाव हो रहा है। हालांकि मानसून के आगमन में अभी कुछ दिन बाकी हैं, लेकिन इससे पहले की यह प्री-मानसूनी गतिविधियां लोगों को थोड़ी राहत जरूर दे सकती हैं। अगले 3 दिनों के मौसम पूर्वानुमान के मुताबिक 2 जून को गरज के साथ बारिश, अधिकतम तापमान 37 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री रहने की संभावना है।

सौरभ भारद्वाज ने जारी किया दिल्ली सरकार के 100 दिनों का रिपोर्ट कार्ड, लगाए कई आरोप

एजेंसी
नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी के नेता सौरभ भारद्वाज ने दिल्ली सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने सरकार के 100 दिनों को 'असफलताओं से भरा हुआ काल' करार देते हुए एक वैकल्पिक रिपोर्ट कार्ड जारी किया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने खुद का झूठा रिपोर्ट कार्ड तैयार किया है, लेकिन आम आदमी पार्टी ने एक असली रिपोर्ट कार्ड पेश किया है। सौरभ भारद्वाज ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से दिल्लीवासियों की तरफ से पांच महत्वपूर्ण सवाल पूछे हैं। जिनमें दिल्ली की महिलाओं को वादा किए गए 2500 प्रतिमाह कब मिलेंगे? 10,000 से ज्यादा बस मार्शलों को नौकरी से हटाया गया था, और उन्हें 60 दिन में पुनः बहाल करने का वादा किया गया था – अब तक नौकरी क्यों नहीं मिली? निजी स्कूलों द्वारा बढ़ाई गई फीस को वापस लेने का आदेश कब जारी किया जाएगा? डीपीएस द्वारका में बच्चों को प्रताड़ित करने की शिकायत पर अब तक एफआईआर क्यों नहीं दर्ज हुई? क्या डीपीएस द्वारका को सरकार अपने नियंत्रण में ले रही है? अगर हां, तो कार्रवाई कब शुरू होगी? उन्होंने भाजपा सरकार पर जनहित की योजनाओं को बंद करने का आरोप भी लगाया। भारद्वाज ने कहा कि भाजपा ने 'फरिश्ते

स्कीम' को बंद कर दिया, जिसके कारण हाल ही में एक 9 साल के बच्चे की मौत हो गई। इसके अलावा, भाजपा ने होली और दीपावली पर मुफ्त गैस सिलेंडर देने का वादा किया था, लेकिन न केवल यह वादा अधूरा रहा, बल्कि सिलेंडर की कीमत 50 और बढ़ा दी गई। झुग्गी-झोपड़ी वालों से किए गए वादों को लेकर भी आम आदमी पार्टी ने भाजपा को घेरा। सौरभ भारद्वाज ने कहा, 'जहां झुग्गी, वहां मकान' का वादा करके अब उन्हीं झुग्गियों पर बुलडोजर चलवाए जा रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली सरकार चोरी-छिपे फैसले ले रही है और अभिभावकों से अहम जानकारियां छुपा रही है, जबकि प्राइवेट स्कूलों को हर जानकारी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार एक नया एक्ट ला रही है, लेकिन उसे विधानसभा में प्रस्तुत करने की बजाय अध्यादेश के जरिए लागू करना चाहती है, ताकि जनता के बीच चर्चा न हो सके।

दिल्ली में कोरोना के नए वेरिएंट से पहली मौत, 60 साल की महिला ने तोड़ा दम

एजेंसी
नई दिल्ली । देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में कोरोना से पहली मौत की पुष्टि हुई है। 60 वर्षीय मृतक महिला पहले से ही कई बीमारियों से जूझ रही थी। कोरोना को लेकर लोगों के बीच में डर का माहौल पैदा कर दिया है। दिल्ली में कोरोना के मामलों में तेजी देखने को मिल रही है। लेकिन, स्वास्थ्य मंत्रालय का दावा है कि वो हर प्रकार की परिस्थिति का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार है। स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह से दुरूस्त कर ली गई है। राजधानी में कोरोना के 104 मामले सक्रिय हैं। इनमें से 99 मामले पिछले एक सप्ताह के दौरान बढ़े हैं।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, देश में सबसे ज्यादा सक्रिय मामले केरल में हैं। इसके बाद महाराष्ट्र और दिल्ली का नंबर आता है। केरल में कोविड-19 के सक्रिय मामलों की संख्या 430, महाराष्ट्र में 209 और दिल्ली में 104 हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 19 मई तक 24 सक्रिय मामले थे। लेकिन, एक ही हफ्ते में 99 मामले और बढ़े, जबकि 24 मरीज अब तक रिकवर हुए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की वेबसाइट पर मौजूद जानकारी के अनुसार, कई राज्यों में सक्रिय मामले बढ़े हैं, जिनमें केरल (+355), महाराष्ट्र (+153) और दिल्ली (+24) शामिल हैं। इसके अलावा, कुछ जगहों पर मौतों में भी इजाफा हुआ है, जिनमें महाराष्ट्र (+4) और कर्नाटक (+1) शामिल हैं। हालांकि, बहुत से राज्यों में कोई नया मामला या मौत नहीं दर्ज की गई है। इसके अलावा, कोविड-19 से सबसे ज्यादा मरीज महाराष्ट्र में ठीक हुए हैं। महाराष्ट्र में 8,29,849, केरल में 6,84,927 और आंध्र प्रदेश में 2,32,635 में सबसे अधिक मरीजों ने कोरोना को मात दी है। सबसे ज्यादा मौतें (कोरोना की पहली लहर से अब तक) :महाराष्ट्र (1,48,606), तमिलनाडु (38,086) और कर्नाटक (40,412) में हुई हैं। बता दें कि 19 मई के बाद देश के कई राज्यों में कोरोना वायरस के नए मामले दर्ज किए गए हैं। जिनमें आंध्र प्रदेश में (4), छत्तीसगढ़ में (1), गोवा में (1), गुजरात में (76), हरियाणा में (8), कर्नाटक में (34), मध्य प्रदेश में (2), राजस्थान में (11), तमिलनाडु में (3) और तेलंगाना में (1) मरीज शामिल हैं।

संक्षिप्त समाचार

सेवानिवृत्त होने पर अंचलाधिकारी को दी गई भावभीनी विदाई

संवादाता चरही

चरही। चुरचू प्रखंड कार्यालय में शनिवार को अंचलाधिकारी राजमोहन तूरी के सेवानिवृत्त होने पर भावभीनी विदाई दिया गया। विदाई के दौरान सेवानिवृत्त सीओ को बुके देकर सम्मानित किया गया। मौके पर प्रमुख निरंजन प्रसाद नायक ने अंचलाधिकारी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इनका कार्यकाल काफी सराहनीय रहा है। इनके सेवानिवृत्त होने से हम लोगों को इनकी कमी खलेगी। प्रमुख ने कहा कि पदाधिकारियों का आना-जाना लगा रहता है। परंतु कुछ पदाधिकारी ऐसे भी होते हैं जो अपना कार्य की बदौलत छाप छोड़ जाते हैं। जिसे लोग भूल नहीं पाते हैं। वहीं, सेवानिवृत्त अंचलाधिकारी राजमोहन तूरी ने कहा कि मुझे चुरचू प्रखंड क्षेत्र की जनता की ओर से ढ़ेर सारा प्यार और स्नेह मिला है। जिसे मैं कभी भुला नहीं पाऊंगा। अपने डेढ़ वर्ष के कार्यकाल में मुझे यहां अपनापन लगने लगा। अंचलाधिकारी राजमोहन तूरी की सेवानिवृत होने पर बीडीओ ललित राम ने चुरचू प्रखंड के अंचलाधिकारी के रूप पदभार को संभाला।

कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह ने गुरु अर्जुन देव जी की शहादत दिवस पर सरबत सेवा कार्यक्रम में लिया भाग

- धार्मिक सहिष्णुता और सेवा की भावना का दिया संदेश

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने शनिवार को हजारीबाग के पुराना बस स्टैंड स्थित होटल गुरुनानक पैलेस के समीप आयोजित सरबत सेवा कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन रम्मी जी और उनकी टीम द्वारा सिख धर्म के पाँचवें गुरु, श्री गुरु अर्जुन देव जी की शहादत को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए किया गया। इस अवसर पर मुन्ना सिंह ने गुरु अर्जुन देव जी के बलिदान को मानवता, सहिष्णुता और सेवा का प्रतीक बताते हुए कहा, गुरु जी ने अपने जीवन से यह सिखाया कि प्रेम, सेवा और सहनशीलता से ही अत्याचार और अन्याय का उत्तर दिया जा सकता है। आज के समय में समाज को उसी भावना की फिर से आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा, गुरु जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि जाति, धर्म या पंथ से ऊपर उठकर यदि हम सरबत दा भला अर्थात सभी के कल्याण की भावना से आगे बढ़ें, तो समाज में भाईचारे और सौहार्द की स्थापना निश्चित है।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर डेंटल कॉलेज द्वारा हजारीबाग के विभिन्न स्थानों में जन जागरूकता पर चलाया गया अभियान

- नुक्कड़-नाटक से तम्बाकू की सेवन से होने वाली खतरनाक बिमारियों से लोगों को कराया अवगत, तंबाकू निषेध का उपस्थित जनों ने लिया शपथ
- नशे को छोड़ने का संकल्प लें और अपने जीवन को बीमारियों से बचाएं: डॉ प्रवीण श्रीनिवास

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। हजारीबाग कॉलेज ऑफ डेंटल साइंसेस एंड हॉस्पिटल द्वारा दिन शनिवार को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर हजारीबाग के विभिन्न स्थानों पर जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम चलाया गया। तम्बाकू के सेवन से होने वाला हानिकारक प्रभाव को प्रस्तुति देकर जन जागरूकता फैलाया गया। कई प्रकार के जन जागरूकता का स्लोगन तंबाकू छोडे जीवन से नाता जोडो का उद्घोष कर तम्बाकू का सेवन ना करने की लोगों से अपील की गई। विभिन्न विद्यालय में नुक्कड़-नाटक एवं संबोधन कर तम्बाकू की सेवन से होने वाली खतरनाक बिमारियों से अवगत कराया गया। गांवों में ओरल कैंसर की जांच, आईईसी सामग्री का उपयोग करके तंबाकू सेवन बंद करने की अपील की गई। इस दौरान तंबाकू निषेध का उपस्थित जनों ने शपथ लिया। शपथ के दौरान समाज को तंबाकू मुक्त बनाने अपना योगदान देने की बात कही। एम्स देवघर के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। हजारीबाग डेंटल कॉलेज के डॉ निषाद गवली के मार्गदर्शन में जागरूकता अभियान चलाया गया। साथ ही ओरल कैंसर की रोकथाम के लिए कई अन्य गतिविधियाँ की गईं।

हजारीबाग डेंटल कॉलेज के सचिव डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने संबोधित में कहा कि तंबाकू जानलेवा है। जितनी भी गंभीर बीमारियां जैसे फेफड़ों का कैंसर, शवसन रोग, मुंह का कैंसर, गले का कैंसर, शरीर का इम्यून सिस्टम कमजोर करता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करता है। तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी यह कैंसर की पहली सीढ़ी है। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर तंबाकू जैसे नशे को छोड़ने का संकल्प लें और अपने जीवन को बीमारियों से बचाएं। उन्होंने कहा कि तंबाकू से दूर रहकर वातावरण को भी स्वच्छ बना सकते हैं। तंबाकू के लिए जागरूक करने के लिए समाज को आगे आने की जरूरत है। मौके पर विशेष रूप से जागरूकता अभियान कार्यक्रम में डॉ कृष्ण राज, डॉ दीपांशु मिश्रा, द्वितीय वर्ष के छात्र और इंटर्न ने अपना सरहानीय योगदान दिया।

समाज को बेहतर बनाने के लिए ज़रूरी है वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक दायित्वबोध: कन्हाई बारीक

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ब्रेकथ्रू साइंस सोसायटी, हजारीबाग चैप्टर द्वारा सात दिवसीय समर कैंप का आयोजन किया गया। स्थानीय लर्न इजी क्लासेज, रामनगर में सांस्कृतिक कार्यक्रम सह प्रशस्ति पत्र वितरण के साथ हुआ। समर कैंप का समापन कार्यक्रम की शुरूआत संगठन के पूर्व सक्रिय सदस्य मनोरंजन प्रमाणिक को याद कर किया गया। समन्वयक राजेश कुमार द्वारा सात दिवसीय कैंप की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसके बाद पांच समूह के प्रतिनिधियों ने इस कैंप के 7 दिनों का अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि इस कैंप से उनकी बौद्धिक क्षमता बढ़ी है, नए दोस्त बने हैं, स्टेज का डर दूर हुआ हैं और साथ ही मिलकर आगे बढ़ने की सीख मिली है। इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूआत हुई। माही, जूली, खुशी, सानवी एवं प्राप्ति के द्वारा 2 समूह नृत्य प्रस्तुत किए गए। आदित्य ने खूबसूरत गीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित संगठन के राज्य सचिव एवं घाटशिला कॉलेज के प्राध्यापक डॉ कन्हाई बारीक थे। उन्होंने कहा कि विज्ञान पढ़ लेना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। अल्बर्ट आइंस्टीन, मैडम क्यूरी, अल्फ्रेड नोबेल, सी. वी. रमन, प्रफुल्ल चंद्र राय आदि के जीवन के विभिन्न पहलुओं को बताते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का काम प्रयोगशाला तक सीमित नहीं है, सामाजिक दायित्वबोध भी ज़रूरी है। तीन तरह के लोग विज्ञान पढ़ते हैं- एक जिन्हें नाम कमाना है, दूसरे जिन्हें यश कमाना है और तीसरे जिन्हें विज्ञान, समाज और मानवता की सेवा करनी है। आप तीसरे तरह के विज्ञानप्रेमी बने। इसके बाद मुख्य अतिथि, शिक्षकों द्वारा प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया । कैंप में बच्चों ने पत्थरों, पेड़- पौधों, अंधविश्वास, जादू-टोना, संगीत, नाटक आदि महत्वपूर्ण विषयों का व्यवहारिक ज्ञान पाया। कैंप के दौरान हर दिन बच्चों को खेलकूद कराया गया। आज मोबाइल के गलत इस्तेमाल के कारण बच्चे सामाजिक मंच का इस्तेमाल करते हुए भी असामाजिक बन रहे हैं। शारीरिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनने के लिए ज़रूरी है खेलकूद। धन्यवाद ज्ञापन का कार्य समन्वयक राजेश कुमार ने किया। उन्होंने इस कैंप के आयोजक, शिक्षक एवं प्रतिभागियों को तहेदिल से धन्यवाद दिया और बेहतर भविष्य की कामना की। इस कार्यक्रम के संचालन में सान्या, सौम्या, आकाश, कौशल, आयुष, पीयूष, आदर्श, आदित्य, आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आईसेक्ट इंटर कॉलेज का रिजल्ट शत प्रतिशत

विज्ञान में मनीषा जायसवाल और कॉमर्स में रेणु कुमारी बनी कॉलेज टॉपर

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। आईसेक्ट इंटर कॉलेज के विद्यार्थियों ने 12वीं विज्ञान व कॉमर्स में शानदार प्रदर्शन किया है। इस बार कॉलेज का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा और सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। बता दें कि आईसेक्ट इंटर कॉलेज का यह पहला बैच है। कॉमर्स में रेणु कुमारी ने 77.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कॉलेज टॉपर बनी। वहीं विज्ञान में मनीषा जायसवाल ने 73.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कॉलेज में दूसरे पायदान पर रही जबकि 72.8 प्रतिशत अंक हासिल कर लक्की कुमार तीसरे पायदान पर रहे। इसके अलावा विज्ञान में अर्चना कुमारी, मेहर रानी, आरती कुमारी, परिमल मंडी व सुषमा कुमारी समेत सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। आईसेक्ट विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ मुनीष गोविंद ने विद्यार्थियों के शानदार सफलता के लिए सभी विद्यार्थियों को बधाई व शुभकामनाएं दी। साथ ही शिक्षकों की भूमिका को भी महत्वपूर्ण बताया। कॉलेज की प्राचार्या ममता शर्मा ने कॉलेज के शत प्रतिशत परिणाम पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि कॉलेज का पहला बैच का रिजल्ट शानदार रहा है। इसमें विद्यार्थियों की नियमित मेहनत के साथ साथ शिक्षकों के मार्गदर्शन की भूमिका अहम है। उन्होंने बताया कि आईसेक्ट इंटर कॉलेज में कला, वाणिज्य और विज्ञान तीनों संकाय की पढ़ाई करायी जाती है। साथ ही मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने के साथ साथ कमजोर विद्यार्थियों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त कक्षाओं की भी व्यवस्था की जाती है। उन्होंने बताया कि कॉलेज में आधुनिक लाइब्रेरी विद्यार्थियों के लिए मुहैया कराई गई है, साथ ही स्मार्ट कक्षाओं का भी संचालन किया जाता है।कॉलेज के शिक्षक एसएनके उपाध्याय, अभिमन्यु पांडे, बीरेंद्र कुमार, डॉ बचनदेव राय, प्रियंका मेहता, पूजा भारती, अर्जुन राणा, संतोष रविदास, सुशांत झा, ऋचा, संजय कुमार सहित अन्य ने सभी सफल विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। बताते चलें कि आईसेक्ट इंटर कॉलेज में 11वीं का नामांकन जारी है। इच्छुक विद्यार्थी मटवारी स्थित कॉलेज के कार्यालय जाकर या 7479708899, 8002748899 पर संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

झारखंड आंदोलनकारियों को मिले सम्मान, खतियानी परिवार की बैठक में उठी मांग

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। झारखंड आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले आंदोलनकारियों को आज भी उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है। खतियानी परिवार की साप्ताहिक बैठक में यह मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया। बैठक का आयोजन शनिवार को पुराना धरना स्थल के समीप अशोक राम की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें आंदोलनकारियों के सम्मान, पहचान और पेंशन योजना को लागू करने की मांग की गई।

बैठक में वक्ताओं ने झारखंड सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि राज्य की बागडोर संभालने वाले आज उन्हीं आंदोलनकारियों को भूल गए हैं जिनके संघर्ष और बलिदान से यह राज्य अस्तित्व में आया। खतियानी परिवार के महासचिव मोहम्मद हकीम ने कहा कि ÷विनोद बिहारी महतो और गुरुजी शिबू सोरेन के नेतृत्व में जिस आंदोलन ने झारखंड को एक अलग राज्य का दर्जा दिलाया, आज उसी आंदोलन से जुड़े लोग गुमनामी और तंगहाली में जी रहे हैं।

हकीम ने राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से आग्रह करते हुए कहा कि झारखंड के निर्माण में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आंदोलनकारियों की अनदेखी न की जाए। उन्होंने सरकार से यह भी मांग की कि आंदोलनकारियों के लिए निर्धारित पेंशन योजना को जल्द लागू किया जाए और उन्हें सामाजिक सम्मान प्रदान किया जाए।

बैठक में वक्ताओं ने यह भी कहा कि आज भी सरकारी तंत्र में वे ताकतें सक्रिय हैं जो आंदोलन के विरोध में रही थीं, और वही अब ऊंचे पदों पर बैठकर असली आंदोलनकारियों को हाशिए पर ढकेल रही हैं।

बैठक में शामिल प्रमुख लोगों में केंद्रीय अध्यक्ष बाबू भाई विद्रोही, मोहम्मद हकीम, महेश विश्वकर्मा, विजय मिश्रा, संतोष कुमार, मोहम्मद फखरुद्दीन, प्रदीप कुमार मेहता, बोधी साव, सुनीता कच्छप, मुन्नी देवी समेत कई अन्य आंदोलनकारी शामिल थे।

कर्णपुरा महाविद्यालय के प्राचार्य ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर प्रशासन एवं जनता से की अपील

- किन्ही का कोई शिकायत नहीं है सिर्फ पूर्व प्राचार्य राम सेवक को पेट दर्द और शिकायत कर रहे हैं : प्राचार्य

बड़कागांव संवाददता

बड़कागांव। कर्णपुरा महाविद्यालय बड़कागांव के सभागार भवन में प्राचार्य कृतिनाथ महतो ने प्रेस कॉन्फ्रेंस किया। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों को संबोधित करते हुए बताया कि कर्णपुरा महाविद्यालय की स्थापना 1983 में हुई। 1983 से 2020 तक राम सेवक प्राचार्य रहें, इस बीच महाविद्यालय के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां दी । कर्णपुरा महाविद्यालय के नाम से 1983 में 4 एकड़ एवं 5 एकड़ जमीन की रजिस्ट्री हुई। 1997 में पूर्व विधायक लोकनाथ महतो एवं रामसेवक द्वारा राज्यपाल के नाम के 9 एकड़ जमीन कर्णपुरा महाविद्यालय के नाम से दान किया गया। 2009 में राम सेवक द्वारा कर्णपुरा महाविद्यालय के स्थायी एफीलिएशन के लिए 9 एकड़ जमीन, बिल्डिंग सहित राज्य सरकार को सौंप दिया गया। जैक रांची के निर्णयानुसार इंटर कॉलेज को चलाने के लिए तथा स्थायी एफीलिएशन लेने के लिए बिल्डिंग जमीन खाता इत्यादि में इंटर शब्द जुड़वाना अनिवार्य कर दिया गया जिसके फलस्वरूप कर्णपुरा महाविद्यालय से बाहर पीला बिल्डिंग में कर्णपुरा इंटर महाविद्यालय जोड़ा गया तथा राम सेवक के द्वारा ही दो एकड़ जमीन कर्णपुरा इंटर के नाम से लिया गया जो कॉलेज के स्टेडियम के पीछे है। इस प्रकार कर्णपुरा महाविद्यालय का अनुदान 2010 से लगातार अभी तक मिलते आ रहा है। लेकिन कर्णपुरा इंटर कॉलेज का अनुदान 2020 से बंद हो गया। स्वयं रामसेवक द्वारा 2020 में 17,78,944 रुपए जिला शिक्षा पदाधिकारी हजारीबाग के नाम से आया हुआ अनुदान को वापस कर दिया गया। क्योंकि जैक नियामानुसार इंटर का जहां जमीन है, वहां इंटर का बिल्डिंग नहीं है। यह तो कर्णपुरा महाविद्यालय के जमीन और बिल्डिंग है। कर्णपुरा महाविद्यालय के संबंध में विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, राज्य सरकार, जिला प्रशासन, प्रखंड प्रशासन, जिला शिक्षा पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी, एसडीपीओ इत्यदि किन्ही का कोई शिकायत नहीं, सिर्फ शिकायत रामसेवक एवं उनके परिवार को ही हो रहा है, जो 37 वर्षों के बाद 2020 से सेवानिवृति के बाद चालू हुआ। राम सेवक के ही मांग पर कर्णपुरा महाविद्यालय का राज्य सरकार के आदेशानुसार विनोबा भावे विश्वविद्यालय के तीन पदाधिकारी एवं दो ऑडिटर को 2010 से 2020 तक के ऑडिट के लिए नियुक्त किया गया जिन्होंने रामसेवक पर 50,30,932 रुपए के घोटाले का सत्यापन करते हुए ऑडिट रिपोर्ट विश्वविद्यालय में जमा किया किया गया। जिसमें स्पष्ट निर्देश दिया गया कि उक्त 50,30,932 के घोटाले की राशि को स्वयं रामसेवक से वसूली की जाए, पुनः विनोबा भावे विश्वविद्याल के निर्देशानुसार रामसेवक पर मुकदमा दायर किया गया है जो कांड संख्या 189/2023 में दर्ज कर वसुलने की प्रक्रिया जारी है। आगे कहा कि रामसेवक का संस्था कर्णपुरा शिक्षण संस्थान को रद्द कर दिया गया है। रामसेवक द्वारा अभी भी दो बैटरी , एक इनवर्टर , एक प्रिंटर मशीन और बहुत सारा कागजात अपना घर ले गए हैं। तथा प्राचार्य कक्ष में ताला लगाकर रखे हैं और कहते हैं यह महाविद्यालय मेरा है, जबकि मैं प्राचार्य कृतिनाथ महतो एवं संपूर्ण कॉलेज परिवार का कहना है कि यह महाविद्यालय इस क्षेत्र का धरोहर है, सार्वजनिक है, किसी का पुश्तैनी संपत्ति नहीं हो सकता है। अभी तक कर्णपुरा इंटर कॉलेज का सम्पूर्ण कार्य भार सचिव के रूप में बिना कमेटी का रामसेवक के द्वारा संचालित किया जा रहा है। उपरोक्त सभी बिंदुओं का सत्यापन के लिए मैं तैयार हूं।

नए एसपी का झामुमो नेता संजय सिंह ने किया स्वागत

बड़कागांव संवाददाता

बड़कागांव। झारखंड मुक्ति मोर्चा प्रखंड अध्यक्ष सह झारखंड श्रमिक संघ जिला सचिव संजय कुमार सिंह ने नए एसपी अंजनी अंजन से औपचारिक मुलाकात कर बुके देकर स्वागत किया। इस दौरान मुलाकात के दौरान एसपी ने कहा हजारीबाग जिला में जो भी क्राइम से संबंधित समस्या है उसको दूर करने का प्रयास किया जाएगा। नशा उन्मूलन को लेकर विशेष ध्यान रहेगा।

उपायुक्त ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत जिला स्वास्थ्य समिति एवं शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के प्रबंधन के साथ बैठक की

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में आज 31 मई को सदर अस्पताल सभाकक्ष में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत जिला स्वास्थ्य समिति की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में उपायुक्त ने कहा इस बैठक का उद्देश्य जिला की स्वास्थ्य सेवाओं की वर्तमान स्थिति के अवगत होना है। उपायुक्त ने सिलसिलेवार तरीके से जिला स्तर पर मैनपावर की स्थिति,स्वीकृत पदों के विरुद्ध कार्यरत मानवबल की स्थिति,ए.एन.एम की वर्तमान संख्या,स्वास्थ्य के भवनों की स्थिति,मेडिकल उपकरणों की स्थिति, संचालित स्वास्थ्य कार्यक्रमों की स्थिति(टीबी,डेंगू, मलेरिया, फाइलेरिया,टीकाकरण आदि) की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

उपायुक्त ने कहा कि जिला की स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करना महत्वपूर्ण है,फलस्वरूप हमें ज्यादा गंभीर और संवेदनशील होकर कार्य करने की आवश्यकता है। बैठक में अस्पताल की व्यवस्थाओं,मरीजों को दी जा रही सुविधाओं और भविष्य की योजनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई।

बैठक में उपायुक्त ने कहा कि अस्पताल में लगे सुझाव और शिकायत पेटी ने आए मामलों को गंभीरता से लेने का निर्देश दिया,साथ ही विगत 6 महीने में आए शिकायतों का डाटा संकलन कर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कामकाज में सुधार लाने और स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने को लेकर सभी बिंदुओं पर आज से कार्य प्रारंभ करने को कहा।

उपायुक्त ने विशेष रूप से स्वच्छता, दवाइयों की उपलब्धता, डॉक्टरों और कर्मचारियों की उपस्थिति तथा आपातकालीन सेवाओं की स्थिति की जानकारी ली।

सभी स्वास्थ्य केंद्रों में रोस्टर अनुसार चिकित्सक की मौजूदगी हो

उपायुक्त ने डीपीएम से सदर अस्पताल समेत सभी स्वास्थ्य केंद्रों में चिकित्सकों की उपस्थिति की जानकारी प्रतिदिन लेने का निर्देश दिया एवं चिकित्सकों को रोस्टर समय सारणी को गंभीरता से पालन करने से का निर्देश दिया।

कोविड प्रोटोकॉल के तहत सभी तैयारियों को हमेशा तैयार रखने का निर्देश

उपायुक्त ने कहा कि वर्तमान में कोविड के नए मामले भारत के कुछ हिस्से मिले है,इसलिए यह आवश्यक है कि जिला स्तर पर भी केविड के प्रावधानों को दृष्टिगत रखते हुए सभी आवश्यक तैयारियों को मुकम्मल रखें।

अस्पताल प्रबंधन ने वर्तमान चुनौतियों और उन पर किए जा रहे प्रयासों से उपायुक्त को अवगत कराया। उपायुक्त ने इन पर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए और आश्वासन दिया कि जिला प्रशासन अस्पताल के विकास और सुचारु संचालन के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगा। इस बैठक में अस्पताल के सिविल सर्जन के अलावा सभी वरिष्ठ अधिकारी और संबंधित विभागों के प्रमुख उपस्थित थे।

उपायुक्त ने शेख भिखारी मेडिकल के परिसर का भ्रमण किया

आज की बैठक के समाप्ति के उपरांत उपायुक्त श्री शशि प्रकाश सिंह ने शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल का भ्रमण किया। इस दौरान वे कुपोषण वार्ड,मेल सर्जिकल वार्ड,नेत्र विभाग,ब्लड बैंक आदि का निरीक्षण किया। कुपोषण वार्ड में पहुंचकर उपायुक्त ने कुपोषित बच्चों के देखभाल की जानकारी ली मौके पर मौजूद बच्चों के माताओं से बात कर बच्चों को दी जाने वाले भोजन व अन्य सावधानियों से संबंधित जानकारी ली।

बल्ड बैंक का निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त ने बल्ड बैंक में खून की वर्तमान उपलब्धता को नोटिस बोर्ड में लगाने का निर्देश दिया तथा नियमित अंतराल में रक्त दान शिविर आयोजित करने का निर्देश दिया।

संक्षिप्त समाचार

4 जून को भाकपा करेगी सतबरवा प्रखंड कार्यालय पर प्रदर्शन - रूचिर तिवारी

- प्रखंड सह अंचल कार्यालय पर व्याप्त भ्रष्टाचार एवं घूसखोरी से आम जनता है परेशान- भाकपा

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव सह डाल्टनगंज विस के पूर्व विधायक उम्मीदवार रूचिर कुमार तिवारी ने आज सतबरवा अंचल के ट्रेनिंग स्कूल छात्रावास में प्रेस कॉन्फ्रेंस किया और उन्होंने कहा कि सतबरवा अंचल एवं प्रखंड कार्यालय में बिजोलिया गिरी एवं भ्रष्टाचार हावी है आम जनता का कोई भी काम बिना घूस के नहीं हो रहा है दलित आदिवासियों के खटियाणी जमीन का रसीद भी नहीं कट रहा है एवं ऑनलाइन करने में उन्हें अंचल कार्यालय का चक्कर काटना पड़ रहा है वही आय एवं जाति प्रमाण पत्र बनाने में भी एक-एक महीना लग जा रहा है ब्लॉक के कर्मचारी गांव के अंदर नहीं जा रहे हैं एवं बंद कमरा में जमीन का मोटेशन करने एवं ऑनलाइन करने में घुसखोरों कर रहे हैं इन्हीं जन समस्याओं को लेकर के भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी सतबरवा आंचल कमेटी के द्वारा आम जनता को साथ लेकर दिनांक 4 जून को सतबरवा अंचल कार्यालय सह प्रखंड कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन एवं घेराव किया जाएगा। आम जनता से अपील करते हैं कि आप इस जन आंदोलन में सहयोग देकर प्रदर्शन एवं घेराव में शामिल होकर अपने हक एवं अधिकार के लिए लड़े। प्रेस कॉन्फ्रेंस में राम राज तिवारी, उमेश सिंह चेरो, करीमन पासवान,सनी सिंह रंगबहादुर सिंह,ललन राम,अवध बिहारी मेहता, बालेश्वर सिंह, सरयू मेहता, धानो देवी, शंकर सिंह,भजन सिंह ऐकता रामचंद्र सिंह, कृष्णा सिंह, कमलेश सिंह,उदिप सिंह, रामजन्म मांझी, ललन सिंह, संजय चौधरी सहित कई लोग उपस्थित थे।

मुखिया नरेश लोहरा ने अबुआ आवास का फीता काटकर किया उद्घाटन

संवाददाता राम कुमार

बालूमाथ। बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय के शांति नगर में अबुआ आवास योजना के अंतर्गत निर्मित आवास का उद्घाटन बालूमाथ पंचायत के मुखिया नरेश लोहरा ने फीता काटकर किया।इस मौके पर लाभुक जया देवी,पति मुकेश कुमार दुबे को यह आवास सौंपा गया।मौके पर ब्रह्मदेव राम सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।उद्घाटन समारोह के दौरान मुखिया नरेश लोहरा ने कहा कि राज्य सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए वरदान साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि सभी पात्र परिवारों को शीघ्रता से इस योजना का लाभ दिलाया जाएगा।लाभुक जया देवी ने भावुक होते हुए सरकार और पंचायत प्रतिनिधियों का आभार जताया और कहा कि वर्षों बाद उन्हें अपना पक्का घर मिला है। जिससे अब उनके परिवार को सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिलेगा। लोगों ने मुखिया और प्रशासन का धन्यवाद किया और उम्मीद जताई कि आगे भी ऐसी योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से मिलता रहेगा।

चतरा की दो बेटियों ने इसबार इंटर साइंस परीक्षा में स्टेट में लहराया परचम

- चतरा जिला की टॉपर बनी स्नेहा, तो दुसरी रैंक पर सगी बहन नेहा
- डॉ बनाना चाहती स्नेहा

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

हंटरगंज (चतरा)। जैक बोर्ड की परीक्षा परिणाम में इस वर्ष बेटियों ने परचम लहराया है। झारखंड के चतरा जिले की बेटी स्नेहा कुमारी इंटर साइंस की परीक्षा में पूरे राज्य में आठवीं स्थान प्राप्त की वही जिले में अव्वल रहीं वही स्नेहा की सगी बहन नेहा ने भी पुरे स्टेट में 9वीं रैंक प्राप्त की वही जिले के दुसरी स्थान प्राप्त की है। काशीकेवाल निवासी जिला टापर स्नेहा कुमारी और नेहा रामनारायण प्लस टू उच्च विद्यालय हंटरगंज की छात्रा हैं। स्नेहा 500 में 469 अंक हासिल किया है वही छोटी बहन नेहा ने 500 में 458 अंक हासिल किया है। पत्रकारों से बातचीत में स्नेहा कुमारी ने बताया कि पिता प्रमोद यादव के शब्दों ने उसे टापर बना दिया है। पिताजी पढ़ाई करने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहे। पिता कहते थे कि अभी जीतना संघर्ष करोगी, आगे जीवन की राह उतनी ही आसान होगी।

*डाक्टर बनकर पूरा करूंगी पिता का सपना स्नेहा ने कहा कि वह जब भी पढ़ने बैठती पिताजी के इन शब्दों को ही याद रखती थी। लेकिन, अभी मंजिल नहीं मिली है। मुझे डाक्टर बनना है। इसके लिए अभी से तैयारी शुरू कर दी है। अब डाक्टर बनकर पिता जी के सपने को साकार करना है। इसके लिए वह मन लगाकर पढ़ाई करेंगी। किसी सूरत में मेडिकल परीक्षा पास करना है। एक बढ़िया डाक्टर बनकर समाज की सेवा करनी है।

पर्यावरणविद ने गरीब कन्याओं की कराई शादी, कन्या व पौधा दान कर किया विदाई

- पर्यावरण धर्म के तहत डॉ कौशल ने दहेज में वर- वधु व बरातियो को पौधा दान कर किया स्वागत
- भगवान का ही दूसरा स्वरूप होते हैं गरीब : पर्यावरण धर्म गुरु डॉ कौशल

कन्यादान व पौधा दान करते पर्यावरणविद डॉ कौशल

छतरपुर, पलामू, झारखंड

जिले के छतरपुर अनुमंडल अंतर्गत आस्था का केंद्र चेगौना धाम परिसर स्थित विवाह मंडप में शुक्रवार को विश्वव्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पर्यावरण धर्मगुरु व वनराखी मूवमेंट के प्रणेता पर्यावरणविद ट्री मैन डॉ कौशल किशोर जायसवाल ने इस वर्ष भी छतरपुर पूर्वी क्षेत्र के गरीब अनाथ कन्याओं की शादी कराकर स्वयं कन्यादान कर न सिर्फ सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया बल्कि समाजसेवा का एक मिसाल कायम किया। बीते वर्ष भी इन्होंने अपनी निजी खर्चे पर गरीब व अनाथ कन्याओं के हाथ पीले कराकर सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया था। छतरपुर अनुमंडल के तेलियाडीह निवासी स्व नंदू राम की पुत्री रूबी कुमारी की शादी पिपरा के भैरों राम के पुत्र गुड्डू राम के साथ सम्पन्न कराकर स्वयं कन्यादान भी किया। वनराखी मूवमेंट के प्रणेता डॉ कौशल ने सनातनी धर्म के साथ वृक्ष देव की भी पूजा कराई और पर्यावरण धर्म के तहत सभी बारातियों को दहेज में प्रदूषण का शत्रु पौधों का दान करते हुए कहा कि दहेज में मिले सामानों से केवल वर- वधु और उसके परिवार को ही उसका लाभ मिलता है परंतु पौधा रूपी दहेज बरातियों को देने से धरती और ब्रह्मांड के 84 लाख जोनी जिओ को लाभ मिलता है । इससे प्रदूषण का खत्मा होता है। पर्यावरणविद डॉ कौशल ने कहा कि इसी तरह पिछले वर्ष भी उनकी धर्मपत्नी सह डाली पंचायत की मूखिया पूनम जायसवाल, उनके पुत्र सह जिला पार्षद अमित कुमार जायसवाल ने तीन अनाथ बच्चियों की शादी कराकर उन्हें कन्यादान करने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

पर्यावरणविद ने सभी बरातियों को पौधा दान करने के उपरांत उन्हें पर्यावरण धर्म के तहत 8 मूलज्ञान मंत्रों की शपथ भी दिलाई। मौके पर रूबी कुमारी की मां कुंती कुंवर, नरेश राम, रिंकू कुमारी,प्रमोद राम मानदेव राम, अरुण राम, देवव्रत राम, सुनैना देवी,राजद नेता शिवनन्दन यादव डाली के पूर्व उप मुखिया अफजाल अंसारी, जुबेर अंसारी , सत्य सिंह, कौशल किशोर उपाध्याय,सुदीप राम, परशुराम, गोलू राम, पप्पू विकास राम, यशोदा देवी, हरेंद्र कुमार, अजय राम,रामावतार राम, प्रेम देवी आदि शामिल थे।

पलामू राइफल शुटिंग संघ के अध्यक्ष बने अविनाश देव

मेदिनीनगर। चर्च रोड, माटी कला बोर्ड में झारखंड राज्य राइफल शूटिंग संघ के अधिकारियों के निगरानी में पलामू राइफल शुटिंग संघ का पूर्ण गठन किया गया। जिसमें सभी अधिकारियों एवं सदस्यों के सहमति से पर्यवेक्षक हजारीबाग राइफल शूटिंग संघ के उपाध्यक्ष सुबोतो रॉय सचिव नैलेंदु जयपुरिया के निगरानी में अध्यक्ष के रूप में अविनाश देव को चुना गया। उपाध्यक्ष गुरबीर सिंह, अफताब आलम, सनत चटर्जी , नंद किशोर भारती, आनंद कुमार, सचिव सुमित बर्मन, सह सचिव अमरेश कुमार मेहता, कोषाध्यक्ष दीपेन्द्र सिंह, टेक्निकल डायरेक्टर मयंक सिंह, लीगल एडवाइजर ओमकार नाथ तिवारी, मीडिया प्रभारी दीपक तिवारी को चुना गया। मौके पर अध्यक्ष अविनाश देव ने कहा कि मैं अपनी अध्यक्षता में पलामू जिले को राइफल शूटिंग खेल में आगे बढ़ने का कार्य करूंगा। कोई खिलाड़ी अगर पैसे के अभाव की वजह से राइफल शूटिंग खेल में अगर पीछे रहता है तो उसे आगे लाने का कार्य करूंगा उसे ओलंपिक तक पहुंचाने के जिम्मेदारी मेरी होगी। पलामू जिले में राइफल शूटिंग का ट्रैक बनाया जाएगा ताकि यहां पर शूटर अच्छे से प्रैक्टिस कर सके । मौके पर उपाध्यक्ष गुरबीर सिंह ने कहा कि राइफल शूटिंग बहुत ही बेहतरीन खेल है यहां के खिलाड़ियों को इस खेल में भाग लेना चाहिए और खेल के क्षेत्र में अपना नाम बनाना चाहिए। मौके पर एक्स आर्मी ऑफिसर बृजेश शुक्ला ने कहा कि अविनाश देव के अध्यक्ष बनने राइफल शूटिंग खेल में पलामू जिले का विकास होगा। मौके पर पर्यवेक्षक नैलेंदू जयपुरिया ने कहा कि पलामू में अविनाश देव को अध्यक्ष बनने से यहां के खिलाड़ियों का चौमुखी विकास होगा।

नहीं थम रहा तेज रफ़्तार का कहर

- पांडेपुरा में तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने दो बाइक को मारी टक्कर, बाइक क्षतिग्रस्त
- कोई जन हानि नहीं

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

हंटरगंज (चतरा)। प्रशासन के लाख सख्तियों के बावजूद भी तेज रफ़्तार पर अंकुश नहीं लग रहा है। ताजा मामला हंटरगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत पांडेपुरा मेन बाजार स्थित हंटरगंज - प्रतापपुर मुख्य पथ पर शनिवार सुबह करीब नौ बजे एक सड़क हादसा हो गया। प्रतापपुर की ओर से आ रहे एक ट्रैक्टर ने सड़क किनारे खड़े दो बाइक को टक्कर मार दी। जिसमें एक स्प्लेंडर बाइक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार प्रतापपुर की ओर से तेज गति आ रहे एक ट्रक्टर असंतुलित होकर पांडेपुरा मेन बाजार स्थित सड़क किनारे खड़े दो बाइक से जा टकराई ।टक्कर में एक स्प्लेंडर बाइक पूरी तरह चकनाचूर हो गया। वही अपाचे बाइक हल्की क्षतिग्रस्त हुई है।

कोई जनहानि नहीं, लेकिन भारी नुकसान हादसे में कोई मौत नहीं हुई, लेकिन बाइक को काफी नुकसान पहुंचा है। इधर स्थानीय लोगों ने पांडेपुरा पिकेट पुलिस को इसकी जानकारी दी। जानकारी मिलते ही पुलिस पिकेट इंचार्ज शिव शंकर गोप दल बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। और घटना की स्थानीय लोगो से जानकारी ली। वही पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए ट्रैक्टर चालक, ट्रैक्टर, और क्षतिग्रस्त बाइक को थाना ले आई है। पुलिस छानबीन में जुटी है। हालांकि पिकेट इंचार्ज शिव ने बताया कि चालक मोबाइल से कही बात कर ट्रैक्टर चला रहा था जिससे ट्रैक्टर असंतुलित होकर बाइक मे टक्कर मारी है।वाहन को चलाते समय मोबाइल का प्रयोग ना करें ~ पत्रकार विकास कु यादव। गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन अथवा दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उपयोग करने से ध्यान हटने के कारण सड़क दुर्घटना का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए वाहन चलाते समय उक्त उपकरणों का उपयोग नहीं करना चाहिए। लोगों से अनुरोध है कि वाहन सदैव निर्धारित गति सीमा में ही चलाए और अपना बहुमूल्य जीवन को बचाएं।

नौडीहा पत्रकार विश्वप्रेम कुमार के माता जी का निधन, शोक की लहर

- नौडीहा जेजेए संगठन के सभी सदस्यों ने शोक जताया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

पलामू। जिले के नौड़ीहा बाजार प्रखंड के हिंदी दैनिक अखबार प्रभांत मंत्र के पत्रकार विश्वप्रेम कुमार (मनोज जी) के 55 वर्षीय माता श्रीमति केवलपतिया देवी के अचानक मौत शुक्रवार को करीब 5 बजे शाम को हो गई। जिससे पूरे क्षेत्र में शोक की लहर है। मृतक के बड़े पुत्र पत्रकार विश्वप्रेम कुमार के द्वारा मुखाग्नि दी गई। अंतिम दाह संस्कार पैतृक गाँव गोबरदाह नदी के तट पर किया गया.. दुखद परिजन के साथ झारखंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन(जेजेए) के नौडीहा प्रखंड अध्यक्ष पप्पू यादव, सचिव मनीष कुमार, सदस्य सत्येंद्र चौरसिया, विनय कुमार ने उनके निधन पर परिजनों को ढाढंस दिलाया और रविदास विकास समिति के अध्यक्ष श्री राम गोविंद राम शिक्षक,मुखिया जितेंद्र कुमार भारती, पंचायत समिति सदस्य शत्रुधन साव,कॉंगेस कमिटी के अध्यक्ष सह वीस सूत्रीय सदस्य नितीश कुमार,बसपा प्रखंड अध्यक्ष अनुज कुमार,संरक्षक जुदागिर राम शिक्षक, शिक्षक मनोज कुमार सिंह पटेल,गुरुदत शर्मा,दशरथ कुमार,लल्लू राम सहित अन्य गणमान्य लोगों ने शोक जताया।

पलामू- पुलिस अधीक्षक की पहल पर पुलिस लाइन ग्राउंड में नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर, एसपी ने किया ब्लड डोनेट

मेदिनीनगर में पुलिस अधीक्षक रीष्मा रमेशन की पहल पर शनिवार को पुलिस लाइन ग्राउंड में पुलिसकर्मियों और उनके परिजनों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर लायंस क्लब के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों व उनके परिजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर स्वयं पुलिस अधीक्षक रीष्मा रमेशन ने ब्लड डोनेट कर सभी को एक प्रेरणादायी संदेश दिया। एसपी की इस मानव सेवा भावना से प्रेरित होकर लायंस क्लब की कई महिला सदस्यों ने भी रक्तदान किया। वहीं कई थाना प्रभारियों ने भी इस अवसर पर रक्तदान कर सामाजिक सरोकार की मिसाल पेश की। शिविर में ब्लड प्रेशर, शुगर, ईसीजी, आंख, दांत, हड्डी एवं अन्य रोगों की जांच की गई। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने मौजूद लोगों की पूरी निष्ठा से जांच की और आवश्यक परामर्श दिया। स्वास्थ्य शिविर में सैकड़ों पुलिसकर्मियों और उनके परिवारजनों ने अपनी जांच करवाई। लायंस क्लब के पदाधिकारियों ने बताया कि समाज के रक्षक पुलिसकर्मियों के लिए इस प्रकार के आयोजनों से उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने में मदद मिलेगी। वहीं एसपी रीष्मा रमेशन ने लायंस क्लब के सहयोग के लिए आभार जताया और भविष्य में भी ऐसे आयोजन होते रहने की बात कही।

डॉक्टर की लापरवाही से महिला की गई जान, डॉक्टर फरार

विकाश कुमार कान्हाचट्टी

चतरा के बहुचर्चित आरबी अस्पताल में डॉक्टर के लापरवाही से एक 35 वर्षीय महिला का मौत हो गया। महिला गिद्धौर प्रखंड के बारिशाखी निवासी बसंती देवी पति उमेश यादव 35 वर्ष बताया जा रहा है। मृतक महिला के पुत्र ने बताया कि मेरी मां को बुखार की शिकायत थी जिसके बाद शनिवार दिन के 11ः00 बजे के करीब आरबी हॉस्पिटल में इलाज के लिए भर्ती करवाया गया था। थोड़ा समय बीतने के बाद हालत में कोई सुधार नहीं होता देख परिजनों ने महिला की बेहतर इलाज के लिए बाहर ले जाने को लेकर डॉक्टर को कई बार कहा परंतु डॉक्टर ने मना कर दिया। जिसके बाद अचानक महिला की हालत बिगड़ते देख डॉक्टर ने आनन-फानन में एम्बुलेंस करके हजारीबाग रेफर कर दिया। जिसके बाद रास्ते में ही मेरी मां की मौत हो गई, उसके बाद हमलोग डॉक्टर के पास पहुंचे तो डॉक्टर ने बताया कि कुछ देर पहले ही इनकी मौत हो चुकी है। वही इस घटना के बाद से महिला की शव लेकर परिजनों ने आरबी हॉस्पिटल पहुंचा तो देखा कि इलाज कर रहे डॉक्टर हॉस्पिटल से फरार है। वही घटना की सूचना मिलने के बाद सदर पुलिस दल बल के साथ आरबी हॉस्पिटल पहुंच कर कानूनी प्रक्रिया कर रही थी।

गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल कॉलेज में छात्र-छात्राओं को दी गई नशा मुक्त झारखंड की शपथ

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

छतरपुर, पलामू। बीते शुक्रवार गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल कॉलेज में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत इतिहास विभाग की प्रो. मुन्नी देवी द्वारा सभी को नशा मुक्त झारखंड की शपथ दिलाकर की गई। कार्यक्रम का सफल संचालन पंचम कुमार ने किया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रभारी प्राचार्य प्रो. अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि ÷तम्बाकू न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक है, बल्कि यह समाज को भी अंदर ही अंदर खोखला कर रहा है। युवा पीढ़ी को इससे दूर रहकर अपने भविष्य को सुरक्षित बनाना होगा। शिक्षा संस्थानों की भूमिका इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। कॉलेज परिसर को पूर्ण रूप से नशामुक्त बनाए रखने का संकल्प हम सभी को लेना चाहिए।÷इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक प्रो. अमित कुमार सिंह ने विश्व तम्बाकू निषेध दिवस का ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व बताते हुए कहा कि तम्बाकू के सेवन से कैंसर, हृदय रोग, फेफड़े की बीमारी समेत कई घातक बीमारियां होती हैं। उन्होंने समाज को इस बुराई से मुक्त कराने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता पर बल दिया। समाजशास्त्र विभाग सत्र 2021-24 की छात्रा राधिका कुमारी ने कॉलेज से इस अभियान की शुरुआत करने की अपील की और कहा कि ÷जहाँ भी नशा करने वाले लोग उपद्रव करें, उनकी सूचना तुरंत प्रशासन को दें। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते यह हम सभी का कर्तव्य है।÷कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सूर्योदय कुमार ने किया।इस अवसर पर प्रो. अशोक कुमार अग्रवाल, इंदु कुमारी, अपराजिता, जैलेश गुप्ता, सुनीता कुजूर, मुन्नी देवी, रोहित कुमार, योगेंद्र विश्वकर्मा, सुनील पासवान, मनोज पासवान, अंजलिना खाखा, कृष्ण नंदन, राजेश, बालमुकुंद पाठक, दीपक, सत्या, शंकर राम, बबलू मिंज, संजय, आनंद सहित कई शिक्षक एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर प्रखंड कार्यालय लिट्टीपाड़ा में बीडीओ संजय कुमार ने दिलाई शपथ दिये कई संदेश

आदिवासी एक्सप्रेस लिट्टीपाड़ा (पाकुड़) शनिवार को प्रखंड कार्यालय लिट्टीपाड़ा में तंबाकु उपयोग के हानिकारक दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रखंड विकास पदाधिकारी संजय कुमार ने सभी उपस्थित गणमान्य लोग सहित कर्मियों को विश्व तंबाकू निषेध दिवस की शपथ दिलाई। इस अवसर पर बीडीओ संजय कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि विश्व तंबाकू निषेध दिवस हर साल 31 मई को मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के नेतृत्व में इस वैश्विक पहल का उद्देश्य तंबाकू के उपयोग के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। यह दिन व्यक्तियों और समुदायों को तंबाकू मुक्त दुनिया की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है। साथ ही नई पीढ़ी और दुनिया भर में तंबाकू सेवन को रोके जाने और इसके सेवन के दुष्प्रभाव से होने वाली मौतों के प्रमुख कारणों का जागरूकता बढ़ाता है ताकि व्यक्तियों को तंबाकू उत्पादों के उपयोग के परिणामों को समझने में मदद मिल सके।
इस शपथ ग्रहण में मुख्य रूप से प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी कमल पहाड़िया, प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी मानिक दास, प्रधान सहायक सह नाजिर राजाराम रविदास, कनीय अभियंता प्रदीप टुडू, नैयर आलम सहित प्रखंड,अंचल व बाल विकास परियोजना कार्यालय के कर्मियों सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

शिकारीपाड़ा +2 उच्च विद्यालय मैदान में आयोजित ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

शिकारीपाड़ा/दुमका/
ललित कुमार पाल की रिर्पोट।
शिकारीपाड़ा +2 उच्च विद्यालय मैदान में आयोजित अंडर-16 बालक और बालिका ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में कुलदीप कुमार सिंह पहुंचे उन्होंने सभी खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया और बेहतर खेलने के लिए प्रेरित किया। मौके पर जिला वॉलीबॉल संघ के अध्यक्ष अमित कुमार, सचिव मुकेश कुमार, मीडिया प्रभारी गौरव कुमार सिंह,नीलेश कुमार ,राजीव रंजन नीरज रजक अमित कुमार राजा भगत सहित अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन में कुलदीप कुमार सिंह का अहम भूमिका रहा।

सरकार किसानों की उन्नति एवं दोगुनी आय पर कर रही कार्य, लाभुकों ने जताया आभार

- कृषि यांत्रिकीकरण की प्रोत्साहन योजना से लाभान्वित होकर समूह की दीदी अपनी आय में कर रही हैं वृद्धि
- महिला स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने जिला प्रशासन एवं सरकार के कार्यों को सराहा

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़ भूमि संरक्षण पदाधिकारी सुचित एक्का केंद्र प्रायोजित राष्ट्रीय कृषि विकास योजना- रफ्तार योजना अंतर्गत कृषि विभाग में कृषि मशीनीकरण पर उप-मिशन उपयोजना अंतर्गत महेशपुर प्रखंड अंतर्गत पलसा पंचायत के पलसा ग्राम में पूर्व के वर्षों में लाभ दिए गए मिनी ट्रैक्टर एवं उसके सहायक कृषि यंत्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में ज्योति आजीविका स्वयं सहायता समूह एवं राज्य योजनान्तर्गत कृषि यांत्रिकीकरण प्रोत्साहन योजनान्तर्गत समूह तेलियापोखर के सदस्यों से मुलाकात करते हुए वितरित किए गए कृषि यंत्रों से मिल रहे लाभ के बारे में जानकारी लिया, समूह के सदस्यों द्वारा बताया गया कि उक्त यंत्रों का लाभ हम सभी समूह के सदस्यों को मिल रहा है और हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रही है। वर्तमान में मानसून को देखते हुए भूमि संरक्षण पदाधिकारी द्वारा कृषि युक्त यंत्रों के रखरखाव के बारे में जानकारी दी गई।

प्रत्येक प्रखंड में बनेंगे तीन-तीन मॉडल सामुदायिक शौचालय- डीसी

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
उपायुक्त मनीष कुमार ने विडियो कॉन्फ्रेंस कर जिले में क्रियान्वित योजनाओं का समीक्षा किया। उन्होंने अबुआ आवास योजना अंतर्गत 28 मई को पंद्रह सौ आवासों के गृह प्रवेश को उपलब्धि बताया तथा इसे हर माह को आवास दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। आवास योजना के तहत अगले एक सप्ताह में 240 आवास पूर्ण करने का लक्ष्य प्रखंडों के बीच बांटा गया तथा प्रतिदिन इसकी मानिटरिंग करने हेतु निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि 10 जून से सभी प्रखंडों का भ्रमण करेंगे जिसमें कार्यालय निरीक्षण, चार पंचायतों में योजना जांच करेंगे तथा लाभुकों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याओं से रूबरू होंगे। इसकी शुरूआत

लिट्टीपाड़ा प्रखंड से करने की बात कही है। जेएसएलपीएस की दीदीयों के लिए दुकान जिला परिषद की योजना के माध्यम से कराया जाएगा ताकि उनको अपने उत्पादों को बेचने में सहुलियत हो सके। सभी प्रखंडों में पानी सप्लाई के लिए खरीदे गए टैंकर का भुगतान से संबंधित समीक्षा की गई जिसे एक सप्ताह में राशि भुगतान का निर्देश दिया गया।
वही मनरेगा के तहत बिरसा हरित ग्राम योजना में 80 प्रतिशत योजना ऑनगोइंग तथा पौधारोपण पूर्व कार्यों को पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। पूर्व से क्रियान्वित बिरसा हरित ग्राम योजना के बड़े पैंच में विडियोग्राफी करवाने जिसके पहले योजना में ट्रेंच, सीआईबी, निकाई गुड़ाई, जलकुंड, घेराबंदी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। इन बड़े पैंच में पानी की आवश्यकता को देखते हुए डीप बोरिंग हेतु प्रस्ताव की मांग की गई। उन्होंने 8 जून को सभी प्रखंडों में गड्ढा कोड़ो अभियान चलाने का निर्देश दिया जिसके तहत पच्चीस हजार गड्ढा खुदाई करने का लक्ष्य रखा। बागवानी दिवस प्रत्येक माह के आठ तारीख को रखने की बात कही तथा आवास दिवस 28 तारीख एवं रक्तदान शिविर प्रत्येक माह की 24 तारीख को करने का निर्देश दिया गया। मनरेगा में महिला भागीदारी 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 52 प्रतिशत करने हेतु निर्देश दिए गए। यह कदम महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। आवास योजना में 63 प्रतिशत लाभुकों को मनरेगा के तहत पूर्णतः 90 मानव दिवस सृजन करने का निर्देश दिया गया।बचे हुए खराब चापानल एवं जलमीनार मरम्मति को अधिक से अधिक संख्या में गैंग लगाकर दुरूस्त करने हेतु कहा गया। राशन वितरण में पारदर्शिता लाने हेतु सभी पंचायतों में नोटिस बोर्ड पर सूचना जारी करने को कहा गया जिसमें यह उल्लेख रहे कि जून माह का अनाज 1 से 15 जून तक वितरण किया जाएगा। इसी प्रकार 16 से 30 जून को जुलाई माह का अनाज तथा 1 से 15 जुलाई को माह अगस्त का राशन वितरण किया जाएगा। अंचल अधिकारी से संपर्क कर जमीन संबंधी मामलों का निष्पादन हेतु बीडीओ को निर्देश दिया गया। साथ ही पुराने जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पड़े भवनों को डिमालिस हेतु भवन निर्माण विभाग को प्रस्ताव उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। प्रखंडों में बनने वाले मिल्क पार्लर का उद्घाटन 15 अगस्त को करने का लक्ष्य रखा गया। खेल तथा पर्यटन पर निर्माण संभावनाओं के लिए प्रस्ताव की मांग की गई। उन्होंने साइकिल वितरण की समीक्षा में कहा कि विद्यालय खुलने पर तुरंत साइकिल वितरण कर दिया जाय ताकि बच्चों को विद्यालय आने जाने में सुगमता हो सके। प्रखंड विकास पदाधिकारीयों को निर्देश दिया गया कि सामुदायिक शौचालय निर्माण के लिए स्थल चिन्हित किया जाय जिसमें एक 15 वें वित्त से तथा दो -दो अन्य मद से जिला स्तर पर निर्माण किया जाएगा। सामुदायिक शौचालय की देखभाल तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए इसके इस्तेमाल पर राशि तय की जाएगी।

जैक 12 वीं बोर्ड परीक्षा के कॉमर्स परिणाम में राज्य में टॉप 5 में एवं साइंस परीक्षा के परिणाम में 17 वें स्थान हासिल किया पाकुड़

- प्रोजेक्ट परख के सहयोग से 12 वीं बोर्ड परीक्षा 2025 के परिणाम में पाकुड़ जिले ने पहली बार किया बेहतर प्रदर्शन
- वहीं हिरणपुर +2 उच्च विद्यालय से 59 छात्रों में 58 छात्रों ने साइंस में किया प्रथम
- उपायुक्त ने सभी छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, जन प्रतिनिधियों एवं पूरे पाकुड़ परिवार को बधाई दी
- 12 वीं बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को समाहरणालय सभागार में किया सम्मानित

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
जिला प्रशासन की सकारात्मक सोच और अथक परिश्रम का परिणाम रहा कि 22 वें नंबर से इस बार 12 वीं बोर्ड के कॉमर्स के रिजल्ट में राज्य में 5 वें स्थान, साइंस परीक्षा के परिणाम में 17 वें स्थान पर जगह बनाई है। आज इसी को लेकर समाहरणालय स्थित सभागार में 12 वीं बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में परियोजना निदेशक आईटीडीए अरूण कुमार एक्का, अपर समाहर्ता जेम्स सुरीन, अनुमंडल पदाधिकारी साईमन

मरांडी, जिला शिक्षा पदाधिकारी सुश्री अनीता पुरती एवं एडीपीओ पीयूष कुमार के द्वारा 12 वीं बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया।
उपायुक्त मनीष कुमार वीडियो कांफ्रेंसिंग से जुडकर कहा कि निरंतर अभ्यास के कारण पाकुड़ को यह सफलता मिली है। इसके लिए सभी छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, जन प्रतिनिधियों एवं पूरे पाकुड़ परिवार बधाई के पात्र हैं। आप सभी छात्रों ने अपने अपने शिक्षकों, माता-पिता, स्कूल, समाज तथा समस्त जिले को गौरवान्वित किया है। आप सभी पर हम सबको गर्व है।उपायुक्त ने बताया कि छात्रों ने 12 वीं बोर्ड की तैयारी को लेकर चलाए गए वीकली टेस्ट और प्री टेस्ट से बेहतर करने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि परीक्षा को लेकर जिले में एक बेहतर माहौल मिला, जिससे परिणाम अच्छा प्राप्त हुआ है। उपायुक्त ने कहा कि अगले साल 12 वीं बोर्ड परीक्षा 2026 में पाकुड़ जिला को टॉप 3 में लाना मेरी प्राथमिकता में है।

पाकुड़ रेलवे स्टेशन परिसर में बनेगा सेल्फी प्वाइंट एवं लगेगा एटीएम, किया गया स्थल निरीक्षण

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
उपायुक्त पाकुड़ मनीष कुमार के पहल पर वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक पूर्व रेलवे हावड़ा राहुल रंजन के निदेशानुसार पाकुड़ रेलवे स्टेशन परिसर में सेल्फी प्वाइंट एवं यात्रियों तथा आमजनों को सुविधार्थ एटीएम के अधिष्ठापन हेतु पाकुड़ रेलवे स्टेशन पर स्थल निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के क्रम में स्टेशन प्रबंधक, पूर्व रेलवे पाकुड़ लखीराम हेम्ब्रम,वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (कार्य) पूर्व रेलवे पाकुड़ परितोष रंजन,वरिष्ठ विद्युत अनुभाग अभियंता (साज़) पूर्व रेलवे पाकुड़ राजू कुमार, कनिय दूरभाष अभियंता संजय कुमार ओझा, नगर परिषद के

कनिय अभियंता संजीत मालतो, साहिद सिद्दीकी, ईस्टर्न जोनल रेलवे पैसेंजर्स एसोसिएशन,हावड़ा मंडल के अध्यक्ष हिसाबी राय,सचिव राणा शुक्ला,सह सचिव सुशील साहा एवं अनिकेत गोस्वामी मौजूद थे।

जिला प्रशासन की ओर से नगर सौन्दर्यीकरण के दृष्टिकोण से नगर को सजाने संवारने का कार्य किया जा रहा है,उसी क्रम में पाकुड़ रेलवे स्टेशन भी सुंदर एवं स्वच्छ दिखे इस हेतु उपायुक्त मनीष कुमार ने पहल किया है।जिसका असर भी अब दिखने लगा है।अपराह्न में जिला प्रशासन की ओर से नगर परिषद के कनिय अभियंता तथा रेल प्रशासन की ओर से के वरिष्ठ पदाधिकारी में संयुक्त रूप से स्थल निरीक्षण किया तथा संयुक्त जांच प्रतिवेदन बनाकर रेलवे के वरिय पदाधिकारी को समर्पित किया गया है।

जांचोपरांत स्टेशन प्रबंधक, पूर्व रेलवे पाकुड़ लखीराम हेम्ब्रम ने बताया कि वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक,पूर्व रेलवे हावड़ा के पत्र के आलोक में सेल्फी प्वाइंट तथा एटीएम कक्ष निर्माण हेतु संयुक्त रूप से स्थल का निरीक्षण किया गया।जिसका संयुक्त जांच प्रतिवेदन बनाकर संबंधित रेल पदाधिकारी को भेजा जा रहा है।

सुधीर ने रक्तदान कर बचाई 17 वर्षीय बच्ची की जान

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो
पाकुड़। सत्य सनातन संस्था के आह्वान पर शनिवार को कोर्ट कर्मचारी सुधीर कुमार सिंह ने रक्तदान कर 17 वर्षीय बच्ची खुशी पहाड़िया की जान बचाकर मानवता का परिचय दिया है। संस्था के जिला अध्यक्ष हर्ष भगत ने कहा कि शहर के किताझोर निवासी खुशी पहाड़िया बहुत की गरीब परिवार से है। वह अचानक बिमारी हो गई। बिमारी के ईलाज के लिए पड़ोस के मेघदूत घोष ने बच्ची को अस्पताल में भरती कराया था। चिकित्सकों ने

ईलाज के दौरान बच्ची के शरीर में रक्त की कमी बताते ही रक्त उपलब्ध करने की सलाह दी। चिकित्सक के सलाह में मेघदूत ने रक्त के लिए संस्था से सहयोग की अपील की। संस्था के आग्रह पर न्यायालय कर्मचारी सुधीर सिंह ने पुराना सदर अस्पताल स्थित रक्त अधिकोष में पहुंचकर बच्ची को रक्तदान किया। सुधीर ने बताया कि रक्तदान महादान है। इस कार्य कि लिए कभी पीछे नहीं रहेंगे। किसी का जान बचाना यह एक अच्छा मौका है। सुधीर ने रक्तदान के लिए लोगों से बढ़-चढ़कर आगे आने की अपील की। संस्था के जिला अध्यक्ष ने कहा कि संस्था रक्तदान के प्रति लोगों को हमेशा जागरूक करती है। आगे भी इस कार्य को संस्था जारी रखेगा। रक्तदान महादान से इस कार्य के लिए सभी को आगे रहना चाहिए। रक्त मिलने के बाद बच्ची के परिजनों ने संस्था को धन्यवाद दिया है। मौके पर संस्था के अजय भगत, रक्त अधिकोष के नवीन कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

एक 50 वर्षीय अज्ञात महिला का शव बरामद किया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
साहिबगंज। बरहेट थाना क्षेत्र मे शनिवार को डुमरा गांव के समीप मोरंग नदी में तैरता हुआ एक 50 वर्षीय अज्ञात महिला का शव बरामद किया। शव को देखकर ऐसा लगता था जैसे तीन-चार दिनों से पानी में पड़ा हो। मोरंग नदी में शव होने की जानकारी ग्रामीणों से थाना पुलिस को मिलने के बाद बरहेट थाना के सहायक अवर निरीक्षक केपी यादव और अशोक कुमार सिंह अन्य सुरक्षा बल के साथ घटना स्थल पर पहुँच शव को नदी से बाहर निकलवाया। पुलिस ने महिला के शव को प्रथम दृष्टया आदिवासी समाज के होने की आशंका व्यक्त की है। वहीं पुलिस ने शव को घटना स्थल से ही आवश्यक प्रक्रिया करते हुए पोस्टमार्टम के लिए साहिबगंज भेज दिया। यह भी संभावना है कि अधेड़ महिला का शव कहीं से तैरते हुए वहाँ पहुंचा होगा। थाना पुलिस ने मामले में आवश्यक प्रक्रिया करते हुए छानबीन कर रही है। साथ ही शव की पहचान करने के प्रयास में है।

जिला पंचायत राज पदाधिकारी श्रीमती प्रीतिलता मुर्मू की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग के माध्यम से पंचायती राज विभाग के कार्यों की समीक्षा की गई

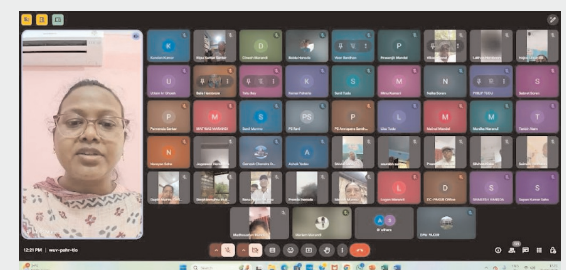

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
समीक्षा के क्रम में आदर्श पंचायत सचिवालय की स्थिति,पंचायत सचिवालय के प्रतिदिन खुलने और रोस्टर के अनुरूप कर्मियों के उपस्थिति की स्थिति, पंचायत से निर्गत जन्म - मृत्यु प्रमाण पत्र के अभिलेख संधारण की स्थिति,पंचायत ज्ञान केंद्र के संचालन की स्थिति,पंचायत द्वारा संधारित सभी पंजियों के अद्यतन की स्थिति, पी0 ए0 आई0 अंतर्गत सभी ग्राम पंचायतों में इंडेक्स के प्रदर्शन की स्थिति की समीक्षा कर संबंधित पदाधिकारियों एवं कर्मियों को आवश्यक व उचित दिशा निर्देश दिया।
उक्त बैठक में सभी प्रखंडों के प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी, सभी प्रखंड समन्वयक, पंचायत राज स्वशासन परिषद, सभी मुखिया एवं सभी पंचायत सचिव सहित अन्य उपस्थित थें।

समाहरणालय, सदर अस्पताल, अनुमंडल कार्यालय, प्रखंड स्तरीय कार्यालय सहित विभिन्न कार्यालयों में सभी पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने भी तंबाकू उत्पाद इस्तेमाल नहीं करने की शपथ ली

- जिले भर में मनाया गया विश्व तंबाकू निषेध दिवस
- तंबाकू छोड़ने की दिलाई गई शपथ
- तम्बाकू छोड़ने वाले 4 लोगों को किया सम्मानित

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो
पाकुड़ - तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर जिले के विभिन्न कार्यालयों में संकल्प सह शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। शपथ ग्रहण का आयोजन समाहरणालय, अनुमंडल कार्यालय, नगर परिषद कार्यालय, सदर अस्पताल सहित, सभी प्रखंड स्तरीय कार्यालय सहित विभिन्न कार्यालयों में आयोजित किया गया। इसमें परियोजना निदेशक आईटीडीए श्री अरूण कुमार एक्का, अपर समाहर्ता श्री जेम्स सुरीन, सिविल सर्जन डॉ मंटू कुमार टेकरीवाल, उप निर्वाचन पदाधिकारी मोहनलाल मरांडी, जिला आपूर्ति पदाधिकारी अभिषेक कुमार सिंह, जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ के के सिंह सभी विभागों के पदाधिकारी व कर्मी शामिल हुए। इस दौरान सभी ने जीवन में कभी भी किसी प्रकार के तंबाकू उत्पाद का सेवन नहीं करने की शपथ ली। इसके अलावा परिजन, मित्र या परिचितों को भी तंबाकू उत्पादों का सेवन नहीं करने के लिए प्रेरित करने की शपथ ली। साथ ही हमें भोजन चाहिए तंबाकू नहीं आदि का भी शपथ लिया।

उपायुक्त ने माह-जून, 2025 एवं जुलाई, अगस्त 2025 का अग्रिम खाद्यान्न का उठाव एवं डोर स्टेप डिलीवरी की समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिया

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
उपायुक्त मनीष कुमार ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से खाद्य आपूर्ति विभाग की समीक्षा बैठक की। उपायुक्त ने आगामी जून माह में जून, जुलाई व अगस्त माह के खाद्यान्न वितरण के लक्ष्य को लेकर अब तक की कार्रवाई की जानकारी ली। अब तक लक्ष्य अनुरूप जन वितरण प्रणाली (जविप्र) दुकानदारों के बीच खाद्यान्न वितरण के संबंध में डीएसओ से जानकारी हासिल की। डीएसओ ने वाहनों की संख्या पर्याप्त नहीं होने पर आपूर्ति संतोषजनक नहीं होने की जानकारी दी। उपायुक्त ने निर्देश दिया गया

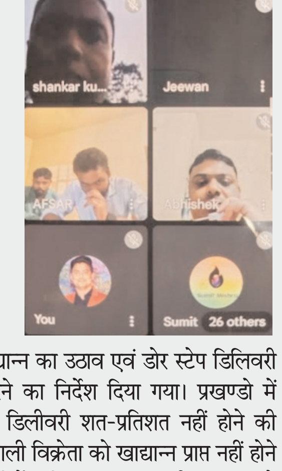

कि विभाग द्वारा निर्धारित उक्त खाद्यान्न का उठाव एवं डोर स्टेप डिलिवरी 31मई तक शत प्रतिशत पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। प्रखण्डो में खाद्यान्न का उठाव एवं डोर स्टेप डिलीवरी शत-प्रतिशत नहीं होने की स्थिति में या किसी जन वितरण प्रणाली विक्रेता को खाद्यान्न प्राप्त नहीं होने पर नियमानुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। साथ ही उपायुक्त ने वाहनों-मजदूरों की संख्या बढ़ाने के लिए डोर स्टोप डिलिवरी ट्रांसपोर्टरों व एजीएम को निर्देश दिया। साथ ही राशन वितरण में पारदर्शिता लाने हेतु सभी पंचायतों में नोटिस बोर्ड पर सूचना जारी करने को कहा गया जिसमें यह उल्लेख रहे कि जून माह का अनाज 1 से 15 जून तक वितरण किया जाएगा। इसी प्रकार 16 से 30 जून को जुलाई माह का अनाज तथा 1 से 15 जुलाई को माह अगस्त का राशन वितरण किया जाएगा।

समाज कल्याण एवं बाल विकास परियोजना के तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित कर दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिकों के बीच ट्राई साइकिल एवं अन्य उपकरण का किया गया वितरण

शिकारीपाड़ा। समाज कल्याण एवं बाल विकास परियोजना के तत्वावधान शनिवार को शिकारीपाड़ा प्रखंड परिसर में दुमका सांसद नलिन सोरेन ने दो सौ दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिकों के बीच ट्राई साइकिल सहित अन्य सहयोगी उपकरणों का वितरण किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद नलिन सोरेन ने कहा

कि आज वैसे व्यक्तियों के बीच सहायक उपकरणों का वितरण किया जा रहा है जिनका रजिस्ट्रेशन जनवरी 2025 में किया गया था। इसके पीछे सरकार की मंशा है कि सभी दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिक अपने हक और अधिकार के लिए कहीं भी सुगमता पूर्वक पहुंचकर लाभ उठा सके। उसी के तहत इस प्रकार के उपकरण का वितरण किया जा रहा है। यह जिला के प्रत्येक प्रखंड में किया जा रहा है और आगे भी किया जाएगा। कार्यक्रम को प्रखंड विकास पदाधिकारी सह प्रभारी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी मोहम्मद एजाज आलम ने भी संबोधित करते हुए योजना पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अंचल अधिकारी शिकारीपाड़ा कपिल देव ठाकुर, प्रभुनाथ हांसदा के साथ सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे। बताते चलें कि कड़ी धूप में भी लाभुक खुले मैदान में धूप की परवाह किए बिना अपनी बारी का इंतजार करते देखे गए। वितरण कार्यक्रम के पश्चात सांसद अपने आवास के लिए प्रस्थान कर गए।

>> विचार

> "सबसे चिंताजनक घटना थी अशोका विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद की गिरफ्तारी। एक अत्यंत उपयुक्त पोस्ट में उन्होंने लिखा था, मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि बहुत सारे दक्षिणपंथी लेखक कर्नल सोफिया कुरैशी की सराहना कर रहे हैं। वे आगे लिखते हैं, उन्हें यह मांग भी करनी चाहिए कि भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या किए जाने और मनमाने ढंग से घरों को ढहाए जाने और बीजेपी के घृणा अभियान की वजह से होने वाली अन्य घटनाओं के शिकारों को भी भारतीय नागरिकों की तरह सुरक्षा हासिल हो। कई मानवाधिकार समूहों ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि मुसलमानों के साथ होने वाली हिंसा और उनके खिलाफ नफरत भरे भाषण दिए जाने की घटनाओं में पिछले एक दशक में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

पहलगाम त्रासदी, मुसलमानों के खिलाफ नफरत और भारतीय डेलिगेशन की विदेश यात्राएं

राम पुनियानी

पहलगाम में हुए आतंकी हमले का भारत की जनता पर गहरा असर हुआ है। जहां प्रधानमंत्री मोदी डींगें हांकते रहे और गोदी मीडिया दावा करता रहा कि भारतीय सेनाएं पाकिस्तान में घुस गई हैं, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान ने भारत के कई विमानों को मार गिराने का दावा किया। संघर्ष विराम की घोषणा सबसे पहले डोनाल्ड ट्रंप ने की और कहा कि यह उनकी मध्यस्थता से संभव हुआ है। वहीं मोदी ने दावा किया कि इसका श्रेय उन्हें जाता है और सेना के प्रवक्ता ने कहा कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने संघर्ष विराम का अनुरोध किया था जिसे भारत ने मंजूर किया जिससे दोनों ओर सैनिकों और नागरिकों का बड़े पैमाने पर संभावित रक्तपात रूक सका। सरकार ने अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए कई प्रतिनिधिमंडल दुनिया के विभिन्न देशों में भेजे हैं, जिनमें विपक्षी दलों के कई सांसदों को भी शामिल किया गया है। शशि थरूर के नेतृत्व में ऐसा ही एक प्रतिनिधिमंडल अमेरिका पहुंचा। इन प्रतिनिधिमंडलों को क्या कहने की हिदायत और सलाह दी गई है, यह थरूर के अमेरिका में दिए गए वक्तव्य से स्पष्ट होता है। अमेरिका में थरूर ने कहा, "पहलगाम के आतंकी हमले का प्रयोजन लोगों को बांटना था लेकिन इससे भारत के लोग धर्म और अन्य विविधताओं से परे हटकर एक हो गए। धार्मिक और अन्य विभाजनों से दूर हटते हुए, भड़काने की कोशिशों के बावजूद उन्होंने असाधारण एकता प्रदर्शित की। संदेश साफ है कि इस कांड के प्रायोजकों का बहुत घातक इरादा था। क्या सभी प्रतिनिधिमंडलों को इसी तरह की बातें कहने की हिदायत दी गई है? स्पष्टतः यह आख्यान काफी हद तक सही है क्योंकि सभी भारतीयों, हिंदुओं और मुस्लिमों ने एकजुट होकर पहलगाम की कायरतापूर्ण घटना की निंदा की। लेकिन इसके बावजूद, अंदर ही अंदर मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैलाने का काम जारी है। पहलगाम की घटना के पहले भी मुसलमानों के प्रति नफरत लगातार बढ़ती जा रही थी, जो घटना के बाद तो तेजी से बढ़ते हुए शिखर पर पहुंच गई है।अपने पिछले लेख में मैंने इस अभागे समुदाय के प्रति नफरत फैलाने के लिए की गई हरकतों की आंशिक सूची प्रस्तुत की थी। इनका संकलन सेंटर फॉर स्टडी ऑफ सोसायटी एन्ड सेकुलरिज्म, मुंबई द्वारा किया गया है। एक अन्य लेख में यह टिप्पणी की गई थी कि जहां भारत आतंकी हमले में हुई मौतों का शोक

मना रहा था, वहीं ऑनलाइन और ऑफलाइन एक समन्वित अभियान चलाया गया जिसका एक संदेश था कि मुसलमान हिंदुओं के लिए खतरा हैं, कभी न कभी सभी हिंदुओं का यही हाल होगा और मुसलमानों को हिंसा और बहिष्कार के जरिए दंडित किया जाना जरूरी है। सबसे चिंताजनक घटना थी अशोका विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद की गिरफ्तारी। एक अत्यंत उपयुक्त पोस्ट में उन्होंने लिखा था, मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि बहुत सारे दक्षिणपंथी लेखक कर्नल सोफिया कुरैशी की सराहना कर रहे हैं। वे आगे लिखते हैं, उन्हें यह मांग भी करनी चाहिए कि भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या किए जाने और मनमाने ढंग से घरों को ढहाए जाने और बीजेपी के घृणा अभियान की वजह से होने वाली अन्य घटनाओं के शिकारों को भी भारतीय नागरिकों की तरह सुरक्षा हासिल हो। कई मानवाधिकार समूहों ने इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि मुसलमानों के साथ होने वाली हिंसा और उनके खिलाफ नफरत भरे भाषण दिए जाने की घटनाओं में पिछले एक दशक में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। इसके बाद हरियाणा राज्य महिला आयोग ने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज करवाते हुए कहा कि मेहमूदाबाद के सोशल मीडिया पोस्ट से दोनों महिला सैन्य अधिकारियों का अपमान हुआ है और सुरक्षा बलों में उनकी भूमिका का अवमूल्यन हुआ है। यह समझ के परे है कि इस पोस्ट से कैसे इन महिला सैन्य अधिकारियों का अपमान हुआ या भारतीय सेना में उनकी भूमिका का अवमूल्यन हुआ। एक अन्य शिकायत बीजेपपी के एक युवा कार्यकर्ता द्वारा दर्ज कराई गई। इन शिकायतों पर कार्यवाही करते हुए अली खान को गिरफ्तार किया गया और बाद में उच्चतम न्यायालय ने उन्हें अस्थायी जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। उच्चतम न्यायालय ने यह आदेश भी दिया कि वे इस मुद्दे पर कुछ न लिखें और अपना पासपोर्ट जमा करें। आदेश में कहा गया कि अली खान का पोस्ट 'डॉग विस्सल' है और इससे दबे-छुपे ढंग से कोई गलत सन्देश जा सकता है। हम जानते हैं कि "डॉग विस्सल" ऐसे सन्देश को कहा जाता है जिसमें विवाद पैदा करने वाली बातें परोक्ष ढंग से कही गई हों। न्यायाधीश ने इस पोस्ट को जारी किए जाने के समय और उसके पीछे क्या इरादा था इस पर शंका व्यक्त की। हालांकि जमानत देने का फैसला अत्यंत सराहनीय था। वहीं, बीजेपी के नेता और मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री विजय शाह के इस कथन के लिए भी न्यायालय ने उन्हें कड़ी फटकार लगाई कि सोफिया कुरैशी आतंकवादियों की बहन हैं। बीजेपी नेता का यह कथन संभवतः इस असाधारण सैन्य अधिकारी पर की गई सबसे घृणित टिप्पणी थी। और यह तो निश्चित तौर पर 'डॉग विस्सल' की श्रेणी में आती है। हालांकि न्यायालय ने उनकी क्षमायाचना को खारिज कर दिया लेकिन उनकी गिरफ्तारी पर भी रोक लगा दी। प्रोफेसर खान की पोस्ट तो निश्चित तौर पर डॉग विस्सल नहीं है। वह तो अल्पसंख्यक समुदाय की पीड़ा का इजहार है। इसके विपरीत विजय शाह की 'डॉग विस्सल' नफरत की अभिव्यक्ति है। प्रोफेसर अली खान ने अत्यंत संवेदनशील ढंग से हमें आईना दिखाया है कि देश में अल्पसंख्यकों के साथ किस तरह का व्यवहार हो रहा है। विजय शाह का भाषण इस बात को खुलकर प्रदर्शित करता है कि कैसे हर अवसर का उपयोग अल्पसंख्यकों के खिलाफ नफरत का बीज बोने के लिए किया जाता है। अल्पसंख्यक समुदाय के एक प्रोफेसर को इस बात पर फटकारा जाना एकदम अनुचित है कि उन्होंने बुलडोजरों और लिंचिंग के बारे में कुछ कहा। न्यायालय द्वारा रोक लगाए जाने के बावजूद कई राज्य सरकारों द्वारा बुलडोजरों का इस्तेमाल जारी है। इसी तरह दो व्यंग्यकारों नेहा सिंह राठौर और मदिरी काकोटी, जिन्हें इंटरनेट की दुनिया में डॉ मेडुसा के नाम से जाना जाता है, के खिलाफ भी उनके मोदी सरकार की आलोचना करने वाले सोशल मीडिया पोस्ट, जो पहलगाम आतंकी हमले के बाद जारी किए गए थे, को लेकर प्रकरण दर्ज किए गए। विजय शाह को उनके आपत्तिजनक कथनों के लिए उनकी पार्टी ने क्षमा कर दिया है। न उन्हें पार्टी से निष्कासित या निलंबित किया गया है और ना ही गिरफ्तार किया गया है। अल्पसंख्यकों के खिलाफ बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व से लेकर निचले स्तर तक के नेता जहर उगलते रहते हैं, जिसे न केवल मौन समर्थन दिया जाता है बल्कि यह उनके राजनैतिक करियर के उन्नयन में सहायक होता है। हमें याद है कि 2019 में दिल्ली में हुई हिंसा के कुछ ही समय पहले शांति और सद्भाव की अपीलें करने वाले उमर खालिद और शरजील इमाम पांच सालों से जेल में सड़ रहे हैं और उनके प्रकरणों की सुनवाई तक शुरू नहीं हुई है। वहीं उस समय के राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर को 'गोली मारो' का नारा लगवाने के बाद पदोन्नति देकर कैबिनेट मंत्री बना दिया गया था। हमारे सामाजिक एवं संवैधानिक प्रतिमानों को धर्म में रंगी राजनीति के माध्यम से धीरे-धीरे नष्ट किया जा रहा है। लोकतंत्र को अली खान, उमर खालिद, नेहा सिंह राठौर और हिमांशी नरवाल जैसे लोगों की जरूरत है जो सच्चे दिल से शांति का आव्हान कर रहे हैं और हमें हमारे समाज का आईना दिखा रहे हैं।

(लेख का अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया द्वारा)

संपादकीय

ठोस और सार्थक कदम उठाए जाएं

भारतीय अर्थव्यवस्था की तेज रफ्तार जहां एक ओर पूरी दुनिया को अचंभित करती है, वहीं एक कड़वा सच यह भी है कि करोड़ों परिवार आज भी बहुत मुश्किल से अपना घर चला पा रहे हैं। इनमें से अनेक लोगों को विश्वास है कि वे कर्ज लेकर व्यापार करेंगे, तो अधिक पैसे कमाएंगे और बेहतर भविष्य बनाएंगे। दूसरी ओर, कुछ को लगता है कि भविष्य के बारे में ज्यादा सोचने के बजाय उन्हें वर्तमान में जी लेना चाहिए। मगर स्वास्थ्य और शिक्षा पर खर्च बढ़ने से उनकी चुनौतियां भी लगातार बढ़ रही हैं। महंगाई और घटती आय की वजह से उनमें निराशा है। उनकी उम्मीदें टूटी हैं। चिंता का विषय है कि बैंकों का बकाया न चुकाने के कारण कई परिवार कर्ज में इस तरह डूब जाते हैं, जहां से निकलना उनके लिए संभव नहीं होता। कुछ लोग आत्महत्या जैसे घातक कदम उठा लेते हैं। हरियाणा के पंचकूला में एक ही परिवार के सात लोगों की खुदकुशी ऐसा ही मामला है। सच्चाई यही सामने आई है कि इस परिवार पर बैंक का बहुत सारा पैसा बकाया था, जिसे चुकाना उसके लिए मुश्किल हो गया था। कर्ज में डूबा परिवार रोजमर्रा की जरूरतें भी पूरी नहीं कर पा रहा था। अगर देश के नागरिक घर और वाहन खरीदने के लिए कर्ज ले रहे हैं, तो निश्चित रूप से इसके पीछे बेहतर रोजगार और अच्छी आय की संभावनाएं छिपी हैं। मगर कारोबार के लिए लिया गया कर्ज कोई नहीं चुका पा रहा है, तो इस पर सोचने की जरूरत है कि विकास की तेज रफ्तार के बीच उनका कारोबार क्यों पिछड़ रहा है। अगर व्यापारी कर्ज लेकर भी लागत नहीं निकाल पा रहे हैं, तो इसके पीछे के कारणों को समझने और उनका हल निकालने की जरूरत है। इसके लिए नीति निर्माताओं को ही आगे आना होगा। यह सच भी छिपा नहीं है कि कर्ज में डूबे हजारों किसान खुदकुशी कर चुके हैं। फसलों की लागत न निकल पाने से उनमें भारी निराशा है। छोटे कारोबारियों की स्थिति भी कोई अच्छी नहीं है। जरूरत है कि बेहतर जिंदगी जीने की करोड़ों लोगों की उम्मीदें और सपने बचाने के लिए अब ठोस और सार्थक कदम उठाए जाएं।

बढ़ती आबादी को ताकत बनाने की जरूरत

मोहन गुरुस्वामी

चिंता की बात है कि देश में जनसंख्या की विशालता से मिलने वाला लाभ कहीं आबादी से बना दुःस्वप्न बनकर न रह जाए। लंबे समय से जनसंख्या के आंकड़ों के हिसाब से मिलने वाले फायदे-नुकसानों के बारे में बोलता-लिखता आया हूं। राजनेता और उनके दलाल यह जाने बिना कि शब्दों का अर्थ क्या है, इसको लपक कर दोहराने लगते हैं। चुनौतियां हमारे सामने हैं। वह भारत, जिसकी जनसंख्या 134 करोड़ है, अब विश्व में सबसे अधिक आबादी वाला राष्ट्र है। लेकिन भारत हमेशा इतना बड़ा नहीं था, जितना कि आज है, चाहे यह जनसंख्या हो या अर्थव्यवस्था। वर्ष 1921, जिसे 'विभाजन का बड़ा साल' कहा जाता है, भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस साल मृत्यु दर में काफी गिरावट आई और जनसंख्या वृद्धि की दर अपेक्षाकृत स्थिर रहने वाली लीक से हटकर तेजी से बढ़ने होने की शुरुआत हुई। वर्ष 1801-1921 के बीच जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार काफी धीमी रही, लगभग 20 करोड़ से 22 करोड़ होना। लेकिन 1921 के बाद से हमारी जनसंख्या बढ़ोतरी वास्तव में आज आकाश को छूने की कगार पर है। जनसंख्या में वृद्धि 1981 में 2.22 प्रतिशत की उच्चतम दर को छू गई थी, उसके बाद से बढ़ोतरी दर घटने की ओर है। एक सदी की अवधि के अंदर, भारत की जनसंख्या में छह गुना इजाफा हुआ। अनुमान बताते हैं कि भारत में पिछले सौ वर्षों में लगभग 200 मिलियन लोग जुड़े और वर्तमान सदी के मध्य तक 200 मिलियन और लोग जुड़ने की उम्मीद है। भिन्न अनुमानों का मध्य आंकड़ा बताता है कि वर्ष 2005-50 के बीच, भारत की जनसंख्या में लगभग 45 प्रतिशत की बढ़ोतरी होगी। वृद्ध जनसंख्या (65 वर्ष से अधिक उम्र वाले) का अनुपात 2050 में 5 प्रतिशत से बढ़कर 14.5

प्रतिशत हो जाएगा, संख्या के मुताबिक कहें तो इनकी गिनती 5.7 करोड़ से बढ़कर 24 करोड़ हो जाएगी। उन्नत देशों की बुजुर्ग आबादी के अनुभवों के आधार पर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वृद्धों की बढ़ती संख्या के लिए हमें कराधान, सामाजिक सुरक्षा और स्वास्थ्य देखभाल संबंधित अपनी नीतियों में समुचित योजनाएं बनाने की आवश्यकता पड़ेगी। वृद्धों की संभाल पर खर्चा अधिक होता है। चिंता का एक अन्य बड़ा पहलू है बढ़ता जनसंख्या घनत्व। अनुमान है कि जहां यह 2005 में 345 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था, 2050 में बढ़कर 504 प्रति वर्ग किलोमीटर हो जाएगा। बढ़ते शहरीकरण के चलन के साथ इसे जोड़कर देखने पर, आने वाले सालों में समस्याओं में इजाफे का संकेत मिलता है। साल 2000 में, कुल आबादी का केवल 28.7 प्रतिशत या लगभग 30 करोड़ लोग शहरी क्षेत्रों में बसे हुए थे; अब अनुमान है कि 2030 तक यह संख्या कुल आबादी की 40.7 प्रतिशत या लगभग 60 करोड़ हो जाएगी। इस भारी वृद्धि में विशेष रूप से मध्यम और कामकाजी वर्ग की बढ़ती आर्थिक शक्ति की भूमिका है। इसके मद्देनजर, पर्याप्त रूप से उन्नत आवास एवं शहरी बुनियादी ढांचा, मसलन, जल, सीवरेज, जन सुविधाएं, तीव्र गति परिवहन, यातायात प्रबंधन एवं पार्किंग, ऊर्जा और दूध एवं दुग्ध उत्पाद, प्रसंस्कृत खाद्य व बागवानी उत्पाद जैसे भोज्य पदार्थों की अधिक खपत और उनके कुशल वितरण के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता पड़ेगी। अनुमान है कि 15-64 वर्ष आयु वर्ग की गिनती जो कि 2005 में कुल आबादी का 62 प्रतिशत थी, 2050 में बढ़कर लगभग 67.3 प्रतिशत हो जाएगी, संख्या के हिसाब से कहें, तो 70 करोड़ से 112 करोड़ होना। फिलहाल भारत में हर साल कामकाजी वर्ग में 1 करोड़ 20 लाख लोग जुड़ रहे हैं। इस आयु वर्ग में वृद्धि 2030 तक तेज रहेगी, जिसके बाद से इसमें शुरू हुई गिरावट इस स्तर पर पहुंच जाएगी कि 2045-50 के बीच शायद ही कोई वृद्धि हो, जो कि 15-64 जनसंख्या समूह की संख्या में स्थिरीकरण और उसके बाद से इसके बुढ़ाते जाने का संकेत है। यह चक्र प्राकृतिक है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि में ठहराव आता रहता है। अगले तीन दशकों की तात्कालिक चुनौती है, पहले करोड़ों नौकरियों का सृजन करना और फिर श्रमिकों की उपलब्धता में तेज गिरावट से निपटना। एनपीपी 2000 में परिकल्पना की गई थी कि वर्ष 2045 तक भारत को जनसंख्या स्थिरीकरण बनाना पड़ेगा। यह लक्ष्य इस धारणा पर आधारित है कि देश को वर्ष 2010 तक जनसंख्या का प्रतिस्थापन स्तर टीएफआर 2.1 तक ले आना चाहिए था। हम यह पाने में चूक गए। हालांकि टीएफआर के हालिया आंकड़े 2045 तक भी इस लक्ष्य की प्राप्ति न हो पाने का संकेत दे रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय अब जनसंख्या स्थिरीकरण पाने के वास्ते वर्ष 2060 को एक संभावित लक्ष्य के रूप में देखने लगा है। यहां पर यह उल्लेख करना उचित होगा कि जनसंख्या स्थिरीकरण, प्रतिस्थापन प्रजनन क्षमता (यानी जितने मरें, उतने पैदा हों) बनने के बहुत बाद जाकर बनता है। वर्ष 1996 में योजना आयोग द्वारा गठित 'जनसंख्या पर तकनीकी समिति' द्वारा किए गए एक अध्ययन में अनुमान लगाया गया था कि भारत 2026 तक प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन दर प्राप्त कर पाएगा। लेकिन, हिंदी भाषी राज्यों में यह बिहार में 2039 तक, राजस्थान 2048 तक, मध्य प्रदेश 2060 से आगे और उत्तर प्रदेश में 2100 के बाद ही संभव होगा। हमें 2060 या 2070 से पहले राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरीकरण पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। ये क्षेत्रीय असमानताएं इन राज्यों में अनुमानित जनसंख्या में खतरनाक वृद्धि के रूप में फलीभूत होंगी। 1991-2050 के दौरान भारत की जनसंख्या में होने वाली 77.3 करोड़ की वृद्धि में अकेले उत्तर प्रदेश का हिस्सा 19.8 करोड़ रहेगा। जोकि सकल राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि का लगभग एक-चौथाई बनता है। आइए एक नजर डालते हैं कि आने वाले वर्षों में प्रति व्यक्ति आय कितनी रहेगी। साल 2005 में एक शोधपत्र आया था 'क्या भारत एक आर्थिक महाशक्ति बन पाएगा, क्या वास्तव में और इसमें क्या-क्या रूकावट बन सकता है।' विश्व बैंक में भारत के लिएइसके प्रमुख अर्थशास्त्री स्टीफन होवेस ने ऐतिहासिक विकास दरों के आधार पर 2050 तक प्रति व्यक्ति आय का अनुमान लगाया था। यह दर्शाता है कि बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल में 2050 में प्रति व्यक्ति आय 1000 अमेरिकी डॉलर सालाना से कम रहेगी, जो कि वर्तमान प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद से कम है। निश्चित तौर पर 2050 में होने वाली आय से तो और भी कम। कोई हैरानी नहीं कि ये सूबे वही हैं, जिनकी जनसंख्या वृद्धि दर बहुत ज्यादा है। वर्ष 2020 में, भारत में 15-24 आयु वर्ग के लोगों की गिनती 24.5 करोड़ से अधिक थी। यदि बचत दरें आज जितनी बनी रहें और 2020 वाली उच्च उत्पादन क्षमता कायम रहे, तब जाकर 2050 तक हमारे पासभारत को एक विकसित और समृद्ध अर्थव्यवस्था बनाने का एक बड़ा अवसर बनेगा। यह तभी संभव होगा यदि हम लोगों को शिक्षित और सशक्त बना पाएंगे। जनसांख्यिकीय आंकड़ों का ऐसा समुच्चय फिर कभी देखने को नहीं मिलेगा। अगर हमें अगली आधी सदी में गरीबी के मकड़जाल से बाहर निकलना है, तो मानव और आर्थिक विकास में बड़े निवेश करने का समय अभी है। दुर्भाग्य से, ऐसा कोई संकेत मिल नहीं रहा।

(लेखक एक जनबुद्धिजीवी हैं।)

ज्यादा सोने से याददाश्त जाने का खतरा

विजय गर्ग

यह बात तो जगजाहिर है कि नींद पूरी न होने से याददाश्त जाने का खतरा बढ़ सकता है, लेकिन अब वैज्ञानिकों ने पाया है कि बहुत ज्यादा नींद लेना भी इस मामले में उतना ही हानिकारक हो सकता है। शोध में पाया गया है कि नौ घंटे या उससे ज्यादा नींद लेने से याददाशत में गिरावट देखने को मिली है। यूनिवर्सिटी आफ टेक्सास हेल्थ साइंस सेंटर के वैज्ञानिकों ने अपने शोध में पाया कि लंबी नींद की अवधि याददाशत के लिए जोखिम कारक हो सकती है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, इस शोध में 27-85 वर्ष की उम्र के 1,853 स्वस्थ वयस्कों का चयन किया गया। यह देखने की कोशिश की गई कि उनकी नींद की अवधि उनके दिमाग को कैसे प्रभावित करती है। इसके बाद हर चार साल में प्रतिभागियों की याददाश्त, तर्कशक्ति और 'दृश्य - स्थानिक जागरूकता व प्रतिक्रिया के मानकों की जांच की गई। हर चार साल में प्रतिभागियों ने एक सर्वेक्षण में भी हिस्सा लिया। इसमें उन्होंने बताया कि वे हर रात कितने घंटे सोए। जांच और सर्वेक्षण से पता चला कि जो लोग दो दशक के अध्ययन के दौरान हर रात नौ या उससे ज्यादा घंटे सोए, उन्होंने चारों परीक्षणों में काफी खराब प्रदर्शन किया। शोध में इसी आधार पर लंबी नींद को

अल्जाइमर के बढ़ते जोखिम से भी जोड़ा गया है। अल्जाइमर रोग याददश्त का सबसे आम कारण है। यह रोग चिंता, भ्रम और अल्पकालिक स्मृति हानि का कारण बन सकता है। वैज्ञानिकों ने पाया कि सबसे खराब परिणाम उन लोगों में देखे गए जिनमें अवसाद के लक्षण दिखाई दिए और उनमें जो औसतन रात में नौ या उससे ज्यादा घंटे सोते थे। क्यों खतरनाक है ज्यादा सोना विशेषज्ञ पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हैं कि अत्यधिक नींद डिमेंशिया में कैसे योगदान दे सकती है। हालांकि स्वीडन के एक शोध ने सुझाव दिया है कि इसका कारण हमारे 'सर्कैडियन' लय पर पड़ने वाले प्रभाव में छिपा हो सकता है। सर्कैडियन लय यानी हमारे सोने और जागने का प्राकृतिक चक्रजो शरीर के कई कार्यों को निर्धारित करता है। स्टाकहोम में कैरोलिंस्का इंस्टीट्यूट के विशेषज्ञों ने तर्क दिया है कि दिन के समय सोने से दिमाग की दिन के दौरान जमा होने वाले अपशिष्ट को साफ करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है, लेकिन वैज्ञानिकों ने कहा कि यह भी संभव है कि शुरुआती अल्जाइमर के कारण होने वाली मस्तिष्क क्षति अत्यधिक नींद की आवश्यकता को बढ़ावा दे सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की मानें तो सभी वयस्कों को रात में कम से कम सात से आठ घंटे की गहरी नींद लेनी चाहिए, ताकि दिमाग दिनभर की जानकारी को अच्छी तरह से रख सके। अगर लोगों को पर्याप्त नींद नहीं मिलेगी तो इससे दिमाग की सेहत पर असर पड़ सकता है। तमाम शोध के आधार पर कहा जा सकता है कि अच्छी नींद दिमाग के लिए बेहद लाभकारी है और यह हमारी याददाश्त को तेज करने में मदद करती है। मालूम हो कि नींद के दौरान दिमाग सक्रिय रहता है, जिससे हम दिनभर की जानकारी को अच्छे से समझ और याद रख सकते हैं। मगर, जरूरत से ज्यादा नींद लेना हानिकारिक है।

(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब)

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

संचालिका जूही मेम ने अपने ट्यूशन मे कॉमर्स के सफल छात्र-छात्राओं के लिए एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। बी के ट्यूशन आर्टस एवं कॉमर्स क्लासेस तालवन्ना पीपल पेड़ के समीप कॉमर्स क्लासेज की संचालिका जूही मेम ने अपने ट्यूशन मे कॉमर्स के सफल छात्र-छात्राओं के लिए एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया.जहाँ कॉमर्स के छात्र-छात्राओं का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा. सभी छात्र छात्राए ने प्रथम श्रेणी से सफल रहा. वही ट्यूशन के संचालिका जूही मेम ने सभी सफल छात्र छात्राओं को मिठाई खिला कर बधाई दी.उन्होंने बताया की प्रत्येक वर्ष हमारे ट्यूशन से छात्र छात्राए प्रथम श्रेणी से सफल होते आ रहे हैं. उन्होंने बताया की इस वर्ष कॉमर्स में पियुष कुमार-374,धैर्य कुमार -333,प्रियंका कुपारी 327,कुणाल कुमार 318,इशिका राज 341नंदनी कुमारी-371 अंक लाया है.वही छात्र छात्राओं ने बताया की यह जूही मेम की मेहनत का ही परिणाम है कि जो हम लोगो को आज सफलता मिली है.क्योंकि मेम प्रत्येक सप्ताह हमलोगो का टेस्ट परीक्षा लेती रहती थी.वही छात्र छात्राओं ने अपनी सफलता के लिए माता पिता के साथ कॉमर्स क्लासेज की जूही मेंम एवं निदेशक डॉक्टर वीर कुमार केशरी को क्षेय दिया है.

टोटो और एंबुलेंस की टक्कर में कई लोग गंभीर रूप से हुए घायल हो गए

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। तालझारी थाना क्षेत्र अंतर्गत टोटो और एंबुलेंस की टक्कर में कई लोग गंभीर रूप से हुए घायल हो गए। मिली जानकारी के अनुसार घोगी करमपुरातो निवासी जेठ हेंब्रम की 35 वर्षीय पत्नी मारामोय सोरेन, सकरीगली बास्कोला निवासी छोटू ठाकुर की 42 वर्षीय पत्नी रीता देवी, घोगी करमपुरातो निवासी काधम हेंब्रम का 42 वर्षीय पुत्र जेठ हेंब्रम, सकरीगली बास्कोला निवासी तोपेन मंडल की 40 वर्षीय पत्नी नयन देवी, सभी टोटो से महाराजपुर हटिया करने के लिए जा रहा था तभी अचानक महाराजपुर डाक बंगला मस्जिद के पास सामने से आ रहे एंबुलेंस ने टक्कर मार दिया टक्कर लगते ही टोटो में बैठे सवारी, चालक सहित महाराजपुर मस्जिद के सामने गड्ढे में टोटो पलटी मार गया, जिससे बुरी तरह सभी लोग घायल हो गए। वही राहगीरों की मदद से आनन फानन में इलाज के लिए सभी को सदर अस्पताल साहिबगंज भेजा गया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों के द्वारा सभी घायलों का इलाज किया गया। वहीं घटना की सूचना संबंधित थाना पुलिस को दे दी गई थी।

डीसी ने किया करमपहाड़ चेक डैम एवं मोती झरना का निरीक्षण

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। जिला दंडाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती द्वारा करमपहाड़ स्थित चेक डैम का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने डैम की वर्तमान स्थिति, जल संरक्षण की व्यवस्था एवं उसके रखरखाव की समीक्षा की। डीसी ने संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि चेक डैम के माध्यम से ग्रामीणों को अधिक से अधिक लाभ मिले, इसके लिए ठोस योजना बनाकर क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। निरीक्षण के दौरान डीसी ने जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल मोती झरना का भी दौरा किया। उन्होंने पर्यटन की संभावनाओं को देखते हुए मोती झरना क्षेत्र के सौंदर्यीकरण, मूलभूत संरचना के विकास और जलप्रपात के आस-पास पर्यटक सुविधाओं की व्यवस्था हेतु विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने का निर्देश दिया। उन्होंने ज्योन्धार क्षेत्र का भी अवलोकन किया और संभावित निर्माण स्थलों का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। डीसी ने कहा कि जिले में पर्यटन विकास से न केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी।

बाइक वह ई रिक्शा में हुई टक्कर बाइक सवार घायल

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज -जिरवाबाडी थाना क्षेत्र अंतर्गत स्टेडियम रोड में शुक्रवार के रात्रि को ई रिक्शा व बाइक में भिड़ंत हो गया जिसमें बाइक सवार घायल हो गया घायल को सदर अस्पताल लाया गया बताया जा रहा है कि जिरवाबाडी थाना क्षेत्र अंतर्गत लोहंडा निवासी अवधेश पासवान 42 वर्षीय किसी काम को लेकर बाइक में सवार होकर स्टेडियम रोड के तरफ से जा रहा था उसी दौरान ई रिक्शा में टक्कर हो गई मिली जानकारी के अनुसार ई रिक्शा विपरीत दिशा से आ रहा था ई रिक्शा इस दौरान दोनों में टक्कर हो गई बरहाल घायल व्यक्ति अवधेश पासवान का इलाज सदर अस्पताल में डॉक्टर के देखरेख में किया गया घायल अवधेश पासवान के हाथ में गंभीर चोट लगी है।

आधार निगरानी समिति की समीक्षा बैठक आयोजित, उपायुक्त ने जल्द निष्पादन के दिए निर्देश

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में गोपनीय कार्यालय में आधार निगरानी समिति की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले में आ रही आधार से जुड़ी विभिन्न शिकायतों की समीक्षा की गई तथा इनके त्वरित निपटारे हेतु संबंधित पदाधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। उपायुक्त ने कहा कि आम जनता की सुविधाओं से जुड़ी आधार सेवाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने विशेष रूप से उन शिकायतों का जिक्र किया जिनमें आधार अपडेट, नाम सुधार, बायोमेट्रिक त्रुटि तथा विलंब से आधार जारी होने की बात सामने आई है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी लंबित मामलों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करें। पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि जिले में 08 प्रखंडों में आधार केन्द्र संचालित है। बैठक में जिले में संचालित आधार केन्द्रों की भी समीक्षा की गई। उपायुक्त ने कहा कि सभी केन्द्रों पर आधार पंजीकरण और अद्यतन कार्य मानकों के अनुरूप होना चाहिए। इस मौके पर जिला शिक्षा पदाधिकारी दुर्गानंद झा, जिला शिक्षा अधीक्षक कुमार हर्ष, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी चित्रा यादव, यूआईडी के परियोजना पदाधिकारी संदीप कुमार, तथा अग्रणी बैंक प्रबंधक सुधीर कुमार उपस्थित थे। सभी अधिकारियों ने अपने-अपने स्तर से आधार से जुड़ी गतिविधियों की प्रगति से उपायुक्त को अवगत कराया।

प्रखंड विकास पदाधिकारी ने किया संचालित योजनाओं का निरीक्षण

संवाददाता आदिवासी एक्सप्रेस

उपयुक्त साहिबगंज के निर्देश अनुसार शनिवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी बरहरवा के नेतृत्व में प्रखंड के कालू पंचायत में संचालित सभी प्रकार के योजनाओं की स्थलीय योजना की गई स्थल जांच के दौरान प्रखंड से आए हुए सभी विभागों के टीम ने आंगनवाड़ी, पीएचडी, आवास, मनरेगा, आईसीडीएस, शिक्षा ,स्वास्थ्य, आपूर्ति, तथा पेयजल से संबंधित योजनाओं की धरातल पर जांच करते हुए आम जनता से इसकी जानकारी लिया भ्रमण के दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी बरहरवा ने बताया कि, योजनाओं के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा आम जनता को योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए सरकार की संकल्पित है इसी के तहत प्रत्येक शनिवार को प्रखंड हस्तरीय आठ विभाग की टीम धरातल पर जाकर योजना की जांच करती है यह जांच उसी का एक कड़ी है7इस दौरान वीडियो के साथ कृष्णकांत प्रसाद, महेश उरांव, धनेश्वर शाह, मानिक चंद हेमराम, अरे नाम दिखाओ मोहम्मद अब्दुल्ला, लखन मुर्मू, योगेश मंडल, चंदन मुर्मू , अशोक दास, अमीरुल इस्लाम, तनवीरआलम, आदि उपस्थित थे.

जल मीनार खराब होने से धोबी टोला के ग्रामीण परेशान, पेयजल का संकट गहराया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

बरहरवा। प्रखंड के कोटालपोखर पंचायत स्थित धोबी टोला गांव में पिछले एक महीने से सोलर ऊर्जा से चलने वाली जल मीनार खराब पड़ी है, जिससे लगभग 60-70 परिवारों को पीने के पानी के लिए भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। लगभग दो हजार लीटर क्षमता वाली यह जल मीनार इन परिवारों के लिए पानी का एकमात्र मुख्य स्त्रोत थी।

ग्रामीणों ने बताया कि उन्होंने इस समस्या की सूचना स्थानीय पंचायत मुखिया को दी थी। मुखिया द्वारा जल्द ही इसे ठीक करवाने का आश्वासन भी दिया गया था, लेकिन एक महीना बीत जाने के बावजूद स्थिति जस की तस बनी हुई है। पानी की अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए ग्रामीणों को अब दूर स्थित कुओं पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

चिंता की बात यह है कि और कुओं का जलस्तर पहले ही काफी नीचे चला गया है। ग्रामीणों को डर है कि अगर कुएं सूख गए तो उन्हें पानी के गंभीर संकट से जूझना पड़ेगा।

यह जल मीनार, जो सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना का हिस्सा है और लाखों की लागत से बनी थी, अब अपनी बदहाली पर आंसू बहा रही है। दो साल पहले जब इसका निर्माण हुआ था, तो पूरे मोहल्ले में खुशी का माहौल था, लेकिन अब यह खुशी निराशा में तब्दील हो गई है।

ग्रामीणों ने जनप्रतिनिधियों और पेयजल एवं स्वच्छता विभाग से इस मामले पर तत्काल संज्ञान लेने की अपील की है। उनका कहना है कि अगर इस समस्या का जल्द समाधान नहीं किया गया तो भविष्य में स्थिति और भी विकट हो सकती है। ग्रामीणों को उम्मीद है कि प्रशासन उनकी परेशानी को समझेगा और इस खराब पड़ी जल मीनार की मरम्मत करवाकर उन्हें इस संकट से निजात दिलाएगा।

आकाशवाणी बिजली गिरने से एक बालक की हुई मौत

● आम चुनने के दौरान बिजली गिरी बालक हुआ गंभीर लाया सदर अस्पताल डॉक्टर ने किया अमृत घोषित

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। तालझारी थाना क्षेत्र के करमपुरातो गांव में आकाशवाणी बिजली गिरने से 11 वर्ष के बालक गंभीर हो गया गंभीर बालक को इलाज के लिए परिजनों ने शनिवार को साहिबगंज सदर अस्पताल में भर्ती कराया अस्पताल में चिकित्सक केशव कृष्णा के द्वारा बालक को मृत घोषित कर दिया गया बताया जा रहा है कि करमपुरातो गांव निवासी गंगा बारा 11 वर्षीय पुत्र रमेश बारा के ऊपर आकाशवाणी बिजली गिरने से मौत हो गई परिजनों ने बताया कि बालक बगीचे में आम चुनने के लिए गया था अचानक आकाशवाणी बिजली गिरने से गंभीर हो गया बालक जहां बालक के सिर पर व सीने पर चोट लगने से बालक गंभीर हो गया इसके बाद सदर अस्पताल में डॉक्टर केशव कृष्णा के द्वारा बालक को मृत घोषित कर दिया इधर परिजनों को रो-रो कर बुरा हाल है।

पुराना सदर अस्पताल परिसर में शनिवार को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। जिला स्वास्थ्य विभाग द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर पटेल चौक स्थित पुराना सदर अस्पताल परिसर में शनिवार को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सिविल सर्जन डॉ प्रवीण कुमार संथालिया, एमटीसी प्रभारी डॉ महमूद आलम, डॉ भारती कुमारी, आदि ने संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान सीएस ने कहा कि कोई भी नशा जीवन के लिए ठीक नहीं है। नशे की लत से सिर्फ जिंदगी ही नहीं बल्कि पूरे परिवार भी प्रभावित होता है। लोगों को भी तंबाकू छोड़ने के लिए अपील की गई। तभी हमारा समाज नशा मुक्त हो सकेगा। डॉ भारतीय कुमारी ने कहा कि तंबाकू सेहत के लिए हानिकारक है। इसे छोड़ने के लिए संकल्प लेने की अपील की है। डॉ महमूद आलम ने तंबाकू से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आप किसी प्रकार के नशा नहीं करेंगे तो ही आपके बच्चे भी इससे दूर रह सकेगा। इसके अलावा डॉ राजेश कुमार ने तंबाकू से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी है। उन्होंने कहा कि तंबाकू मुक्ति के लिए युवाओं को प्रेरित होने की जरूरत है। वही तंबाकू निषेध के लिए संकल्प लिया गया। मौके पर डैम अमित कुमार समेत, सहिया मौजूद थे।

महिला मंडल द्वारा एक नशा मुक्ति जन जागरूकता रैली निकाली गई

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर शनिवार को गायत्री परिवार की महिला मंडल द्वारा एक नशा मुक्ति जन जागरूकता रैली निकाली गई। धर्मराज कुमार और निरंजन भारती के द्वारा नशा न करना, मान लो कहना, प्यारे भाई बहना जैसे प्रेरक गीत गाकर रैली का शुभारंभ किया गया। शहर के चौधरी कॉलोनी चैती दुर्गा चौक पूर्वी रेलवे फाटक तक रैली निकाली गई। आकर्षक तख्ती पर नशा मुक्ति संबंधी प्रभावशाली स्लोगन लिखा सभी हाथ में थाम कर रैली में जोर दार नारा लगा रहे थे। मौके पर मौजूद मुख्य प्रबंध ट्रस्टी संजीत चौधरी ने बताया कि गायत्री परिवार द्वारा हर वर्ष की तरह इस बार भी विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर नशा उन्मूलंजन जागरूकता रैली निकाली गई। रैली में सविता कुमारी, करुणामई भारती, बिना चौधरी, रूबी देवी, प्रियंका सोनी, हेमलता कुमारी, सरिता पोद्दार, डा राधा मोहन, हरिहर प्रसाद मंडल, शिवशंकर, निराला, निरंजन भारती, आदि मौजूद थे।

राधानगर थाना में शनिवार को थाना दिवस का आयोजन किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज। उधवा राधानगर थाना में शनिवार को थाना दिवस का आयोजन किया गया। थाना दिवस में अपनी ज़मीन संबंधी समस्याओं को लेकर कई फ़रियादी पहुँचे। पुलिस प्रशासन ने उनकी शिकायतों को बेहद गंभीरता से सुना और जल्द समाधान का आश्वासन दिया। कुछ मामला न्यायालय में विचाराधीन व द्वितीय पक्ष के नही पहुंचने पर निष्पादन नही हो सका। पुलिस सूत्रों के अनुसार थाना दिवस में कुल आठ मामले सामने आए। इनमें से चार मामलों का मौके पर ही समाधान कर दिया गया, जिससे लोगों को तुरंत राहत मिली। दो मामले न्यायालय में विचाराधीन है।जबकि दो मामले में द्वितीय पक्ष के नही पहुंचने पर मामला निष्पादन नही हो सका। बीडीओ सह सीओ जयंत कुमार तिवारी ने बताया कि हर शनिवार को थाना दिवस का आयोजन किया जाएगा। ज़मीन संबंधी समस्याओं से जूझ रहे लोगों से अपील की है कि वे बेझिझक इन शिविरों में आएं, ताकि उनकी समस्याओं का त्वरित और प्रभावी समाधान किया जा सके। मौके पर थाना प्रभारी अमर कुमार मिंज, सीआई व थाना के अन्य पुलिसकर्मी भी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री को पत्र लिख कर्जन ग्राउंड का नाम बदलने का किया आग्रह

● आदरणीय गुरु जी (शिबू सोरेन) के नाम पर किया जाए कर्जन ग्राउंड का नामः चंदन सिंह

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। झारखंड मुक्ति मोर्चा के चंदन सिंह ने प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर एक महत्वपूर्ण मांग रखा है।पत्र में चंदन सिंह ने हजारीबाग स्थित कर्जन ग्राउंड जो की एक अंग्रेज़ अधिकारी के नाम पर है का नाम आदरणीय गुरु जी (शिबू सोरेन) पूर्व मुख्यमंत्री झारखंड सह झारखंड के जनक के नाम पर किए जाने का आग्रह किया है। गुरु जी, शिबू सोरेन ने झारखंड के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने झारखंड के लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और राज्य के विकास के लिए काम किया। उनके योगदान को देखते हुए, लगता है कि कर्जन ग्राउंड का नाम उनके नाम पर करना उचित होगा ऐसी बात चंदन सिंह ने पत्र में लिखा है। मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में चंदन सिंह ने उम्मीद जताया है कि इस मांग पर विचार कर और कर्जन ग्राउंड का नाम गुरु जी (शिबू सोरेन) के नाम पर करने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। पत्र उपायुक्त के ज़रिए मुख्यमंत्री को भेजा गया है।

पत्रकार पर हमले के मामले में पुलिस की त्वरित कार्रवाई, दो आरोपी गिरफ्तार

आदिवासी एक्सप्रेस/ अजय कुमार कुशवाहा

बरहरवा। कोटालपोखर थाना क्षेत्र में पत्रकार ओम प्रकाश साहा के साथ हुई मारपीट की घटना में पुलिस ने तेजी से कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। इस कार्रवाई को लेकर बरहरवा प्रेस क्लब और पत्रकार समुदाय ने बरहरवा अनुमंडल पुलिस की सराहना की है। घटना 25 मई (रविवार) की है, जब ट्रक चालक, खलासी और कुछ असामाजिक तत्व एक व्यक्ति से मारपीट कर रहे थे। पत्रकार ओम प्रकाश साहा ने मानवता के नाते बीच-बचाव की कोशिश की, लेकिन हमलावरों ने उन पर भी हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया।

एसडीपीओ ने दिए थे 24 घंटे में गिरफ्तारी के निर्देश

मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीपीओ नितिन खंडेलवाल ने कोटालपोखर थाना प्रभारी चंदन भैया और केस के अनुसंधानकर्ता को 24 घंटे के भीतर आरोपियों की गिरफ्तारी के स्पष्ट निर्देश दिए थे। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में किसी भी प्रकार की अराजकता बर्दाश्त नहीं की जाएगी और पत्रकारों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है।

दो आरोपी गिरफ्तार, प्रेस क्लब ने जताया आभार

बरहरवा अनुमंडल पुलिस की त्वरित कार्रवाई के तहत 31 मई को दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। इस पर बरहरवा प्रेस क्लब और समस्त पत्रकारों ने एसडीपीओ नितिन खंडेलवाल और कोटालपोखर थाना पुलिस का आभार प्रकट करते हुए कार्रवाई की सराहना की है। पत्रकारों ने आशा जताई कि शेष आरोपियों की भी शीघ्र गिरफ्तारी कर सभी दोषियों को सख्त सजा दिलाई जाएगी।

संक्षिप्त समाचार

सीमेंट व्यापारी की बेटी साक्षी गुप्ता बनी स्टेट टॉपर, विज्ञान में पाई चौथी रैंक

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह जिले की साक्षी गुप्ता ने इंटरमीडिएट की विज्ञान संकाय परीक्षा में 473 अंक हासिल कर राज्य में चौथा और जिले में पहला स्थान प्राप्त किया है। छोटकी खारगडीहा की रहने वाली साक्षी ने उत्क्रमित प्लस टू हाई स्कूल से पढ़ाई की है। उनके पिता दिनेश कुमार सीमेंट और छड़ के व्यापारी हैं, जबकि मां गृहिणी हैं। साक्षी की इस सफलता पर पूरे क्षेत्र में खुशी का माहौल है और लोग उन्हें मिठाई खिलाकर बधाइयाँ दे रहे हैं। साक्षी का सपना है कि वह यूपीएससी पास कर आईएएस बने और देश व समाज की सेवा करे।

जमीन विवाद को लेकर हत्या

जमुआ, प्रतिनिधि। जमुआ थाना क्षेत्र के धोथो पंचायत अंतर्गत कारोडीह निवासी कार्तिक दास (65) की हत्या शनिवार देर शाम में जमीन संबंधी विवाद के कारण कर दी गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना शाम पौने सात बजे की बताई जा रही है। मृतक के पुत्र लक्ष्मण प्रसाद दास ने बताया कि उनके घर के पास की जमीन से संबंधित विवाद को लेकर उसके चचेरे भाई देवनन्दन दास, रामकृष्ण दास, पूरन दास आदि ने मिलकर उनके पिता पर रड़, कुदाल और लाठी से जानलेवा हमला कर दिया। सर पर गहरी चोट लगने के कारण उसके पिता वहीं बेहोश होकर गिर पड़े । इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जमुआ लाने पर चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर जमुआ पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर देर रात को पोस्टमार्टम के लिए गिरिडीह भेज दिया है। लक्ष्मण प्रसाद दास के बयान पर प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई में पुलिस जुट गई है। मृतक के परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। परिजनों के चीत्कार से अस्पताल परिसर गमगीन हो गया।

बिना मूलभूत सुविधाओं के नये भवन में स्थानांतरित हुआ आंगनबाड़ी केंद्र

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

पलामू। ज़िले के छतरपुर नगर पंचायत अंतर्गत भैरवाडीह स्थित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 530 को किराए के भवन से हटाकर इसके अपने नए भवन में स्थानांतरित कर दिया गया। नए भवन का उद्घाटन सुपरवाइजर मनीषा गुप्ता एवं सेविका चांदनी देवी की मौजूदगी में मालती देवी द्वारा फीता काटकर किया गया। इस अवसर पर सहायिका लकेश्वरी देवी, प्रमिला देवी, लीला देवी, दिलीप कुमार, राजेश कुमार, मिथलेश,अमित कुमार, बीरेंद्र यादव, मोनू कुमार समेत कई ग्रामीण उपस्थित रहे।हालांकि,भवन शिफ्टिंग को लेकर ग्रामीणों ने नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि जिस उद्देश्य से आंगनबाड़ी केंद्र को नए भवन में शिफ्ट किया गया है,वह अधूरा है। नए भवन में न तो पीने योग्य पानी की व्यवस्था है, न ही बच्चों और कर्मचारियों के लिए जो शौचालय बनाया गया है उसमे में दरवाजा भी फिट नही किया गया है न ही पानी की व्यवस्था किया जिससे बच्चों की सुरक्षा एवं निजता पर सवाल खड़े हो रहे हैं।ग्रामीणों ने यह भी सवाल उठाया है कि आखिरकार बिना मूलभूत सुविधाओं के बच्चों के लिए आंगनबाड़ी केंद्र का संचालन कैसे संभव है? इस संबंध में सीडीपीओ शिला कुमारी से दूरभाष के माध्यम से संपर्क करना चाहा तो उन्होंने कॉल रिसीव नहीं किया। यह सीडीपीओ एवं स्थानीय प्रशासन की गंभीर लापरवाही को दर्शाता है।जनहित से जुड़ी इस समस्या को लेकर ग्रामीणों ने संबंधित विभाग से मांग की है कि जल्द से जल्द पेयजल, शौचालय और अन्य आवश्यक सुविधाओं को बहाल किया जाए, ताकि बच्चों को सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण में शिक्षा और पोषण मिल सके।

सुशीगंज गांव में पूर्व शराब बंदी का ग्रामीणों ने लिया निर्णय,1 जून से गांव में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा, प्रशासन को ज्ञापन सौंपा गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

पलामू। जिले के छत्तरपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत सुशीगंज गांव में शनिवार दोपहर करीब 1 बजे ग्रामसभा की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें गांव में पूर्ण शराबबंदी लागू करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। बैठक में गांव के बुजुर्ग, महिला, पुरुष और युवाओं ने एकमत होकर कहा कि अब गांव में शराब बनाना, पीना और बेचना पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। ग्रामसभा में वक्ताओं ने कहा कि शराब के सेवन के कारण गांव में आए दिन झगड़े, सड़क दुर्घटनाएं और घरेलू हिंसा जैसी घटनाएं बढ़ती जा रही थीं साथ ही युवाओं के बीच नशे की लत बढ़ रही थी, जिससे उनका भविष्य अंधकारमय हो रहा था। इन सभी समस्याओं को देखते हुए ग्रामीणों ने शराबबंदी लागू करने का फैसला ऐतिहासिक निर्णय लिया है। इसके लिए ग्रामीणों ने क्षेत्र में जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को अवगत कराया गया। साथ ही सभी ग्रामीणों ने ओपी थाना प्रभारी लठेया को ज्ञापन सौंप कर उपरोक्त बातों से अवगत कराया है और जनहित के लिए पूर्ण शराबबंदी में प्रशासन से सहयोग का अपील किया गया है।

जिला उपायुक्त रामनिवास यादव की अध्यक्षता में सभी जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ समन्वय सह समीक्षा बैठक आयोजित, दिए गए जरूरी दिशा-निर्देश

- पारदर्शिता एवं सुनियोजित तरीके से उक्त सभी योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करें तथा शत-प्रतिशत लाभुकों को लाभान्वित करना सुनिश्चित किया जाए: उपायुक्त रामनिवास यादव
- विकास कार्य प्रभावित न हो, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं लाभुको को लाभान्वित करने में लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी: उपायुक्त
- उपायुक्त ने सभी संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की निरीक्षण करने के निर्देश दिए

शुभम सौरभ

गिरिडीह, विशेष प्रतिनिधि। गिरिडीह समाहरणालय सभागार में जिला उपायुक्त रामनिवास यादव की अध्यक्षता में सभी जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ समन्वय सह समीक्षा बैठक का आयोजन किया। उपायुक्त ने विभिन्न विभागों अंतर्गत किए जा रहे कार्यों से संबंधित पूर्व में किए गए बैठक में दिए गए दिशा-निर्देशों की समीक्षा करते हुए कार्य प्रगति की जानकारी प्राप्त की तथा योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते हुए लंबित कार्य को जल्द से जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न विकासात्मक योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा करते हुए सभी संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप शत-प्रतिशत प्रगति सुनिश्चित करने का सख्त निर्देश दिया गया। बैठक में उपायुक्त ने राजस्व, परिशोधन पोर्टल, पीजी पोर्टल, सीपी ग्राम्स, ई

रेवेन्यू कोर्ट, इंटर डिपार्टमेंट एंड लैंड ट्रांसफर के तहत श्रम विभाग, ऊर्जा विभाग, कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग के लिए भूमि संबंधी समस्याओं, मनरेगा के तहत कार्यान्वित योजनाओं में अबुआ आवास, लेबर इंगेजमेंट, बिरसा हरित ग्राम योजना, बिरसा हरित सिंचाई कूप संवर्धन योजना, पौधारोपण, वीर शहीद पोटो हो खेल विकास योजना, डोभा, पीएम आवास, पीएम जनमन समेत विभिन्न विकासात्मक योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उपायुक्त ने सभी संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की निरीक्षण करने के निर्देश दिए। वहीं उपायुक्त ने विभिन्न विभागों अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर आपसी समन्वय स्थापित करते हुए संबंधित विभाग से सम्पर्क स्थापित कर कार्य करने की बात कही। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने सभी विभागों को सख्त निर्देश दिया कि विकास कार्य प्रभावित न हो, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं लाभुको को लाभान्वित करने में लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सभी विभाग आपसी समन्वय स्थापित करते हुए योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाएं एवं प्रगति सुनिश्चित करें।

लंबित म्यूटेशन का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करें: उपायुक्त

बैठक में राजस्व संबंधी विभिन्न योजनाओं की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने लंबित म्यूटेशन के मामलों को जल्द से जल्द निपटारा करने का निर्देश सभी अंचलाधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि म्यूटेशन में आ रही टेक्निकल समस्याओं को दूर करते हुए म्यूटेशन के लक्ष्यों को पूरा करें। इसके अलावा इंटर डिपार्टमेंट एंड लैंड ट्रांसफर के तहत श्रम विभाग, ऊर्जा विभाग, कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग के लिए भूमि संबंधी समस्याओं का त्वरित निराकरण करने का निर्देश दिया गया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने कहा कि सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में पूरी पारदर्शिता बरतें ताकि सुनियोजित तरीके से लोगों को इसका लाभ मिल सकें।

विकास कार्य प्रभावित न हो, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं लाभुको को लाभान्वित करने में लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी: उपायुक्त

समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने मनरेगा के तहत कार्यान्वित योजनाओं में अबुआ आवास योजना, बिरसा हरित ग्राम योजना, सिंचाई संवर्धन कूप योजना, डोभा निर्माण, वीर शाहिद पोटो हो खेल विकास योजना समेत विभिन्न योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा की। समीक्षा के क्रम में उन्होंने कहा जमीनी स्तर पर सभी योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित कराएं तथा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रगति सुनिश्चित करें। उपायुक्त ने पीडी जेनेरन, पौधारोपण, डोभ निर्माण आदि योजनाओं में धीमी प्रगति पर नाराजगी जताई तथा सभी प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी को प्रतिदिन अनुश्रवण करते हुए शत-प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने का निर्देश दिया।

इनकी रही मौजूदगी

बैठक में उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी, गिरिडीह, अनुमंडल पदाधिकारी, खोरीमहुआ, निदेशक डीआरडीए, जिला आपूर्ति पदाधिकारी समेत सभी जिला स्तरीय पदाधिकारी, सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता, सभी कार्यपालक अभियंता, सभी बीपीओ, सभी रोजगार सेवक समेत अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

गिरिडीह: वीर हिंदू, विजेता हिंदू और फर्स्ट हिंदू के नारे के साथ संपन्न हुआ अंतराष्ट्रीय हिंदू परिषद का प्रान्त प्रशिक्षण शिविर

- युवाओं को शारीरिक रूप से मजबूत बनने का दिया गया प्रशिक्षण

गिरिडीह, प्रतिनिधि। शहर के बरगंडा स्थित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में आयोजित अंतराष्ट्रीय हिंदू परिषद के गिरिडीह शाखा का आठ दिवसीय प्रान्त प्रशिक्षण का समापन रविवार वीर हिंदू, विजेता हिंदू और फर्स्ट हिंदू के नारों के साथ हुआ। कार्यक्रम में अंतराष्ट्रीय हिंदू परिषद के प्रान्त पदाधिकारी सह अधिवक्ता नित्यानंद प्रसाद, मुरारी मिश्रा, दिलीप वैध, कन्हैया लाल जी, रविशंकर पांडेय, अश्वनी भदानी, प्रो विनीता कुमारी बतौर अतिथि शामिल हुई। वही प्रशिक्षक के रूप मे शुभम

झा, देव जी और गौरव कुमार थे। इस मौके पर युवाओं ने शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन करने के साथ ही लाठिया भांजी। इस दौरान युवाओं ने सूर्य प्रणाम के साथ शारीरिक चुस्ती से जुडा व्यायाम भी दिखाया। मौके पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं को संबोधित करते हुए अतिथियों ने कहा कि फर्स्ट हिंदू, वीर हिंदू और विजेता हिंदू का नारा देने का कारण है अब भी भारत में सनातन को कमजोर किया जा रहा है। सनातन और भारतीय संस्कृति से जुड़े युवा किसी के द्वारा संस्कृती का अपमान करने पर विरोध करते है तो उनकी हत्या कर दी जाती है। ऐसे में इन युवाओ को संस्कृति की रक्षा के लिए शारीरिक रूप से मजबूत बनाने के उद्देश्य से युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

जमुआ: लंगटा बाबा इंटर कॉलेज मिर्जागंज में 12वीं की विज्ञान संकाय में रूपा कुमारी 89.2 प्रतिशत के साथ स्कूल टॉपर बनी

जमुआ, प्रतिनिधि। जमुआ प्रखंड अंतर्गत लंगटा बाबा इंटर कॉलेज मिर्जागंज ने जैक दसवीं विज्ञान संकाय में फिर से उत्कृष्टता का परचम लहराया है। वर्ष 2024-25 के परीक्षा परिणाम में विद्यालय के विद्यार्थियों ने सफलता हासिल की। विज्ञान में विद्यालय की रूपा कुमारी 89.2 प्रतिशत अंक लाकर प्रथम स्थान पाया। सचिन कुमार 84 प्रतिशत अंकों के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। सिद्धार्थ कुमार गुप्ता 83.8 प्रतिशत अंक पाकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। राहुल मोदी 80.6 प्रतिशत अंक और सत्यम कुमार गुप्ता 79.6प्रतिशत अंक हासिल किया। वाणिज्य में विद्यालय का मो फैजान रजा 77.4 प्रतिशत अंक, मुस्ताक अंसारी 76.6 प्रतिशत अंक, रोहित कुमार यादव 66.2 प्रतिशत अंक, शंकर कुमार वर्मा 58.5 प्रतिशत अंक, गणेश कुमार दास 55.4 प्रतिशत अंक हासिल किया।विद्यार्थियों की सफलता मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और माता-पिता के आशीर्वाद का नतीजा है। विद्यालय के प्राचार्य निर्मल कुमार राय और प्रधान लिपिक विकास कुमार विद्यार्थी एवं शिक्षकों ने इस उपलब्धि पर खुशी जताई। उन्होंने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रशासन ने कहा कि यह सफलता न केवल विद्यालय, बल्कि प्रखंड का भी नाम रोशन करने वाली है।

जैक 12वीं रिजल्ट: फिजिक्स वर्ल्ड के छात्रों का जलवा, सोनम यादव बनीं गिरिडीह की सेकेंड टॉपर और स्टेट की छठी रैंक होल्डर

संस्थान का रहा 100 प्रतिशत रिजल्ट, संचालक सद्दाम सर ने दी बधाई

गिरिडीह, प्रतिनिधि। झारखंड एकेडमिक काउंसिल (जैक) द्वारा 12वीं का रिजल्ट जारी होते ही जिले में खुशी की लहर दौड़ गई है। खासकर बरगंडा चौक स्थित फिजिक्स वर्ल्ड कोचिंग संस्थान के लिए यह दिन बेहद खास रहा, क्योंकि यहां के छात्रों ने इस बार भी शानदार प्रदर्शन करते हुए संस्थान का परचम लहराया है। कोचिंग का रिजल्ट 100 प्रतिशत रहा है, जबकि यहां की होनहार छात्रा सोनम यादव ने गिरिडीह जिले में सेकेंड टॉपर बनने का गौरव हासिल किया है। सोनम ने 500 में से 471 अंक हासिल कर 94.2 प्रतिशत स्कोर किया है। इसके साथ ही वह राज्य स्तर पर छठी रैंक प्राप्त करने वाली छात्रा भी बनी हैं। सोनम की इस उपलब्धि पर कोचिंग संस्थान में जश्न का माहौल है। कोचिंग के संचालक सद्दाम सर ने

छात्रा की सफलता पर खुशी जताते हुए कहा, सोनम शुरू से ही अनुशासित और मेहनती रही हैं। उनकी लगन और मेहनत का ही नतीजा है कि आज उन्होंने जिले और राज्य में अपनी पहचान बनाई है। हमें उन पर गर्व है। सोनम की सफलता से न केवल फिजिक्स वर्ल्ड (सद्दाम सर) का नाम रोशन हुआ है, बल्कि उनके माता-पिता और पूरे जिले को भी गर्व की अनुभूति हुई है। बताते चलें कि फिजिक्स वर्ल्ड कोचिंग संस्थान पिछले 11 वर्षों से गिरिडीह में संचालित हो रहा है और हर साल जिले व राज्य स्तर पर टॉपर छात्र देने के लिए जाना जाता है।

संस्थान के इस 100 प्रतिशत सफलता दर ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि कड़ी मेहनत, समर्पण और बेहतर मार्गदर्शन के साथ कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। रिजल्ट के बाद संस्थान में छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के बीच उत्साह का माहौल देखा गया।

लक्ष्य कोचिंग सेंटर चोरपहरा के छात्र अनुज कुमार यादव ने 12वीं साइंस परीक्षा 2025में किया कोचिंग टॉपर

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता: लालू कुमार यादव

हुसैनाबाद, पलामू। हुसैनाबाद प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत सुदूरवर्ती गांव महुडंड पंचायत अंतर्गत चोरपहरा में लक्ष्य कोचिंग सेंटर चोरपहरा के छात्र छात्राओं ने उम्दा प्रदर्शन किया है। सीमित संसाधनों के वावजूद अच्छा प्रदर्शन रहा है। अनुज कुमार यादव विज्ञान संकाल में 428 अंक प्राप्त कर 85.6% कर पहले स्थान पर रहा। रिंकी कुमारी यादव,428 अंक प्राप्त कर 85.6% कर संयुक्त रूप से प्रथम स्थान पाया है। रंजन कुमार देहाती ने 422 अंक प्राप्त 84.4% ला कर दूसरे स्थान प्राप्त किया है। सुगन कुमारी यादव 375अंक प्राप्त किया75% अंक प्राप्त किए हैं। लक्ष्य कोचिंग सेंटर चोरपहरा के निदेशक ने बताया कि शिक्षण संस्थान में छात्र/छात्राओं ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है। उन्हें उज्ज्वल भविष्य कि कमानाएं करते हैं और कोचिंग सेंटर चोरपहरा के साथ शाहिद भगत सिंह महा विद्यालय जपला का योगदान अहम भूमिका रहा है। उन्होंने छात्र छात्राओं को को सम्पूर्ण शिक्षा के लिए उच्च शिक्षा में नामांकन कराने का निर्देश दिया है। साथ ही प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारियां शुरू करने का निर्देश दिया है।

जिले के विभिन्न प्रखंडों में प्रतिनियुक्ति जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पैरा लीगल वॉलिंटियर्स के द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस के विषय में कार्यक्रम का आयोजन

गिरिडीह, प्रतिनिधि। झालसा रांची के निर्देशानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह (प्रभार) के आदेशानुसार एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह (प्रभार)के नेतृत्व में शनिवार को सदर अस्पताल एवं वही दूसरी ओर जिले के विभिन्न प्रखंडों तथा पंचायत में प्रतिनियुक्ति जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पैरा लीगल वॉलिंटियर्स के द्वारा भी विश्व तंबाकू निषेध दिवस के विषय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सिविल सर्जन ने बताया कि साल 1987 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सदस्य देशों ने एक प्रस्ताव द्वारा 31 मई 1988 में शुरुआत की गई। जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध सप्ताह में, जो 25 मई से आरंभ होता है, धूम्रपान उद्योग, स्वास्थ्य के लक्ष्यों को व्यावहारिक होने की दिशा में रुकावट, धूम्रपान उद्योग के मुक़ाबले में धार्मिक मान्यताएं, तंबाकू को

रोकना सबकी ज़िम्मेदारी, धूम्रपान के विस्तार के मुक़ाबले में विधि पालिका, न्याय पालिका और कार्यपालिका की ज़िम्मेदारी और अंततः तंबाकू की अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियों को बंद किया जाये जैसे विषयों की समीक्षा की जाती है ताकि इस मार्ग से धूम्रपान के सेवन में कमी और आम जनमत के स्वास्थ्य में वृद्धि की दिशा में महत्त्वपूर्ण क़दम उठाया जा सके। %विश्व तम्बाकू निषेध दिवस अथवा अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस प्रत्येक वर्ष 31 मई को मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के सदस्य देशों ने 31 मई का दिन निर्धारित करके धूम्रपान के सेवन से होने वाली हानियों और ख़तरों से विश्व जनमत को अवगत कराके इसके उत्पाद एवं सेवन को कम करने की दिशा में आधारभूत कार्रवाई करने का प्रयास किया है। इसी दिशा में प्रतिवर्ष प्रतीकात्मक रूप में एक नारा निर्धारित किया जाता हैं। पैनल अधिवक्ता विपिन कुमार यादव बताया कि इस दिन विभिन्न कार्यक्रम कर लोगों को तम्बाकू से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नुक़सान के बारे में बताया जाता है। हालांकि भारत में भी सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर पाबंदी है। इसका मक़सद तम्बाकू नियंत्रण क़ानून के प्रभावी क्रियान्वयन और तम्बाकू के हानिकारक प्रभावों के बारे में लोगों तक जागरूकता फैलाना है। कार्यक्रम में पैनल अधिवक्ता गीतेश चंद्रा ने बताया कि साल 1987 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सदस्य देशों ने एक प्रस्ताव द्वारा 7 अप्रैल 1988 से विश्व तम्बाकू निषेध दिवस मनाने का फ़ैसला किया। 31मई 1988 उद्देश्यअंतर्राष्ट्रीय धूम्रपान निषेध सप्ताह में, जो 25 मई से आरंभ होता है, धूम्रपान उद्योग, स्वास्थ्य के लक्ष्यों को व्यावहारिक होने की दिशा में रुकावट, धूम्रपान उद्योग के मुक़ाबले में धार्मिक मान्यताएं, धूम्रपान को रोकना सबकी ज़िम्मेदारी, धूम्रपान के विस्तार के मुक़ाबले में विधि पालिका, न्याय पालिका और कार्यपालिका की ज़िम्मेदारी और अंततः धूम्रपान की अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियों को बंद किया जाये जैसे विषयों की समीक्षा की जाती है ताकि इस मार्ग से धूम्रपान के सेवन में कमी और आम जनमत के स्वास्थ्य में वृद्धि की दिशा में महत्त्वपूर्ण क़दम उठाया जा सके। अन्य जानकारीस्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक़ तम्बाकू या सिगरेट का सेवन करने वालों को मुंह का कैंसर की होने की आशंका 50 गुना ज़्यादा होती है। तम्बाकू में 25 ऐसे तत्व होते हैं जो कैंसर का कारण बन सकते है।इस दिन विभिन्न कार्यक्रम कर लोगों को तम्बाकू से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नुक़सान के बारे में बताया जाता है। इसका मक़सद तम्बाकू नियंत्रण क़ानून के प्रभावी क्रियान्वयन और तम्बाकू के हानिकारक प्रभावों के बारे में लोगों तक जागरूकता फैलाना है। कार्यक्रम में लीगल एंड डिफेंस काउंसिल के सभी सदस्य ने अपने-अपने विचार रखें। वहीं दूसरी ओर जिले के विभिन्न विधिक सहायता केंद्रों में धूम्रपान निषेध कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मजदूरों को धूम्रपान से होने वाले बीमारियों के बारे में भी जानकारी दी गई है। कार्यक्रम को सफल बनाने में पी एल बी दिलीप कुमार, अशोक कुमार वर्मा, कामेश्वर कुमार,शालिनी प्रिया, संतोष कुमार, सुनील कुमार, जूही जूली सोरेन की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

संक्षिप्त समाचार

पत्नी के साथ गलत संबंध बनाने का विरोध करने पर पति के साथ युवक ने की मारपीट

सं, सू पंकज कुमार ठाकुर।
चांदन (बांका) थाना क्षेत्र के एक गांव में एक महिला के साथ गांव के ही एक युवक द्वारा गलत संबंध बनाने का विरोध करने पर महिला के साथ मिलकर आरोपी युवक द्वारा उसके मूक बधिर पति के साथ मारपीट करने और जान से मार देने की धमकी देने का मामला सामने आया है।इस मामले मे महिला के मूक बधिर पति ने अपनी पत्नी और आरोपी युवक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने और अपने तथा अपनी बूढ़ी माँ की जान माल की सुरक्षा की पुलिस से गुहार लगाया है।जानकारी के अनुसार आरोपी युवक अनिल मंडल पिता नूनबाबू मंडल शुक्रवार की देर रात्रि खिड़की को तोड़कर घर मे घुसा और महिला के साथ गलत संबंध बनाने लगा।नींद खुलते ही मूक बधिर पति द्वारा शोर-शराबा करने पर महिला और युवक ने मिलकर उसके साथ मारपीट की और जान से मार देने की धमकी देते हुए घर से भाग निकला।इस संबंध में थानाध्यक्ष विष्णुदेव कुमार ने बताया कि मामले की जाँच की जा रही है ।घटना की प्राथमिकी दर्ज कर ली जाएगी।

कोविड 19 को लेकर सीएचसी चांदन में मॉक ड्रिल

सं, सू पंकज कुमार ठाकुर।
चांदन(बांका) देश के कई राज्यों में कोविड 19 संक्रमण के नए मामले सामने आने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने राज्य के सभी अस्पतालों को सतर्क कर दिया है।इसी क्रम में आज शनिवार दोपहर को सीएचसी चांदन में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. आशीष कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि स्वास्थ्य विभाग के निर्देश के आलोक में कोविड 19 संक्रमण की संभावित स्थिति से निपटने की तैयारियों को जांचने परखने को लेकर सीएचसी चांदन में मॉक ड्रिल की गई।इस दौरान सभी स्वास्थ्यकर्मियों को अलर्ट रहने तथा संक्रमण से बचाव के लिए दिशा-निर्देशों का पालन करने को कहा गया गया है। साथ ही उन्होंने कहा कि संक्रमण की रोकथाम के लिए समय रहते तैयारी आवश्यक है।ताकि किसी भी आपात स्थिति में प्रभावी ढंग से बचाव किया जा सके।मौके पर डॉ0 रजनीश कुमार, एएनएम इंदु कुमारी,शिखा चौधरी,एंबुलेंस सहायक साधु यादव,अमित कुमार,स्वास्थ्य प्रबंधक परशुराम सिंह,बीसीएम संजय कुमार,वपिंटू कुमार, लक्ष्मण कापरी सहित सभी स्वास्थ्य कर्मी कर्मी मौजूद थे।

65% आरक्षण को लेकर धरना प्रदर्शन रंजीत यादव

संवाददाता श्रीकान्त यादव
65%तक आरक्षण की माँग को लेकर रंजीत यादव ने बताया की बिहार में सामाजिक न्याय, समान अवसर और पिछड़े वर्गों को सशक्त करने से जुड़ा हुआ है।
65% आरक्षण की माँग को लेकर वीरचंद पटेल पथ पटना में शांति पूर्ण धरना-प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि वर्तमान आरक्षण नीति उनके समाज के साथ न्याय नहीं करती और उन्हें समुचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पा रहा है।
प्रदर्शन के दौरान रंजीत यादव ने कहा कि जब तक सरकार उनकी माँगों को नहीं मानती, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि अगर जल्द ही ठोस कदम नहीं उठाए गए तो वे आंदोलन को और तेज करेंगे।
65% आरक्षण हटा कर बिहार के लोगों के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हक का गला घोंट दिया गया
नीतीश कुमार और NDA सरकार ने 65%आरक्षण की व्यवस्था को हटाकर यह साबित कर दिया कि उनकी प्राथमिकता जनता नहीं, सत्ता है.
बिहार के अतिपिछड़ा को 25%, दलित को 20% आदिवासी 2त्नपिछड़ा 18% और वंचित तबकों के युवाओं को जो थोड़ा बहुत सहारा मिला था उसे भी छिन लिया गया।
इस दौरान आरक्षण हमारा हक है, 65% आरक्षण लागू करो जैसे नारों से वातावरण गूंज उठा।

संत जेवियर्स कॉलेज के बीएड विभाग द्वारा व्याख्यान का आयोजन

संवाददाता द्वारा
राँची। संत जेवियर्स कॉलेज, राँची के शिक्षा विभाग ने क्षितीश मूक-बधिरविद्यालय, निवारणपुर, राँची के साथ 29 मई 2025 को एक महत्वपूर्ण समझौते (MOU) पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके पश्चात दिनांक 31 मई 2025 को ÷सांकेतिक भाषा के माध्यम से विशेष विद्यार्थियों (श्रवण एवं वाक्बाधित) को शिक्षित करना÷ विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत भाषण, दीप प्रज्वलन, और अतिथियों का अभिनंदन के साथ हुआ। प्रोफेसर पंकज कुमार ने मुख्य अतिथियों का परिचय कराया। विभागाध्यक्ष डॉ. फ्लोरेंस पूर्ती ने अपने स्वागत भाषण में सभी का अभिवादन किया।
इसके बाद क्षितीश मूक-बधिर विद्यालय, निवारणपुर, राँची के प्रधानाचार्य, अनिल कुमार लाल ने अपने व्याख्यान में बताया कि राष्ट्र स्तर पर विकलांग के इक्कीस प्रकारों को चार वर्ग समूहों में बांटा गया है और इसका विस्तार से वर्णन किया। इसके बाद उन्होंने सांकेतिक भाषा के उद्भव, अर्थ एवं प्रकारों का विस्तारपूर्वक चर्चा की।
इसके बाद द्वितीय व्याख्यान सत्र में क्षितीश मूक-बधिर विद्यालय, वरिष्ठ शिक्षक रविशंकर झा ने मूकबधिर बालकों के संप्रेषण के लिए प्रयुक्त सांकेतिक भाषा का व्यवहारिक अनुप्रयोग कर आज के व्याख्यान को सार्थक एवं विशेष बनाया।
इस कार्यक्रम के माध्यम से भावी प्रशिक्षु शिक्षकों ने सांकेतिक भाषा के विभिन्न आयामों को व्यवहारिक रूप से देखा और सीखा, जिससे वे भविष्य में समावेशी विद्यालयों में एक आदर्श एवं उपयुक्त दक्ष शिक्षक के रूप में सेवा प्रदान कर सकेंगे।
कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. अनुपमाभार्गव, डॉ. निलीमा ज्योत्सना टोप्पो, डॉ. नंदिता पाण्डे, डॉ. सुधांशु सिरिल कुजूर, सुधा रानी खलखो, पंकज कुमार, जगबन्धु महतो, डॉ. विक्रम बहादुर नाग, कविता तोपनो, रूमा भट्टाचार्य व शिल्पा किंडो उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ किया गया। यह आयोजन शिक्षा में समावेशन के प्रति जागरूकता फैलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

चटकपुर गांव के लिए ऐतिहासिक दिन, सेंट थॉमस चर्च का उद्घाटन

संवाददाता द्वारा
राँची। 30 मई, 2025 को, गोठगांव पल्ली के चटकपुर गांव में सेंट थॉमस चर्च के उद्घाटन और आशीर्वाद के साथ एक महत्वपूर्ण अवसर देखा गया। समारोह में श्रद्धेय बिशप थियोडोर मस्कारेनहास, एस एफ एक्स, डाल्टनगंज धर्मप्रान्त के बिशप की उपस्थिति ने शोभा बढ़ाई, जिन्होंने नए चर्च की आशीष की।
दिन की शुरुआत बिशप मस्कारेनहास द्वारा मनाए गए पवित्र मिस्सा से हुई। अपने धर्मोपदेश में, बिशप ने जीवन में प्रगति के लिए सुसमाचार फैलाने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने विश्वासियों को दूसरों के साथ प्रेम और मुक्ति का संदेश साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया, उनके जीवन में सुसमाचार प्रचार के महत्व पर प्रकाश डाला।
समारोह के लिएफादर मौरिस टोप्पो पल्ली पुरोहित, होली फैमिली चर्च, गोठगांव फादर बलबीर टोप्पो सहायक पुजारी फादर जुएल कुजूर ,फादर मनोरंजन कच्छप, फादर संतोष एक्का, भाई बीरबल कुजूर, भाई अजीत कुजूर, रविकांत, होली क्रॉस कांग्रेगेशन की धर्म बहनें और 2 मदर टेरेसा बहनें और पैरिश और आस-पास के इलाकों से बड़ी संख्या में समर्पित कैथोलिकों ने समारोह में भाग लिया, और अपने विश्वास के प्रति अपने उत्साह और प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का महत्व सेंट थॉमस चर्च का उद्घाटन चटकपुर गांव के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। नया चर्च एक आध्यात्मिक केंद्र के रूप में काम करेगा, जो विश्वासियों को इकट्ठा होने, पूजा करने और भगवान के प्रति अपनी भक्ति में बढ़ने के लिए एक पवित्र स्थान प्रदान करेगा। यह कार्यक्रम ग्रामीणों के जीवन में विश्वास और समुदाय के महत्व को रेखांकित करता है। चटकपुर के सेंट थॉमस चर्च की आशीष और उद्घाटन स्थानीय समुदाय के अटूट विश्वास और समर्पण का प्रमाण है। जैसा कि बिशप मस्कारेनहास ने जोर दिया, आध्यात्मिक विकास और प्रगति के लिए खुशखबरी का प्रसार महत्वपूर्ण है। नया चर्च निस्संदेह चटकपुर और आसपास के क्षेत्रों में लोगों की आस्था को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

एचआरडीएस इंडिया की एस एस स्नेहा ने एशियन चैंपियनशिप में जीता रजत पदक

- टोक्यो विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भी किया क्वालिफाई
- अकैडमी को मिला पहला अंतरराष्ट्रीय पदक, 2036 ओलंपिक लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

नई दिल्ली / केरल, (आरएनएस)। एचआरडीएस इंडिया स्पोर्ट्स अकैडमी ने अपनी प्रतिभावान एथलीट एस एस स्नेहा की एक ऐतिहासिक उपलब्धि की घोषणा की है। दक्षिण कोरिया में हाल ही में आयोजित एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 4×100 मीटर रिले स्पर्धा में स्नेहा ने रजत पदक जीतकर अकैडमी के लिए पहला अंतरराष्ट्रीय पदक हासिल किया है। यह सफलता न केवल स्नेहा की व्यक्तिगत मेहनत का नतीजा है, बल्कि अकैडमी की खेल प्रशिक्षण प्रणाली की प्रभावशीलता को भी दर्शाती है।
भारतीय महिला रिले टीम की प्रमुख सदस्य के रूप में स्नेहा ने अहम भूमिका निभाते हुए यह उपलब्धि हासिल की। उनका प्रदर्शन प्रतिबद्धता, अनुशासन और कठोर प्रशिक्षण का प्रतीक है, जिसने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करने योग्य बनाया।बयह पदक एचआरडीएस इंडिया के संस्थापक सचिव की दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता का भी प्रमाण है, जो वर्षों से आदिवासी और वंचित समुदायों से आने वाली खेल प्रतिभाओं को अवसर और मंच देने का कार्य कर रहे हैं। अकैडमी का उद्देश्य इन युवाओं को पेशेवर स्तर की सुविधा और प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें 2036 ओलंपिक में भारत के लिए पदक जीतने योग्य बनाना है। स्नेहा की इस उपलब्धि के साथ ही उन्होंने टोक्यो, जापान में होने वाली आगामी विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए भी क्वालिफाई कर लिया है। यह उनकी खेल यात्रा में एक अहम मोड़ है और एचआरडीएस इंडिया के प्रशिक्षण ढांचे की सफलता का प्रतीक भी । इस अवसर पर एचआरडीएस इंडिया के संस्थापक सचिव ने कहा कि ÷यह रजत पदक सिर्फ व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि हमारे उस मिशन की पुष्टि है, जिसके तहत हम भारत के दूरदराज़ इलाकों से उभरती खेल प्रतिभाओं को विश्व स्तर पर पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। स्नेहा की सफलता से यह स्पष्ट होता है कि सही दिशा, समर्थन और संसाधन मिलने पर कोई भी खिलाड़ी दुनिया के मंच पर चमक सकता है। एचआरडीएस इंडिया के कोच, स्टाफ और समर्थकों ने स्नेहा को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई दी है। उनकी यात्रा, एक साधारण पृष्ठभूमि से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंच तक, देश के युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बन गई है। यह सफलता इस बात की गवाही देती है कि कठिन परिश्रम और लगन से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।
अब जब स्नेहा विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप की तैयारी कर रही हैं, एचआरडीएस इंडिया यह सुनिश्चित करने में जुटा है कि उन्हें और अन्य खिलाड़ियों को सर्वोत्तम प्रशिक्षण, सुविधाएं और मार्गदर्शन मिलते रहें। अकैडमी का उद्देश्य भारतीय एथलेटिक्स को वैश्विक मंच पर नई ऊंचाइयों तक ले जाना है।

ज्योतिषाचार्य डॉ. शेष नारायण वाजपेयी की भविष्यवाणी हुई सत्य

- प्रधानमंत्री कार्यालय को भेजे गए ईमेल में 1 से 19 मई के बीच कोविड-19 मामलों में वृद्धि की दी थी चेतावनी

नई दिल्ली, (आरएनएस)। ज्योतिषाचार्य डॉ. शेष नारायण वाजपेयी द्वारा 4 मार्च 2025 को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) को भेजे गए एक ईमेल में 1 मई से 19 मई 2025 के बीच कोविड-19 मामलों में तीव्र वृद्धि की आशंका व्यक्त की गई थी, जो अब सत्य सिद्ध हो गई है। अपने विश्लेषण में उन्होंने प्राकृतिक परिवर्तनों और पर्यावरणीय संकेतों के आधार पर यह भविष्यवाणी की थी कि देश में महामारीजनित संक्रमण की नई लहर आ सकती है। डॉ. वाजपेयी ने अपने ईमेल में स्पष्ट रूप से लिखा था, 1 मई 2025 से महामारीजनित संक्रमण अत्यंत तीव्र रूप से बढ़ना प्रारंभ कर देगा। संभवतः यह कोरोना महामारी की तरह ही अत्यंत भयंकर रूप धारण करे। प्रधानमंत्री कार्यालय को भेजे गए ईमेल में उन्होंने यह भी उल्लेख किया था कि 17 सितंबर 2024 से ही ऐसे संकेत मिलने लगे थे जो किसी बड़े स्वास्थ्य संकट की ओर इशारा कर रहे थे। उन्होंने सरकार से अपील की थी कि वह समय रहते सतर्कता बरतते हुए एहतियाती कदम उठाए। इससे पहले भी 2019- 20 जब करोना महामारी आई थी, डॉ. शेष नारायण वाजपेयी ने प्रधानमंत्री कार्यालय को मेल भेज कर इसे लेकर आगाह किया था, और उनके द्वारा की गई भविष्यवाणियाँ सच सावित हुई थीं। अब जबकि 1 से 30 मई के बीच देश में कोविड-19 मामलों में तेज़ी से वृद्धि हुई है, यह भविष्यवाणी विशेष रूप से उल्लेखनीय हो गई है, और इसके जरिए ज्योतिषाचार्य डॉ. शेष नारायण वाजपेयी ने सरकार से आग्रह किया है कि भविष्य में ऐसी पूर्व चेतावनियों को गंभीरता से लिया जाए ताकि समय रहते जनता के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सके।

श्रुत पंचमी पर्व पर जिनवाणी की अमरता को किया गया नमन

- ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को मनाया गया पवित्र जिनवाणी दिवस

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। दिगम्बर जैन पंचायत हजारीबाग द्वारा श्रुत पंचमी, जिसे जिनवाणी दिवस के नाम से जाना जाता है, श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाया गया। यह पर्व उस ऐतिहासिक दिन की स्मृति में मनाया जाता है जब आचार्य धरसेन महाराज के निर्देशन में षट्खंडागम ग्रंथ की लिपिबद्ध रचना पूर्ण हुई जो जैन आगम साहित्य का मूल स्तंभ मानी जाती है। प्राचीन काल में जैन धर्म का समस्त ज्ञान मौखिक रूप से आचार्यों से शिष्यों को प्रदान किया जाता था। लेकिन समय के साथ स्मृति, बुद्धि और धारणा शक्ति में संभावित ह्रास को ध्यान में रखते हुए आचार्य धरसेन ने यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि इस दिव्य ज्ञान को लिपिबद्ध किया जाना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस शुद्ध जिनवाणी से लाभान्वित हो सकें। उन्होंने गिरनार पर्वत स्थित चंद्गुफा से श्री नरवाहन मुनि और श्री सुबुद्धि मुनि को षट्खंडागम का ज्ञान प्रदान किया। बाद में इन्हीं मुनियों को भूतबलि और पुष्पदंत नामों से ख्याति प्राप्त हुई।
षट्खंडागम पवित्र ग्रंथ में छह खंड हैं:
जीवस्थान, खुद्दाबंध, बंधस्वामित्व वेदनाखंड, वर्गणाखंड और महाबंध।
इस ग्रंथ का आरंभ पवित्र णमोकार मंत्र से होता है, जो इसे आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करता है।
श्रुत पंचमी के अवसर पर नगर के दोनों जैन मंदिरों में विशेष पूजन, स्वाध्याय, और जिनवाणी वंदना के कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्रद्धालुओं ने शास्त्र पूजन कर जिनवाणी माता को नमन किया। देश भर में अनेक जगहों पर विद्वानों ने षट्खंडागम के महत्व पर प्रवचन दिए और जिनवाणी के संरक्षण का आह्वान किया। आज जैन पंचायत हजारीबाग के लोगों ने आचार्य धरसेन और अन्य मुनियों के इस अतुलनीय योगदान के लिए कृतज्ञता व्यक्त की और संकल्प लिया कि वे जिनवाणी की रक्षा, प्रचार और संवर्धन में तन-मन-धन से योगदान देंगे।
श्रुत पंचमी केवल एक पर्व नहीं, अपितु जिनवाणी की अमरता, आचार्य परंपरा की दूरदृष्टि और शुद्ध ज्ञान की स्थायित्व का प्रतीक है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि धर्म की रक्षा केवल पूजा से नहीं, अपितु ज्ञान के संरक्षण से होती है।
जानकारी मीडिया प्रभारी राजेश लुहाड़िया द्वारा प्राप्त हुई।

मुखिया ने महुडंड से रतनाग तक सड़क निर्माण की मांग, सांसद ने दिया आश्वासन

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाताः लालू कुमार यादव
हुसैनाबाद, पलामू। हुसैनाबाद प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत महुडंड की मुखिया मिना देवी ने पलामू के सांसद विष्णु दयाल राम से मुलाकात कर महुडंड से रतनाग तक लगभग 3 किलोमीटर लंबी सड़क निर्माण की मांग रखी। मुखिया मिना देवी ने सांसद को बताया कि यह सड़क लंबे समय से जर्जर स्थिति में है, जिससे ग्रामीणों को आवागमन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सड़क के बन जाने से न केवल स्थानीय लोगों को सुविधा होगी, बल्कि आपात स्थिति में चिकित्सा, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच भी सुगम होगी।
सांसद विष्णु दयाल राम ने उनकी बातों को गंभीरता से लेते हुए आश्वासन दिया कि इस सड़क निर्माण की मांग को वे प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाएंगे और शीघ्र ही इसके लिए आवश्यक कार्रवाई करेंगे। इस अवसर पर महुडंड पंचायत के कई समाजसेवी व स्थानीय नेता भी उपस्थित रहे। इनमें समाजसेवी सह मुखिया पति शिव शंकर यादव, भाजपा नेता धर्मदेव यादव, जितेंद्र यादव और उपेंद्र यादव प्रमुख रूप से शामिल थे। सभी ने एक स्वर में सड़क निर्माण की मांग को दोहराया और सांसद से शीघ्र पहल की अपील की। ग्रामीणों को अब उम्मीद है कि यह सड़क जल्द ही स्वीकृत होकर निर्माण की दिशा में आगे बढ़ेगी, जिससे क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी।

ऑल पत्रकार एसोसिएशन यमुनापार ने मनाया हिन्दी पत्रकारिता दिवस और सम्मान समारोह

पत्रकारों क़ो अपने हक़ की आवाज़ अपने आप बुलंद करनी होंगी : जावेद रहमानी

नई दिल्ली (अनवार अहमद नूर)
नई दिल्ली के गालिब इंस्टिट्यूट (एवान ए ग़ालिब)में हिंदी पत्रकारिता दिवस के मौके पर ऑल पत्रकार एसोसिएशन यमुनापार दिल्ली ने पत्रकार सम्मान समारोह में बड़ी संख्या में हस्तियाँ शामिल हुईं द्य मुख्य अतिथि के तौर पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित जितेंद्र कुमार शंटी व वरिष्ठ अतिथि के रूप मे हरियाणा सरकार के सचिवालय मे कार्यरत आई ए एस अधिकारी रानी नागर, जर्नलिस्ट टुडे अखबार के संपादक जावेद रहमानी, वेबवार्ता न्यूज़ एजेंसी के संपादक सईद अहमद, सुप्रीम कोर्ट मे कार्यरत व सीमा हैदर के वकील डॉ ए पी सिंह दिल्ली नगर निगम की स्थाई समिति के सदस्य आमिल मलिक, मुबीटेक पे के सी ई ओ जितेंद्र शर्मा, पूर्व डिप्टी डायरेक्टर सफदरजंग हॉस्पिटल डॉ सय्यद अहमद खान शामिल हुए द्य अतिथि के तौर पर भाजपा नेता अनीस अंसारी, एम बी एंड डोफीन सिक्योरिटी के डायरेक्टर महावीर शर्मा, हाईकोर्ट से मिस हिना परवीन, कड़कड्डूमा कोर्ट से रेनू शर्मा, भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ के अध्यक्ष अनिल कुमार, भारतीय सम्पूर्ण क्रांति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह, एच एन सिंह एडवोकेट आदि शामिल हुए । समारोह का आयोजन लोकतंत्र का पाया (मीडिया समूह) के संपादक शमशाद अली मसूदी, जन सेवा क्रांति फाउंडेशन के अध्यक्ष मोहतरमा हुस्ना हाशमी,डोफीन मीडिया के प्रोड्यूसर जावेद आलम, एम के एस 24 न्यूज़ के सम्पादक नौशाद अंसारी ने मिलकर किया द्य प्रोग्राम क़ो सफल बनाने में विचार आप तक के सम्पादक आरिफ खान, पत्रकार रूबी न्यूटन, पत्रकार रानी खान मीडिया काउंसिल से मौलाना अब्दुल रशीद, शाहिद खान तहसीनी, पत्रकार अरुण कुमार का अहम योगदान रहा। मुख्य अतिथि जितेंद्र कुमार शंटी ने कहा कि देश की आज़ादी मे पत्रकारों का अहम योगदान रहा हैद्य उन्होंने कि आज भी मीडिया सरकार और विपक्ष क़ो जगाने का काम कर रही, गोदी मीडिया क़ो छोड़कर। संयोजक शमशाद अली मसूदी ने कहा कि राज्य और भारत सरकार के बजट मे मीडिया का कोई बजट नहीं होता है पत्रकारों के लिए कोई सुविधा नहीं मिलती द्य दिल्ली मे बसों मे सीट रिजर्व नहीं है इसी तरह अस्पातलो और रेलवे स्टेशनो मे पत्रकारों के लिए अलग खिड़की नहीं है इसी तरह पेशन, इन्सोरेंस, हैल्थ और शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है द्य इन पर हम सब क़ो काम करना होगा द्य आमिल मलिक ने कहा कि दिल्ली राज्य और भारत सरकार क़ो चिट्ठी लिखकर पत्रकारों की आवाज क़ो बुलंद करने का काम करूंगा। डायरेक्टर जर्नलिज्म टुडे जावेद रहमानी ने कहा कि हिन्दी पत्रकारिता दिवस क़ो इस तरह से मनाना, इस बात का सन्देश है कि गोदी मीडिया की समाज को ज़रूरत नहीं है आज मुझे लगा कि पत्रकारों क़ो अपने हक़ की आवाज़ अपने आप बुलंद करनी होंगी।
इस मोके पर सलीम इदरीशी, गुलजार, जान मोहम्मद, नफीस सलमानी, इरशाद सैफी, बागपत से विपुल जैन, विवेक जैन, इमरान अंसारी, मो रफ़ी, इल्मा,इरशाद अली, मकसूद राही, फारुख मंसूरी, संजीव कुमार, शाहबुद्दीन, अनवार अहमद नूर, मो राहत उर्फ़ राजू,अहमद कुरैशी, मो रियाज़, एस आई मो आलम, गायक रितु गुप्ता, मतलूब अंसारी, विभव किशोर, मो इस्तयाक, गुलफाम सैफी, इरफ़ान सैफी, साजिद जमाल,इशरक सागर, निशा खान, मो शाहनवाज, गुलनार परवीन, आयशा खातून, हाफिज मामून, युवा रत्न शायर आमिर मेरठी, सलमान थानवी, पत्रकार रजा मिर्जा,नईम खान, मो यूनुस सैफी, शमशाद सैफी, प्रदीप कुमार, मो फैसल आदि शामिल हुए।

खराब मौसम ने खेल बिगाड़ा : एनएमपीए इंडियन ओपन ऑफ सर्फिंग के उद्घाटन दिवस पर प्रतियोगिता स्थगित

एजेंसी

मंगलुरु। छठवें एनएमपीए इंडियन ओपन ऑफ सर्फिंग के पहले दिन की सभी प्रतियोगिताएं रद्द कर दी गईं। तन्निरभवी ईको बीच पर आयोजित इस राष्ट्रीय सर्फिंग प्रतियोगिता की शुरुआत भारी बारिश और समुद्र में खतरनाक हालात के कारण नहीं हो सकी। अरब सागर में चक्रवातीय गतिविधियों और मानसून के समय से पहले आगमन के चलते समुद्र में ऊंची लहरें और अनियमित वेव पैटर्न देखे गए, जिससे सर्फिंग के लिए स्थितियां असुरक्षित हो गईं। आयोजकों, सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया, मंत्रा सर्फ क्लब और सर्फिंग स्वामी फाउंडेशन ने सावधानी बरतते हुए दिन की सभी प्रतियोगिताएं स्थगित करने का निर्णय लिया। तीन दिवसीय यह प्रमुख सर्फिंग प्रतियोगिता 2025 की नेशनल सर्फिंग चैंपियनशिप सीरीज़ का दूसरा चरण है, जिसका आयोजन सर्फिंग स्वामी फाउंडेशन द्वारा किया जा रहा है और मंत्रा सर्फ क्लब इसकी मेजबानी कर रहा है। यह आयोजन सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के अधीन हो रहा है। इस सप्ताह की शुरुआत में मौसम विभाग के चेतावनी के अनुसार प्रतियोगिता स्थल को ससिहित्थलु बीच से तन्निरभवी ईको बीच स्थानांतरित कर दिया गया था। हालांकि, मौसम में सुधार नहीं हुआ और लगातार बारिश ने पहले दिन के सभी मुकाबलों को बाधित कर दिया।

चिकमंगलूर में भारतीय राष्ट्रीय टीएसडी रैली चैम्पियनशिप (4डब्ल्यू) 2025 के सीज़न-ओपनिंग क्वालीफायर के लिए रिकॉर्ड 130 एन्ट्री

चिकमंगलूर। कर्नाटक की कॉफी पहाड़ियों में एक बार फिर मोटरस्पोर्ट्स का रोमांच लौट आया है क्योंकि 31 मई और 1 जून को आयोजित होने जा रही रैली ऑफ चिकमंगलूर के साथ एफएमएससीआई इंडियन नेशनल टाइम स्पीड डिस्टेंस रैली चैंपियनशिप (4डब्ल्यू) 2025 का सीज़न शुरू हो रहा है। मोटर स्पोर्ट्स क्लब ऑफ चिकमंगलूर (एमएससीसी) द्वारा आयोजित और जेके टायर मोटरस्पोर्ट के सहयोग तथा वम्सी मेरला स्पोर्ट्स फाउंडेशन के सह-प्रायोजन में आयोजित यह साउथ ज़ोन का पहला राउंड है, जो चिकमंगलूर की खूबसूरत लेकिन चुनौतीपूर्ण टारमार्क सड़कों पर ड्राइवरों और नेविगेटरों की तकनीकी दक्षता और मानसिक मजबूती की परीक्षा लेगा। एक्शन की शुरुआत 31 मई को शाम 4:30 बजे (16:30 बजे आईएसटी) सिग्नेचर अपार्टमेंट, के.एम. रोड, एपीएमसी के पास, चिकमंगलूर से सेरेमोनियल स्टार्ट के साथ होगी। रैली लेग 2 का आरंभ अगले दिन सुबह 7:00 बजे (1 जून) होगा, जिसमें प्रतिभागी लगभग 210 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। कार्यक्रम का समापन उसी स्थल पर 1 जून को दोपहर 2:00 बजे (14:00 बजे आईएसटी) पुरस्कार वितरण समारोह के साथ किया जाएगा।

एपीजीसी जूनियर चैंपियनशिप: रणवीर और कृष लड़कों की टीम स्पर्धा में पांचवें स्थान पर

हांगकांग। भारतीय गोल्फरों रणवीर मित्रो और कृष चावला ने एशिया-पैसिफिक गोल्फ कन्फेडरेशन (एपीजीसी) जूनियर चैंपियनशिप के दौरान हांगकांग गोल्फ क्लब में लड़कों की टीम स्पर्धा में कुल चार ओवर 430 के स्कोर के साथ पांचवां स्थान प्राप्त किया। चीनी जोड़ी जिन हेंग यान और जिन हान ने चार-अंडर 422 के कुल स्कोर के साथ लड़कों की टीम स्पर्धा का खिताब जीता। बारिश के मौसम ने कम स्कोर बनाना मुश्किल बना दिया, लेकिन रणवीर ने टूर्नामेंट में अपने शानदार प्रदर्शन को जारी रखते हुए तीसरे और अंतिम राउंड में दो ओवर 73 का स्कोर जमा किया और व्यक्तिगत स्पर्धा में छठा स्थान हासिल किया। उनका कुल स्कोर दो-अंडर 211 रहा, जो भारतीय गोल्फ यूनियन (आईजीयू) द्वारा भेजी गई चार-सदस्यीय टीम में सबसे अच्छा था। कृष ने कुल छह ओवर 219 के स्कोर के साथ 22वां स्थान प्राप्त किया। न्यूज़ीलैंड के कूपर मूर ने तीन-दिवसीय नौ-अंडर 204 के कुल स्कोर के साथ लड़कों की व्यक्तिगत स्पर्धा का खिताब अपने नाम किया जबकि वियतनाम के तुआन अन्ह गुयेन दूसरे स्थान पर रहे। रणवीर ने कहा कि यह टूर्नामेंट उनके लिए एक 'अमूल्य सीखने का अनुभव' रहा और इससे उन्हें अपनी ताकत और सुधार के क्षेत्रों को समझने में मदद मिली।

लोनाटो वर्ल्ड कप के लिए 12 सदस्यीय शॉटगन टीम की घोषणा, रायज़ा ढिल्लों और अनंतजीत की वापसी

नई दिल्ल,। पेरिस ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके स्कीट शूटर रायज़ा ढिल्लों और अनंतजीत सिंह नरूका एक बार फिर राष्ट्रीय टीम का हिस्सा होंगे। नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) की चयन समिति ने उन्हें उस 12 सदस्यीय शॉटगन टीम में शामिल किया है। दोनों खिलाड़ी 4 से 14 जुलाई 2025 के बीच इटली के लोनाटो डेल गर्डा में होने वाले इस साल के चौथे और अंतिम इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (आईएसएसएफ) वर्ल्ड कप स्टेज में हिस्सा लेंगी। इस महीने की शुरुआत में निकोसिया में हुए तीसरे शॉटगन वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों में से, जहाँ भारत ने नए ओलंपिक इवेंट-ट्रैप मिक्स्ड टीम-में अपना पहला आईएसएसएफ पदक (कांस्य) जीता, केवल अनुभवी मीराज अहमद खान (पुरुष स्कीट) और महेश्वरी चौहान (महिला स्कीट) ही अपनी जगह बनाए रखने में सफल रहे हैं।

मुंबई सिटी ने बिपिन सिंह के सम्मान में जर्सी नंबर 29 को रिटायर करने का किया फैसला

एजेंसी

मुंबई। मुंबई सिटी एफसी ने पुष्टि की है कि विंगर बिपिन सिंह का क्लब के साथ अनुबंध 31 मई 2025 को समाप्त हो गया है और वह अब टीम का हिस्सा नहीं रहेंगे। क्लब ने उनके अमूल्य योगदान को सम्मानित करते हुए उनकी जर्सी नंबर 29 को हमेशा के लिए रिटायर करने का फैसला किया है। मणिपुर से ताल्लुक रखने वाले बिपिन सिंह ने 2018 में शिलॉन्ग लाजोंग और एटीके जैसे क्लबों में खेलकर अनुभव हासिल करने के बाद मुंबई सिटी से जुड़ाव बनाया था। इसके बाद वह क्लब के इतिहास के सबसे अहम खिलाड़ियों में से एक बन गए। बिपिन ने मुंबई सिटी के साथ रहते हुए दो बार इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) कप और दो बार लीग शील्ड अपने नाम की। उन्होंने क्लब के लिए कई अहम मौकों पर निर्णायक प्रदर्शन किए। बिपिन सिंह 2020-21 के ऐतिहासिक सीजन में टीम के अहम सदस्य थे, जब मुंबई

सिटी एफसी आईएसएल इतिहास में पहली बार कप और शील्ड दोनों जीतने वाली टीम बनी। फाइनल में एटीके मोहन बागान के खिलाफ उनका विजयी गोल आईएसएल के इतिहास में सबसे यादगार पलों में गिना जाता है। बिपिन ने 2023-24 में दूसरा आईएसएल कप भी अपने नाम किया। फाइनल में एक और शानदार गोल दागकर टीम को जीत दिलाई। 2022-23 में टीम के लीग शील्ड जीतने वाले दल का भी वह हिस्सा रहे। बिपिन सिंह ने 158 मैचों में 28 गोल किए और इस तरह वह मुंबई सिटी एफसी के इतिहास में सबसे ज़्यादा मैच खेलने वाले खिलाड़ी बन गए। बिपिन ने भावुक विदाई संदेश में कहा, अलविदा कहना आसान नहीं है, लेकिन मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूं। मुंबई सिटी पिछले सात सालों में मेरा घर रहा है और इस क्लब ने मुझे सब कुछ दिया। फैंस, साथियों, स्टाफ और हर उस व्यक्ति का शुक्रिया जो इस सफर का हिस्सा रहा। मुंबई सिटी हमेशा मेरे दिल में रहेगा। मुंबई सिटी के सीईओ कंदर्प चंद्रा ने कहा, 'बिपिन का सफर मुंबई सिटी के साथ बेहद खास रहा है। उन्होंने मैदान पर और बाहर दोनों जगह अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है। उनका फैनबेस से जुड़ाव और क्लब के लिए उनकी प्रतिबद्धता अतुलनीय रही है।

वर्ल्ड बॉक्सिंग: सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले बॉक्सरों के लिए अनिवार्य होगी जेंडर टेस्टिंग

एजेंसी

नई दिल्ली। वर्ल्ड बॉक्सिंग ने घोषणा की कि वह अपने सभी टूर्नामेंट्स में भाग लेने वाले पुरुष और महिला खिलाड़ियों के लिए अनिवार्य जेंडर टेस्टिंग (लिंग परीक्षण) लागू करेगा। अंतरराष्ट्रीय बॉक्सिंग महासंघ ने यह फैसला उस विवाद के बाद लिया है, जो पिछले साल पेरिस ओलंपिक में अल्जीरिया की महिला गोल्ड मेडलिस्ट इमान खलीफ समेत कुछ खिलाड़ियों को लेकर हुआ था। वर्ल्ड बॉक्सिंग ने कहा कि उसने अल्जीरियाई बॉक्सिंग फेडरेशन को सूचित कर दिया है कि अगर इमाने खलीफ नीदरलैंड्स में 5 से 10 जून के बीच होने वाले आइंधोवन बॉक्स कप में हिस्सा लेना चाहती हैं, तो उन्हें पहले लिंग परीक्षण से गुजरना होगा। वर्ल्ड बॉक्सिंग ने अपने बयान में कहा,वर्ल्ड बॉक्सिंग ने अल्जीरियाई बॉक्सिंग फेडरेशन को पत्र लिखकर सूचित किया है कि इमान खलीफ को तब तक महिला

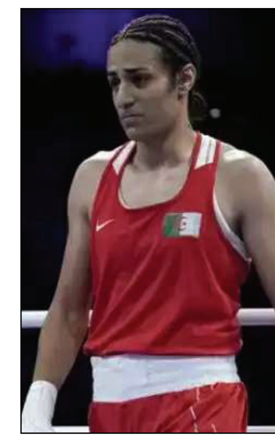

वर्ग में आइंधोवन बॉक्स कप या किसी भी वर्ल्ड बॉक्सिंग इवेंट में हिस्सा लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी, जब तक वह जेंडर टेस्ट नहीं करवा लेतीं।गौरतलब है कि वर्ल्ड बॉक्सिंग 2028 में लॉस एंजेलिस में होने वाले ओलंपिक खेलों में बॉक्सिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन करेगा।

बंगाल प्रो टी20 लीग: सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स ने सीजन 2 के लिए किया पुरुष टीम का ऐलान

एजेंसी

कोलकाता। सर्वोटेक सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स ने जून में होने वाले बंगाल प्रो टी20 लीग सीजन 2 के लिए हाल ही में आयोजित खिलाड़ियों के ड्राफ्ट के बाद एक मजबूत पुरुष टीम की घोषणा की है। टीम प्रबंधन ने 7 टेस्ट मैच खेलने वाले व आखिरी सीजन में भी टीम के मार्की खिलाड़ी रहे आकाश दीप को बरकरार रखा है।

हाल ही में सर्वोटेक स्पोर्ट्स से मेंटर के रूप में जुड़े अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज रिद्धिमान साहा ने एक आधिकारिक बयान में कहा, ÷हमने अनुभवी खिलाड़ियों और उभरती प्रतिभाओं के संयोजन से एक संतुलित टीम तैयार की है। इस अनुभव और युवा जोश का मिश्रण हमें हर परिस्थिति में ढलने और पूरे आत्मविश्वास से मुकाबला करने की क्षमता प्रदान करता है।टीम संयोजन पर विश्वास जताते हुए सर्वोटेक स्पोर्ट्स के निदेशक ऋषभ भाटिया ने कहा, हमने ऐसी टीम चुनी है जो चुनौतियों का सामना करते हुए दबाव में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकती है। मुझे विश्वास है कि यह टीम एक शानदार प्रतिस्पर्धी बनकर उभरेगी और हमें गर्व महसूस कराएगी। पूरे उत्तर बंगाल की खेल भावना को समेटे सर्वोटेक सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, कूचबिहार, अलीपुरद्वार और कालिम्पोंग जिलों का प्रतिनिधित्व करती है। सीजन 1 में मजबूत नींव रखने के बाद, फ्रेंचाइजी का मकसद इस वर्ष अपने प्रदर्शन को और ऊंचाई पर ले जाने का है। बंगाल प्रो टी20 लीग सीजन 2 की पुरुष प्रतियोगिताएं 11 जून से ईडन गार्डन्स में शुरू होंगी, जिसमें पिछले सीजन की संयुक्त विजेता टीमें सोबिस्को स्मैशर्स मालदा और मुर्शिदाबाद किंग्स रात 8 बजे

आमने-सामने होंगी। सेमीफाइनल मुकाबले 26 जून को ईडन गार्डन्स में डबल-हेडर के रूप में खेले जाएंगे, जिनका समय दोपहर 1 बजे और रात 7 बजे होगा, जबकि फाइनल मुकाबला 28 जून को शाम 7 बजे से संपन्न होगा। वहीं महिला लीग की शुरुआत 12 जून को डबल-हेडर मुकाबलों के साथ होगी। पिछले सीज़न की उपविजेता मुर्शिदाबाद कुइन्स सुबह 9 बजे हार्बर डायमंड्स से भिड़ेगी। इसके बाद दोपहर 1:30 बजे गत विजेता लक्स श्याम कोलकाता टाइगर्स का मुकाबला सर्वोटेक सिलीगुड़ी स्ट्राइकर्स से होगा।

फ्रेंच ओपन 2025: स्वियातेक चौथे राउंड में पहुंचीं, राइबाकिना और पाओलिनी ने भी किया शानदार प्रदर्शन

एजेंसी

पेरिस। मौजूदा चैंपियन इगा स्वियातेक ने फ्रेंच ओपन 2025 के चौथे राउंड में अपनी जगह पक्की कर ली है। पोलैंड की पांचवीं वरीयता प्राप्त खिलाड़ी ने रोमानिया की जैक्वेलिन क्रिस्टियन को 6-2, 7-5 से हराकर अगले दौर में प्रवेश किया। छठे दिन पेरिस की गर्मी ने खिलाड़ियों की परीक्षा जरूर ली, लेकिन स्वियातेक ने पहले सेट में बेहतरीन खेल दिखाते हुए दो ब्रेक की मदद से 6-2 से जीत हासिल की। उन्होंने इस सेट के बाद खुद को बर्फीले टॉवल से ठंडक पहुंचाई और पूरी तरह से तैयार दिखीं।दूसरे सेट में क्रिस्टियन ने बेहतरीन टक्कर दी और 4-4 की बराबरी तक मैच को ले गईं। कोर्ट सुसान लैंग्लेन पर खेला गया यह मुकाबला दोनों खिलाड़ियों के दमदार शॉट्स से भरपूर रहा। स्वियातेक ने 12वें गेम में तीन ड्यूस के बाद अपने अनुभव का फायदा उठाते हुए सेट और मैच दोनों अपने नाम किया।स्वियातेक ने कहा, मैं खुश हूं कि आखिरी गेम में मैं बेहद सॉलिड रही और कोई फ्री पॉइंट नहीं दिया। यह एक शानदार मुकाबला था और हम दोनों ने अच्छा खेल दिखाया।

राइबाकिना की दमदार जीत

कजाखस्तान की 12वीं वरीय

एलेना राइबाकिना ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए पूर्व चैंपियन जेलेना ओस्टापेंको को 6-2, 6-2 से हराया। क्ले कोर्ट पर राइबाकिना की यह जीत उनके बेहतरीन फॉर्म का संकेत है। उन्होंने पहले ही मैच प्वाइंट पर फोरहैंड विनर के साथ मुकाबला समाप्त कर दिया।

पाओलिनी ने सीधे सेटों में मारी बाजी

इटली की चौथी वरीय जैस्मिन पाओलिनी ने यूक्रेन की यूलिया स्टारोडुब्त्सेवा को आसानी से सीधे सेटों में हराया। पिछले साल की फ्रेंच ओपन फाइनलिस्ट पाओलिनी अपने अगले मुकाबले में यूक्रेन की एलीना स्वितोलिना या अमेरिका की बर्नाडा पेरा से भिड़ेंगी।

भरत अरुण श्रीलंका में चलाएंगे तेज गेंदबाजों के लिए दो हफ्ते का स्पेशल कोचिंग कैंप

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के पूर्व गेंदबाजी कोच भरत अरुण अब श्रीलंका के शीर्ष क्रिकेटरों को ट्रेनिंग देने वाले भारतीय कोचों की श्रृंखला में नया नाम बन गए हैं। वे 2 जून से शुरू होने वाले 14 दिन के विशेष कोचिंग प्रोग्राम का संचालन करेंगे, जिसका उद्देश्य श्रीलंका के जूनियर और सीनियर स्क्वॉड्स के तेज गेंदबाजों के स्तर को ऊंचा उठाना है। श्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) ने एक आधिकारिक बयान में बताया कि यह प्रोग्राम हाई परफॉर्मेंस सेंटर में आयोजित किया जाएगा और इसका नेतृत्व भरत अरुण करेंगे, जो 2014 से 2021 तक भारतीय पुरुष टीम के गेंदबाजी कोच रह चुके हैं। इससे पहले मई में भारत के पूर्व फील्डिंग कोच आर श्रीधर ने श्रीलंका में 10

दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया था। वहीं पिछले साल राजस्थान रॉयल्स के हाई परफॉर्मेंस डायरेक्टर जुबिन भरूचा ने भी श्रीलंका में एक शॉर्ट बैटिंग कोचिंग प्रोग्राम का संचालन किया था। ये सभी पहल सनथ जयसूर्या के मुख्य कोच कार्यकाल के दौरान हुई हैं। एसएलसी के मुताबिक भरत अरुण, श्रीलंका की राष्ट्रीय पुरुष और महिला टीम, महिला 'ए' टीम, अंडर-19 पुरुष टीम, और हाई परफॉर्मेंस सेंटर के कोचों, क्लब व प्रांतीय कोचों, और कोच-एजुकेटर्स के साथ काम करेंगे। वे रेड-बॉल और व्हाइट-बॉल पुरुष टीमों के साथ अलग-अलग रणनीतिक सेशन, तेज गेंदबाजों के लिए तकनीकी और कौशल आधारित ट्रेनिंग, वीडियो व प्रदर्शन विश्लेषण सत्र, और मैच सिचुएशन आधारित गेम समझ विकसित करने वाली गतिविधियाँ संचालित करेंगे। फिलहाल श्रीलंका पुरुष टीम का इंटरनेशनल शेड्यूल बेहद हल्का है। अगले मई तक उन्हें केवल दो टेस्ट मैच खेलने हैं और वे इस साल होने वाले चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भी क्वालिफाई नहीं कर पाए हैं।

इंटरकॉन्टिनेंटल लीजेंड्स चैंपियनशिप: कड़े मुकाबले में ट्रांस टाइटंस की पहली जीत

एजेंसी

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में चल रहे इंटरकॉन्टिनेंटल लीजेंड लीग के चौथे दिन दोपहर 3:30 से शुरू हुआ दिन का पहला मुकाबला काफी धमाकेदार रहा। इस हाइ स्कोरिंग मुकाबले में ट्रांस टाइटंस ने यूरोपियन ग्लेडिएटर्स के खिलाफ 204 रनों का पीछा करते हुए अंतिम गेंद में 4 विकेट से जीत दर्ज की।टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने उतरी यूरोपियन ग्लेडिएटर्स ने शुरुआत तो सधी हुई की लेकिन राघव धवन (15) और अमित पौनीकर (29) के आउट होने के बाद टीम ने प्रवीण गुप्ता (4) और हिमांशु चावला (6) के रूप में जल्द ही दो और विकेट गंवा दिए। लेकिन फिर बल्लेबाजी करने आए गौरव धीमान (56) और आदिल रेशी के 31 गेंदों में नाबाद 64 रनों ने टीम को मजबूत स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। अंत में अनुरीत सिंह ने 5 गेंदों में 22 रन बनाकर टीम को 200 के पार पहुंचा दिया। टीम की ओर से अबु नीशम एक मात्र गेंदबाज रहे जिन्होंने सभी 4 विकेट अपने नाम किए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी ट्रांस टाइटंस शुरू से ही आक्रामक दिखी। शुरुआत करने उतरे पूर्व धाकड़ बल्लेबाज जैसी राइडर (17) और कप्तान ऋषि धवन ने 14 गेंदों में 30 रन बनाकर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई। जिसके बाद प्रतीक अठावले के 38 गेंद में 62 और पीनल शाह के 36 गेंदों में 62 रनों ने टीम को जीत की दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया। हालांकि अबु नीशम ने एक ही ओवर में 3 विकेट झटककर ग्लेडिएटर्स को एक बार फिर वापसी कराने की कोशिश की।

प्रज्ञान ओझा बने 'द लेजेनज़ी टी 10' के लीग कमिश्नर

एजेंसी

जयपुर। जयपुर में 25 जून से शुरू हो रही टेनिस बॉल क्रिकेट लीग 'द लेजेनज़ी टी 10' के लिए पूर्व भारतीय स्पिनर प्रज्ञान ओझा को कमिश्नर नियुक्त किया गया है। 24 टेस्ट, 18 वनडे और 6 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके प्रज्ञान लीग के संचालन की देखरेख और इस नए तरह की प्रतियोगिता की सफलता व विकास को सुनिश्चित करेंगे। द लेजेनज़ी टी 10 का विज़न भारत के स्ट्रीट क्रिकेटर्स को मंच प्रदान करना है। 'गली से टीवी तक' के नारे पर केंद्रित यह लीग जुनून को पहचान में बदलने का अवसर देती है। लीग के बारे में बात करते हुए लीग कमिश्नर प्रज्ञान ओझा ने एक आधिकारिक बयान में कहा, द लेजेनज़ी टी10 का हिस्सा बनकर मैं बेहद उत्साहित हूं। यह ऐसा मंच है जो ग्रासरूट क्रिकेट को बड़ी पहचान से जोड़ता है। मैं भी ऐसे जुनूनी खिलाड़ियों के साथ काम करने और कुछ खास बनाने को लेकर बहुत उत्सुक हूं।द लेजेनज़ी टी 10 के

चेयरमैन वेंकटेश प्रसाद ने कहा, हमने अपने स्थानीय पार्कों और गलियों में बहुत सारी असाधारण प्रतिभाएं देखी हैं। द लेजेनज़ी टी 10 का मंच ऐसी ही युवा प्रतिभाओं के लिए है, जिनमें अद्भुत कौशल और प्रदर्शन की भूख है। हमारा लक्ष्य एक ऐसा मंच तैयार करना है जो टेनिस बॉल क्रिकेट को हमेशा के लिए बदल कर रख देगा।÷ लीग में चार चांद लगाने के लिए पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी इरफान पठान भी इससे जुड़े रहेंगे, जो न ही सिर्फ खिलाड़ियों का मार्गदर्शन करेंगे, बल्कि मैदान पर उनके साथ खेलते भी नजर आएंगे। इच्छुक खिलाड़ी अपना 6 गेंदों का वीडियो और नामांकन शुल्क जमा कर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन कराने वाले हर खिलाड़ी को द लेजेनज़ी टी10 क्रिकेट बैट स्मृति चिन्ह के रूप में दिया जाएगा। इनमें से शीर्ष 5,000 खिलाड़ियों को चयनित करके उन्हें सिल्वर टिकट दिया जाएगा, जिससे वे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु और इंदौर में आयोजित होने वाले ट्रायल्स में भाग ले सकेंगे। इन खिलाड़ियों को एक साल की ऑनलाइन क्रिकेट ट्रेनिंग मॉड्यूल तक विशेष पहुंच भी दी जाएगी। ट्रायल्स से चुने गए सर्वश्रेष्ठ 150 खिलाड़ियों को गोल्डन टिकट मिलेगा, जिनमें से 72 खिलाड़ी ऑक्शन के माध्यम से डायमंड टिकट प्राप्त करेंगे और द लेजेनज़ी टी10 लीग में खेलेंगे। बाकी 78 खिलाड़ी गोल्डन टिकट बनाए रखेंगे और अगले सीज़न में सीधे खेलने का मौका पाएंगे।

एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप: पारुल ने बनाया नेशनल रिकॉर्ड, पूजा और गुलवीर ने दिलाया स्वर्ण

नई दिल्ली। दक्षिण कोरिया के गुमी में आयोजित एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में भारत के लिए दिन ऐतिहासिक रहा। पारुल चौधरी ने 3000 मीटर स्टीपलचेज़ में राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए रजत जीता। युवा हाई जम्पर पूजा और लंबी दूरी के धावक गुलवीर सिंह ने स्वर्ण जीतकर भारत का परचम लहराया।

नेशनल रिकॉर्ड के साथ पारुल को रजत पदक

भारतीय धाविका पारुल चौधरी ने महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज़ में 9:12.46 मिनट का समय लेकर रजत पदक जीता। यह प्रदर्शन उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ रहा और इसी के साथ उन्होंने 2025 दोहा डायमंड लीग में बनाया गया अपना ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड (9:13.39) तोड़ दिया।

आईपीएल 2025 में गुजरात का सफर समाप्त, मुंबई ने 20 रन से हराया

एजेंसी

न्यू चंडीगढ़। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के एलिमिनेटर मुकाबले में मुंबई इंडियंस ने गुजरात टाइटन्स को 20 रन से हरा दिया। इस जीत के साथ हार्दिक पांड्या के नेतृत्व वाली टीम क्वालिफायर-2 में पहुंच गई है। अब उसका सामना एक जून को अहमदाबाद में पंजाब किंग्स से होगा। न्यू चंडीगढ़ में खेले गए एलिमिनेटर मैच में मुंबई इंडियंस ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया और 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 228 रन बनाए। जवाब में गुजरात निर्धारित ओवरों में छह विकेट खोकर सिर्फ 208 रन बना पाई और यह मुकाबला 20 रन से हार गई। गुजरात के लिए साई सुदर्शन ने सबसे ज्यादा 80 रन बनाए। लक्ष्य पीछा करने उतरी गुजरात टीम की शुरुआत झटके के साथ हुई थी। कप्तान शुभमन गिल सिर्फ एक रन बना पाए। उन्हें ट्रेंट बोल्ट ने अपना शिकार बनाया। इसके बाद क्रीज पर आए कुसल मेंडिस हिट विकेट होकर पवेलियन लौट गए। उन्होंने साई सुदर्शन के साथ 34 गेंदों में 64 रनों की साझेदारी निभाई। इसमें मेंडिस का 20 रनों का योगदान रहा। फिर सुदर्शन को वाशिंगटन सुंदर का साथ मिला। दोनों के बीच 44 गेंदों में 84 रनों की साझेदारी हुई। सुंदर ने 48 और सुदर्शन ने 80 रन बनाए। वहीं, रदरफोर्ड ने 24, शाहरुख खान ने 13 रन बनाए। राहुल तेवतिया 16 और राशिद खान खाता खोले बिना नाबाद रहे। मुंबई इंडियंस के लिए ट्रेंट बोल्ट ने दो विकेट लिए जबकि जसप्रीत बुमराह, रिचर्ड ग्लीसन, मिचेल सैंटनर और अश्विनी कुमार ने एक-एक विकेट झटके। इससे पहले, टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए रोहित शर्मा और जॉनी बेयरस्टो की सलामी जोड़ी ने मुंबई को तेज शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 84 रनों की साझेदारी हुई। साई किशोर ने इस मैच में डेब्यू करने वाले बेयरस्टो को गेराल्ड कोएत्जी के हाथों कैच कराया। वह 22 गेंदों में चार चौके और तीन छक्के की मदद से 47 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद रोहित को सूर्यकुमार यादव का साथ मिला। दोनों ने 34 गेंदों में 59 रन जोड़े। इस दौरान सूर्यकुमार ने 20 गेंदों का सामना किया और 33 रन बनाकर पवेलियन लौटे।इस मैच में रोहित शर्मा ने 28 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। इसके अलावा उन्होंने आईपीएल में 300 छक्के भी पूरे कर लिए। वह आईपीएल में 300 छक्के का आंकड़ा छूने वाले पहले सक्रिय खिलाड़ी बन गए। अब उनके नाम 302* छक्के दर्ज हो गए हैं। आईपीएल में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का रिकॉर्ड क्रिस गेल के नाम दर्ज है।

इंग्लैंड लायंस के खिलाफ भारत ए की मजबूत शुरुआत, करुण नायर ने ठोका नाबाद शतक

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत ए के अनुभवी बल्लेबाज़ करुण नायर ने इंग्लैंड लायंस के खिलाफ पहले अनौपचारिक टेस्ट के पहले दिन नाबाद शतक जड़कर इंग्लैंड के खिलाफ अगले महीने होने वाले टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम में अपनी दावेदारी पेश की है। नायर ने शुरुआत से ही आक्रामक अंदाज़ में बल्लेबाज़ी की और दिन का खेल खत्म होने तक नाबाद रहे।

जल्दी गिरे विकेट, नायर ने संभाली कमान

मैच की शुरुआत में ही भारत ए को बड़ा झटका तब लगा जब कप्तान अभिमन्यु ईश्वरन महज़ 8 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद छठे ओवर में बल्लेबाज़ी के लिए उतरे नायर ने शुरुआत में ही एक बाउंड्री लगाकर अपने इरादे साफ कर दिए। यशस्वी जायसवाल ने कुछ देर साथ निभाया और एक शानदार छक्का भी जड़ा, लेकिन वह 24 रन बनाकर पवेलियन लौट गए।

सरफराज के साथ 181 रनों की साझेदारी

इसके बाद करुण नायर को सरफराज खान का साथ मिला और दोनों ने मिलकर इंग्लैंड लायंस के गेंदबाज़ों पर दबाव बनाना शुरू किया। दोनों बल्लेबाज़ों ने तेज़ी से रन बनाए और स्कोरबोर्ड को

लगातार आगे बढ़ाते रहे। जब दोनों खिलाड़ी 90 के करीब थे, तभी लायंस को सफलता मिली और सरफराज 92 रन पर आउट हो गए। उनकी और नायर की साझेदारी 181 रनों की रही।

जुरेल के साथ एक और बड़ी साझेदारी

सरफराज के आउट होने के बाद करुण नायर ने विकेटकीपर बल्लेबाज़ ध्रुव जुरेल के साथ पारी को आगे बढ़ाया। दोनों ने अगले 34 ओवरों तक कोई और विकेट नहीं गिरने दिया और लायंस की गेंदबाज़ी की कमर तोड़ दी। आईपीएल के बाद कम समय में ही मैदान में उतरे इन दोनों बल्लेबाज़ों ने थकान को दरकिनार कर ताबड़तोड़ बल्लेबाज़ी की।

नायर 186 और जुरेल 82 रन पर नाबाद

करुण नायर और ध्रुव जुरेल के बीच 177 रनों की नाबाद साझेदारी हुई और भारत ए ने दिन का खेल समाप्त होने तक 3 विकेट पर 409 रन बना लिए। नायर 186 रन पर नाबाद हैं और अब वह अपने दोहरे शतक के बेहद करीब हैं। वहीं जुरेल ने भी 82 रनों की नाबाद पारी खेली। दिन का खेल खत्म होना पर भारत ए ने 3 विकेट पर 409 रन बना लिए हैं।

आयकर विभाग ने आईटीआर-1, आईटीआर-4 के लिए एक्सेल सुविधा उपलब्ध कराई

नई दिल्ली। आयकर विभाग ने आकलन वर्ष 2025-26 में आईटीआर-1 और आईटीआर-4 के लिए एक्सेल यूटिलिटी फॉर्म को उपलब्ध करा दिया है। आयकर दाता अब इस फॉर्म का इस्तेमाल कर वित्त वर्ष 2024-25 में अर्जित आय के लिए अपना आयकर रिटर्न आईटीआर दाखिल करना शुरू कर सकेंगे।आयकर विभाग ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि उसने आकलन वर्ष 2025-26 के लिए आईटीआर-1 और आईटीआर-4 के लिए एक्सेल सुविधा उपलब्ध करा दी है, जिससे करदाता अपना आयकर रिटर्न दाखिल कर सकेंगे। इन सुविधाओं को उपलब्ध कराने के साथ ही करदाता वित्त वर्ष 2024-25 में अर्जित आय के लिए अपना आईटीआर दाखिल करना शुरू कर सकते हैं। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने इसी हफ्ते इस साल आईटीआर-1 और आईटीआर-4 में आयकर रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई से बढ़ा कर 15 सितंबर कर दी है। आईटीआर-1 और आईटीआर-4 फॉर्म ऐसे व्यक्ति, एचयूएफ और संस्थाएं भरते हैं, जिनकी सालाना आय 50 लाख रुपये तक है, जिन्हें अपने खातों का ऑडिट नहीं करवाना पड़ता।उल्लेखनीय है कि करदाता सूचीबद्ध शेयर से 1.25 लाख रुपये तक के दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ पाने वाले आय को आईटीआर-1 और आईटीआर-4 में दिखा सकते हैं। इससे पहले उन्हें आईटीआर-2 फार्म भी भरना पड़ता था।

एनपीएस ग्राहक 30 जून तक कर सकते हैं यूपीएस के अतिरिक्त लाभ का दावा

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के सेवानिवृत्त नेशनल पेंशन स्कीम (एनपीएस) ग्राहक जो न्यूनतम 10 वर्ष की अर्हक सेवा सहित सेवानिवृत्त हुए हैं, वे एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) के तहत अतिरिक्त लाभ का दावा कर सकते हैं। यह यूपीएस लाभ पहले से दावा किए गए एनपीएस लाभों के अतिरिक्त होंगे। वित्त मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि केंद्र सरकार के एनपीएस ग्राहक जो 31 मार्च, 2025 या उससे पहले न्यूनतम 10 वर्ष की अर्हक सेवा के साथ सेवानिवृत्त हुए हैं, वे 30 जून, 2025 तक पहले से दावा किए गए एनपीएस लाभों के अलावा एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) के तहत अतिरिक्त लाभों का दावा कर सकते हैं। इस फॉर्म को निम्न www.npscra.nsdl.co.in/ups.php से डाउनलोड किया जा सकता है। ऑनलाइन फॉर्म भरने के लिए www.npscra.nsdl.co.in/ups.php पर आप जा सकते हैं। केंद्र सरकार की ये नई स्कीम उन कानूनी रूप से विवाहित जीवनसाथियों पर भी लागू होती है जिनके पति या पत्नी, जो एनपीएस के लाभार्थी थे, अब इस दुनिया में नहीं हैं। इस योजना के तहत लाभ प्राप्त करने की अंतिम तारीख 30 जून 2025 निर्धारित है।

ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर वॉकी-टॉकी सहित रेडियो उपकरणों की बिक्री पर रोक

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर वॉकी-टॉकी सहित रेडियो उपकरणों की अवैध लिस्टिंग और बिक्री पर रोक लगा दी है। केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने ई-कॉमर्स साइटों पर रेडियो उपकरणों की अवैध बिक्री पर अंकुश लगाने के लिए मानदंड जारी किए हैं। सीसीपीए ने ऐसे उपकरणों की 16,970 लिस्टिंग की जांच के बाद ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म को नोटिस जारी किए हैं। उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने कहा कि गृह मंत्रालय और दूरसंचार विभाग के साथ अंतर-मंत्रालयी परामर्श के बाद इस दिशा-निर्देशों को अंतिम रूप दिया गया है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर वॉकी-टॉकी सहित रेडियो उपकरणों की अवैध लिस्टिंग और बिक्री की रोकथाम और विनियमन के लिए दिशा-निर्देश, 2025 का उद्देश्य उन वायरलेस उपकरणों की अनधिकृत बिक्री पर अंकुश लगाना है, जो उपभोक्ता सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा कर सकते हैं।

कमजोर ग्लोबल संकेतों के कारण शेयर बाजार में गिरावट, सेंसेक्स और निफ्टी लुढ़के

नई दिल्ली। कमजोर ग्लोबल संकेतों के कारण घरेलू शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत भी कमजोरी के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों की चाल में थोड़ी तेजी भी आई, लेकिन इसके बाद बिकवाली का दबाव बन जाने के कारण दोनों सूचकांक ने लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.22 प्रतिशत और निफ्टी 0.33 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज दिन भर के कारोबार के दौरान पीएसयू बैंक और कैपिटल

गुड्स सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। दूसरी ओर, मेटल, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और आईटी सेक्टर के शेयरों में जम कर बिकवाली होती रही। इसके अलावा ऑटोमोबाइल, ऑयल एंड गैस, एफएमसीजी, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, फार्मास्यूटिकल और टेक इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में आज मिला-जुला कारोबार होता रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.39 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसके विपरीत स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.17 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं से भरी दुनिया में 'भारत' वैश्विक स्तर पर सबसे भरोसेमंद साझेदार : केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव

एजेंसी
नई दिल्ली। केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं से भरी दुनिया में 'भारत' वैश्विक स्तर पर सबसे भरोसेमंद साझेदार बना हुआ है। उन्होंने इस भरोसे का श्रेय राजनीतिक स्थिरता, दूरदर्शी नेतृत्व, सांस्कृतिक मूल्यों और सस्टेनेबल भविष्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दिया। राष्ट्रीय राजधानी में सीआईआई 'एनुअल बिजनेस समिट 2025' में केंद्रीय मंत्री ने भारत की जलवायु नीति संरचना के बारे में बताया, जिसमें तीन प्रमुख चालकों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

उन्होंने बताया, 'भारत लीनियर से एक सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल में बदल रहा है, जिसका लक्ष्य अपशिष्ट को कम करना और संसाधन दक्षता को बढ़ाना है। सरकार ने रीसाइक्लिंग और सस्टेनेबल उपभोग को बढ़ावा देने के लिए टायर, बैटरी, प्लास्टिक और ई-कचरे सहित विभिन्न क्षेत्रों के लिए एक्सटेंडेड प्रोड्यूसर

रिस्पॉन्सिबिलिटी (ईपीआर) दिशानिर्देश पेश किए हैं। 2022 और 2024 के बीच, रीसाइक्लिंग सेक्टर ने कुल 10,000 करोड़ रुपए का निवेश आकर्षित किया, जो सस्टेनेबल प्रैक्टिस के प्रति उद्योग की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अनुमान है कि 2050 तक सर्कुलर इकोनॉमी सेक्टर का मूल्य 2 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगा, जिससे लगभग 10 मिलियन नौकरियों के अवसर पैदा होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने 'मिशन लाइफ' (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) और राष्ट्रव्यापी अभियान 'एक पेड़ मां के नाम' शुरू किया है, जो पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से एक समुदाय-संचालित पहल है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, 'मिशन लाइफ के तहत ग्रीन क्रेडिट नियमों की शुरुआत पर्यावरण संरक्षण की दिशा में स्वैच्छिक कार्यों को प्रोत्साहित करती है, जिससे सस्टेनेबिलिटी के कल्चर को बढ़ावा मिलता है।' सरकार ने जलवायु वित्त वर्गीकरण का ड्राफ्ट फ्रेमवर्क जारी किया है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) को प्रस्तुत की जाने वाली पहली राष्ट्रीय अनुकूलन योजना का विकास, अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने, ज्ञान प्रणालियों को मजबूत करने और जलवायु जोखिमों को कम करने पर केंद्रित है। केंद्रीय मंत्री ने उद्योग जगत के नेताओं से आत्मनिर्भर सर्कुलर अर्थव्यवस्था के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने का आग्रह किया।

उन्होंने उन्हें नॉलेज शेयरिंग और सस्टेनेबल प्रैक्टिस को सुविधाजनक बनाने के लिए एक सहयोगी मंच के रूप में भारत की जी20 प्रेसीडेंसी के तहत शुरू किए गए 'संसाधन दक्षता और सर्कुलर अर्थव्यवस्था उद्योग गठबंधन' में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने एडीबी अध्यक्ष मसातो कांडा से मुलाकात की, एडीबी के समर्थन और निवेश पर चर्चा

एजेंसी
नई दिल्ली। केंद्रीय आवास एवं शहरी मामले तथा ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल ने एशियाई विकास बैंक (एडीबी) के अध्यक्ष मसातो कांडा से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने भारतीय शहरीकरण में एडीबी के निरंतर समर्थन और निवेश पर चर्चा की। विद्युत मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने श्रम शक्ति भवन में एशियाई विकास बैंक के अध्यक्ष मसातो कांडा से मुलाकात की।

इस दौरान उन्होंने भारत की शहरी विकास पहलों के लिए एडीबी के निरंतर समर्थन पर चर्चा की। मंत्रालय के मुताबिक इस बैठक में भारत के शहरी परिवर्तन को गति देने के लिए सहयोग को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो कि विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप है। दोनों पक्षों ने देशभर में समावेशी, टिकाऊ तथा तकनीकी रूप से नवीन शहरी समाधानों को आगे बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया।केंद्रीय मंत्री ने केंद्रीय बजट 2025-26 में उल्लिखित प्राथमिकताओं के अनुरूप ज्ञान ढांचे को विकसित करने में एडीबी के सहयोग की सराहना की। इसके अलावा उन्होंने एडीबी द्वारा प्रदर्शन परियोजनाओं को शुरुआत करने में रुचि व्यक्त की, जो भविष्य के शहरी विकास के लिए प्रकाश स्तंभ मॉडल के रूप में काम कर सकती है।एशियाई विकास बैंक के अध्यक्ष मसातो कांडा ने रैपिड रेल ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) में भारत की प्रगति की सराहना की। इसके अलावा उन्होंने जमीनी स्तर पर नवाचार और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए एकीकृत नियोजन और निजी क्षेत्र की भागीदारी की आवश्यकता पर जोर दिया।

इंडियाएआई मिशन के तहत जीपीयू की संख्या बढ़कर 34,000 से अधिक हुई, एआई इकोसिस्टम को मिलेगा बढ़ावा: अश्विनी वैष्णव

एजेंसी
नई दिल्ली।इंडियाएआई मिशन ने दूसरे दौर में लगभग 16,000 अतिरिक्त ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (जीपीयू) को सूचीबद्ध किया गया है, जिससे मिशन के तहत उपलब्ध जीपीयू की संख्या बढ़कर 34,300 से अधिक हो गई है। इससे देश के एआई इकोसिस्टम को बढ़ाने में मदद मिलेगी। यह जानकारी केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दी। केंद्रीय मंत्री ने इंडियाएआई मिशन के कार्यक्रम में कहा कि बीते डेढ़ साल में हमने काफी प्रगति की है। हमने जीपीयू सूचीबद्ध करने का दूसरा चरण पूरा कर लिया है और तीसरा चरण भी जल्द पूरा होगा और सबके बाद काफी सारे जीपीयू और जुड़ेंगे। उन्होंने आगे कहा, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि तकनीक को कुछ लोगों के हाथों में न छोड़ा जाए। समाज के एक बड़े वर्ग की तकनीक तक पहुंच होनी चाहिए, उन्हें नए समाधान विकसित करने में सक्षम होना चाहिए और बेहतर अवसर मिलने चाहिए। यही वह उद्देश्य है जिसके साथ इंडिया एआई मिशन की

मॉडल डेवलपमेंट, गुणवत्तापूर्ण डेटासेट तक पहुंच, सेक्टर विशिष्ट एआई एप्लीकेशन, एआई लैब के माध्यम से अपस्किलिंग, डीप-टेक

शुरुआत की गई थी। मार्च 2024 में 10,372 करोड़ रुपए के बजट के साथ लॉन्च किए गए इंडियाएआई मिशन का लक्ष्य सात प्रमुख स्तंभों के माध्यम से एक मजबूत और समावेशी एआई इकोसिस्टम का निर्माण करना है। इसके सात स्तंभों में स्केलेबल जीपीयू आधारित कंप्यूट इंफ्रास्ट्रक्चर, स्वदेशी फाउंडेशनल स्टार्टअप के लिए फंडिंग और नैतिक, जिम्मेदार एआई प्रोजेक्ट के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय शामिल हैं। इस कार्यक्रम में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत, इंडियाएआई मिशन ने 'इंडियाएआई स्टार्टअप्स ग्लोबल इनिशिएटिव' के लिए 10 स्टार्टअप को चुने जाने की घोषणा भी है।

चौथी तिमाही में 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी भारतीय अर्थव्यवस्था

एजेंसी
नई दिल्ली।जनवरी-मार्च तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ने के बल पर वित्त वर्ष 2024-25 में भारतीय अर्थव्यवस्था ने 6.5 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल करते हुये दुनिया की 'सबसे तेजी से बढ़ने वाली' अर्थव्यवस्था का तमगा बरकरार रखा, लेकिन यह वृद्धि दर चार वर्ष में सबसे कम है। केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी जीडीपी के आंकड़ों के अनुसार अंतिम तिमाही जनवरी-मार्च में जीडीपी उम्मीद से बेहतर 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी, जो पिछली तीन तिमाहियों से अधिक है। वित्त वर्ष 2023-24 की अंतिम तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 8.4 प्रतिशत रही थी। दिसंबर में समाप्त तीसरी तिमाही के जीडीपी के आंकड़ों को संशोधित कर 6.4 प्रतिशत कर दिया गया है। मार्च 2025 में समाप्त तिमाही में नॉमिनल जीडीपी वृद्धि दर 10.8 रहने का अनुमान लगाया गया है। एनएसओ के आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2024-25 में वास्तविक जीडीपी में 6.5 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। वित्त वर्ष 2024-25 में नॉमिनल जीडीपी में 9.8 प्रतिशत की वृद्धि दर देखी गई है। वित्त वर्ष 2024-25 के वास्तविक जीडीपी के आंकड़े पिछले चार वर्ष में हालांकि सबसे कम है। वित्त वर्ष 2021-22 में यह वृद्धि दर 9.7 प्रतिशत, 2022-23 में 7.6 प्रतिशत और 2023-24 में 9.2 प्रतिशत रही थी। वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही के दौरान निर्माण क्षेत्र में 10.8 प्रतिशत की वृद्धि दर देखी गई है। इसके बाद 'लोक प्रशासन, रक्षा और अन्य सेवाओं' क्षेत्र में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि दर और 'वित्तीय, रियल एस्टेट और व्यावसायिक सेवाओं' क्षेत्र में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर देखी गई है। वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही में वास्तविक जीडीपी या स्थिर कीमतों पर जीडीपी 51.35 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है जो वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही के 47.82 लाख करोड़ रुपये की तुलना में 7.4 प्रतिशत अधिक है। वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही में नॉमिनल जीडीपी या मौजूदा कीमतों पर जीडीपी 88.18 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है जो 2023-24 की चौथी तिमाही के 79.61 लाख करोड़ रुपये की तुलना में 10.8 प्रतिशत अधिक है। वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही में वास्तविक जीवीए 45.76 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है जो वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही के 42.86 लाख करोड़ रुपये की तुलना में 6.8 प्रतिशत अधिक है।

ग्लोबल रियल टाइम पेमेंट में भारत की 47 प्रतिशत भागीदारी, यूपीआई का दायरा वैश्विक स्तर पर बढ़ा : सिंधिया

एजेंसी
नई दिल्ली । केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने जोर देकर कहा कि कुल डिजिटल लेन-देन का लगभग 47 प्रतिशत भारत से होता है और यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) का दायरा अब वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है। इसके अलावा, भारत आज टेक्नोलॉजी और दूरसंचार क्षेत्र में क्रांति का नेतृत्व कर रहा है। केंद्रीय मंत्री ने सीआईआई के 'एनुअल बिजनेस समिट 2025' में उदाहरण देते हुए बताया, 'भारत को डिजिटल-फर्स्ट इकोनॉमी के रूप में देखा जाता है और वर्तमान में दूरसंचार क्रांति चल रही है। स्केलेबिलिटी ने संचार की लागत को कम कर दिया है, जो वर्तमान में दुनिया में सबसे कम है। देश ने

दूरसंचार में 'आत्मनिर्भरता' हासिल की है और टेक्नोलॉजी स्टैक का निर्माण करने वाले चार देशों में से एक है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि टेक्नोलॉजी पोस्टल डिपार्टमेंट को भी बदल रही है और पोस्टल सिस्टम में नई सेवाएं शुरू की जा रही हैं।' उन्होंने कहा कि भारत का दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरना एक सराहनीय उपलब्धि है। केंद्रीय मंत्री ने भारत की प्रगति के केंद्र बिंदु के रूप में पूर्वोत्तर के महत्व को भी रेखांकित किया, जहां दशकीय विकास दर 12-13 प्रतिशत से अधिक है। उन्होंने कहा, 'देश के 8 राज्य विकसित भारत की महत्वाकांक्षा को आगे बढ़ाने वाले इंजन के रूप में उभरेंगे। सीआईआई के अध्यक्ष संजीव पुरी ने 'राइजिंग नॉर्थ-ईस्ट इन्वेस्टर्स समिट 2025' से 4.3 लाख करोड़ रुपए के निवेश में रुचि दिखाने के लिए केंद्रीय मंत्री को बधाई देते हुए कहा कि पूर्वोत्तर भारत दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए रणनीतिक प्रवेश द्वार के रूप में बदल रहा है, जो व्यापार, कनेक्टिविटी और विकसित भारत के लिए हमारी महत्वाकांक्षा को शक्ति प्रदान कर रहा है।हाल ही में हुए राइजिंग नॉर्थ ईस्ट इन्वेस्टर्स समिट 2025 में केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र वैश्विक साझेदारी और आपसी हितों के केंद्र के रूप में उभरा है। उन्होंने पिछले दिनों, दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए भारत के रणनीतिक प्रवेश द्वार के रूप में पूर्वोत्तर क्षेत्र की बढ़ती महत्ता को लेकर एक आर्टिकल भी लिखा था।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 6.99 अरब डॉलर बढ़कर 692.72 अरब डॉलर पर पहुंचा

एजेंसी
नई दिल्ली। अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर अच्छी खबर है। देश का विदेशी मुद्रा भंडार 23 मई को समाप्त हफ्ते में 6.99 अरब डॉलर बढ़ कर 692.72 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है।रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने जारी आंकड़ों में बताया कि 23 मई को समाप्त हफ्ते में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 6.99 अरब डॉलर बढ़ कर 692.72 अरब डॉलर रहा है। इससे पिछले हफ्ते देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.89 अरब डॉलर घट कर 685.73 अरब डॉलर रह गया था। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक 23 मई को समाप्त हफ्ते में विदेशी मुद्रा भंडार का प्रमुख घटक विदेशी मुद्रा आस्तियां 45.16 लाख डॉलर बढ़ कर 586.17 अरब डॉलर हो गई। स्वर्ण भंडार का मूल्य 2.37 अरब डॉलर बढ़ कर 83.58 अरब डॉलर हो गया। इसके अलावा विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 8.1 करोड़ डॉलर बढ़ कर 18.57 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास भारत का आरक्षित भंडार भी

तीन करोड़ डॉलर बढ़ कर 4.40 अरब डॉलर हो गया। उल्लेखनीय है कि सितंबर, 2024 के अंत में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 704.88 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था।

34 गीगावाट सौर क्षमता स्थापित करके राजस्थान की पूरे देश में सर्वाधिक अक्षय ऊर्जा क्षमता : ऊर्जा मंत्री

एजेंसी
जयपुर। जयपुर में आयोजित रीकनेक्ट शिखर सम्मेलन-25 में मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने कहा कि राजस्थान वर्तमान में स्थापित सौर क्षमता के मामले में भारत में सबसे आगे है, जिसमें 34 गीगावाट पहले से ही चालू है। राज्य में देश में सबसे अधिक अक्षय ऊर्जा क्षमता है, जिसमें सौर ऊर्जा में 142 गीगावाट और पवन ऊर्जा में 284 गीगावाट तक की क्षमता है। । ऊर्जा मंत्री ने कहा कि पिछले डेढ़ साल में ही हमने 10,772 मेगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता जोड़ी है। एकीकृत ऊर्जा नीति के तहत हमारा लक्ष्य 2030 तक 125 गीगावाट हासिल करना है। यह 500 गीगावाट के राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप है, जिसमें राजस्थान प्रमुख भूमिका निभा रहा है। राजस्थान भारत की अक्षय ऊर्जा क्रांति के केंद्र में है। आज, देश भर के निवेशक सौर और अन्य स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्रों में अवसरों के लिए राजस्थान की ओर देख रहे हैं। पिछले डेढ़ साल में, हमारी सरकार ने सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए हरसंभव कदम उठाए हैं - जिसमें एक समर्पित ऊर्जा नीति शुरू करना भी शामिल है। उन्होंने आगे कहा, हमारे सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में भूमि है, हमने भूमि आवंटन नीति को सरल बनाया है ताकि निवेशक आ सकें, निवेश कर सकें और राजस्थान के युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकें। इससे हमें अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने और भविष्य में अन्य राज्यों को बिजली देने में मदद मिलेगी। वे जयपुर, राजस्थान के क्लार्क्स आमेर होटल में एनर्जेटिका इंडिया पत्रिका द्वारा आयोजित रीकनेक्ट शिखर सम्मेलन-25, जयपुर में उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। ऊर्जा मंत्री ने राजस्थान को बैटरी ऊर्जा भंडारण के लिए राष्ट्रीय केंद्र बनाने की योजना का भी अनावरण किया, जिसका लक्ष्य केंद्र सरकार के सहयोग से 5,000 मेगावाट भंडारण क्षमता हासिल करना है। उन्होंने कहा, हमारे मुख्यमंत्री इस पर चर्चा करने के लिए दिल्ली गए हुए हैं। उन्होंने निवेशकों से ग्रिड स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सौर प्रतिष्ठानों के साथ कम से कम 25-30 प्रतिशत बैटरी भंडारण को एकीकृत करने का आग्रह किया। नागर ने घोषणा की कि राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा द्वारा घोषित रूफटॉप सोलर सिस्टम द्वारा संचालित राज्य की महत्वाकांक्षी 150 यूनिट मुफ्त बिजली योजना बहुत जल्द शुरू होने जा रही है। नागर ने कहा कि हमारा लक्ष्य 33,000 रुपये की केंद्रीय सब्सिडी और 17,000 रुपये की अतिरिक्त राज्य सब्सिडी के साथ 1.1 किलोवाट की छत पर सौर प्रणाली स्थापित करना है। इस छत पर सौर योजना से राज्य की क्षमता में 4,000-5,000 मेगावाट की वृद्धि होने की उम्मीद है। शिखर सम्मेलन में सौर पीवी विनिर्माण, ऊर्जा भंडारण अपनाने, कृषि को सौर ऊर्जा से जोड़ने, विनियामक सुधार और वाणिज्यिक, औद्योगिक और आवासीय छत विकास पर चर्चा हुई।

खाद्य पदार्थों के लेबलिंग और प्रचार में '100 प्रतिशत' के दावे का उपयोग न करें एफबीओ: एफएसएसएआई

एजेंसी
नई दिल्ली। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने खाद्य पदार्थों की लेबलिंग में 100 प्रतिशत शब्द के उपयोग के खिलाफ सख्त निर्देश जारी किया है। निर्देश के मुताबिक 100 प्रतिशत शब्द के उपयोग को उपभोक्ताओं के लिए गुमराह करने वाला बताया है। शीर्ष खाद्य नियामक ने सभी खाद्य व्यवसाय संचालकों (एफबीओ) से मौजूदा नियामक प्रावधानों के तहत इसकी अस्पष्टता और गलत व्याख्या की आशंका के कारण खाद्य लेबल, पैकेजिंग और प्रचार सामग्री पर इस शब्द का उपयोग करने से परहेज करने को कहा है। जारी सलाह में, एफएसएसएआई ने खाद्य उत्पाद लेबल और प्रचार प्लेटफार्मों पर 100 प्रतिशत शब्द के उपयोग में उल्लेखनीय बढ़ोतरी पर प्रकाश डाला। प्राधिकरण ने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह की शब्दावली न केवल वर्तमान नियमों के तहत अपरिभाषित है, बल्कि भ्रामक भी है और

fssai

उपभोक्ताओं के बीच एक गलत धारणा पैदा करने की आशंका है। खाद्य सुरक्षा और मानक (विज्ञापन और दावे) विनियम, 2018 के अनुसार, 100 प्रतिशत शब्द को एफएसएस अधिनियम, 2006, या उसके तहत बनाए गए नियमों और विनियमों में किसी भी तरह से परिभाषित या संदर्भित नहीं किया गया है। इसके अलावा, उपरोक्त विनियमों का उप-विनियम 10(7) किसी भी विज्ञापन या दावे को स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करता है जो प्रतिस्पर्धी उत्पादों को बदनाम करता है या उपभोक्ताओं को गुमराह करता है। उप-विनियम 4(1) यह अनिवार्य करता है कि सभी दावे सत्य, अस्पष्ट सार्थक और भ्रामक नहीं होने चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि उपभोक्ता जानकारी को सही ढंग से समझ और व्याख्या कर सकें। 100 प्रतिशत शब्द का उपयोग - चाहे अकेले या अन्य विवरणकों के साथ संयुक्त रूप से - पूर्ण शुद्धता या श्रेष्ठता का एक गलत प्रभाव पैदा करने की संभावना है। यह उपभोक्ताओं को यह विश्वास करने के लिए गुमराह कर सकता है कि बाजार में अन्य तुलनीय उत्पाद नियामक मानकों के अनुरूप निम्न या गैर-अनुपालक हैं।

लंदन और एथेंस सहित 10 नए अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों के लिए सीधी उड़ानें शुरू करेगी इंडिगो

एजेंसी
नई दिल्ली। एयरलाइन इंडिगो चालू वित्त वर्ष 2025-26 में लंदन और एथेंस सहित 10 नए अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों के लिए सीधी उड़ानें शुरू करने को तैयार है। इस कदम से एयरलाइन का वैश्विक नेटवर्क सिर्फ एक साल में 40 से 50 अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों तक पहुंच जाएगा। एयरलाइन का लक्ष्य वित्त वर्ष 2024-25 में 100 से अधिक नए मार्गों के जरिए 40 अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों और 20 भारतीय शहरों को जोड़ना है, जिससे भारत की 90 फीसदी आबादी तक इसकी पहुंच और बढ़ जाएगी।

इंडिगो के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) पीटर एल्बर्स ने एक बयान में कहा कि कंपनी के आगामी अंतरराष्ट्रीय विस्तार में एम्स्टर्डम (नीदरलैंड), मैनचेस्टर (यूके), कोपेनहेगन (डेनमार्क), सिएम रीप (कंबोडिया) और मध्य एशिया के चार गंतव्यों के लिए नए मार्ग शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि भारतीय विमानन क्षेत्र में जबरदस्त अवसर है, जहां बढ़ती मांग के साथ-साथ तेजी से बुनियादी ढांचे का विकास भी हो रहा है। उन्होंने कहा कि जुलाई से इंडिगो मुंबई से मैनचेस्टर और एम्स्टर्डम के लिए लीज पर लिए गए बोइंग 787-9 विमानों का उपयोग करके सीधी उड़ानें शुरू करेगी।

झारखंड ने 16वें वित्त आयोग से मांगे 3 लाख 3 हजार करोड़, मंत्रियों और अधिकारियों ने पेश की रिपोर्ट

एजेंसी
रांची । झारखंड सरकार ने 16वें वित्त आयोग से राज्य के विकास के लिए कुल 3 लाख 3 हजार 527 करोड़ रुपए का ग्रांट मांगा है। राज्य के चार दिवसीय दौरे पर आई आयोग की टीम के समक्ष राज्य सरकार के मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और प्रतिनिधियों ने विभिन्न क्षेत्रों में समेकित और समावेशी विकास के संभावित रोडमैप पर विस्तृत प्रेजेंटेशन दिया।

सरकार ने आयोग को बताया कि देश की आवश्यकताओं के लिए खनिज एवं प्राकृतिक संपदा संपन्न इस राज्य के संसाधनों का जितने बड़े पैमाने पर दोहन किया जाता है, उस अनुपात में उसे केंद्रीय अनुदान में हिस्सा अब तक नहीं मिल पाया है।

आयोग के अध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में राज्य सरकार की ओर से वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर, उच्च शिक्षा, नगर विकास एवं पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू, जल संसाधन मंत्री योगेंद्र प्रसाद एवं अन्य ने कहा कि झारखंड को विकास की दौड़ में आगे लाने के लिए इसे विशेष संरक्षण

और सहायता की जरूरत है। राज्य में चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं और सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए उठाए जा रहे कदमों से भी आयोग को अवगत कराया गया।

अधिकारिक तौर पर उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार, राज्य सरकार ने आधारभूत संरचना के विकास के लिए सबसे ज्यादा 2 लाख 1 हजार 772 करोड़ रुपए की मांग रखी है। इसके तहत सड़क, पुल, ग्रामीण विकास, परिवहन, शहरी विकास, ऊर्जा, उद्योग और पर्यटन आदि से संबंधित जरूरतों को रेखांकित किया गया है।

सामाजिक सेक्टर में विकास के लिए 44 हजार 447 करोड़, कृषि, वन एवं जल संसाधन के क्षेत्र के लिए 41 हजार 388 करोड़ और गृह, पंचायती राज, भूमि सुधार, राजस्व आदि क्षेत्र के लिए 17 हजार 918 करोड़ की मांगें आयोग के समक्ष रखी गई हैं।

बैठक के बाद मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा कि आयोग ने हमारे रोडमैप, राज्य की परिस्थितियों और जरूरतों के बारे में विस्तृत जानकारी ली है और हमारी मांगों के प्रति उनका रुख सकारात्मक है। आयोग ने संवैधानिक संस्था के रूप में समुचित कदम उठाने के प्रति हमें आश्वस्त किया है।

मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने बताया कि आयोग के समक्ष हमारी सरकार ने राज्य की विशिष्ट परिस्थितियों और जरूरतों के बारे में विस्तृत प्रतिवेदन रखा है। हम आयोग की ओर उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे हैं। हमें विश्वास है कि झारखंड के प्रति पूरा न्याय होगा और हर क्षेत्र के विकास के लिए हमें हमारी मांग के अनुसार अनुदान प्राप्त होगा।

अनन्या पांडे

के भाई का बॉलीवुड डेब्यू, साथ में दिखेगी ये खूबसूरत एक्ट्रेस, फिल्म का टीजर आ गया

अपने चाचा चंकी पांडे और कजन अनन्या पांडे की राह पर चलते हुए अहान पांडे भी बॉलीवुड में एंट्री कर रहे हैं. वो एक रोमांटिक-म्यूजिकल फिल्म के साथ शुरुआत कर रहे हैं. फिल्म का निर्माण देश के सबसे बड़े प्रोडक्शन हाउस में से एक YRF ने किया है. पिक्चर का नाम है 'सैयारा'. 30 मई को मेकर्स ने एक टीजर वीडियो जारी करके फिल्म की झलक भी दिखा दी है. इस फिल्म में अहान पांडे के साथ अनीत पड्डा नजर आने वाली हैं. बतौर लीड ये उनकी पहली फिल्म है. टीजर वीडियो की शुरुआत अनीत पड्डा की खूबसूरत आवाज से होती है. वो कहती हैं, मुझे तसल्ली दे दो जो, वो शब्द उधारा ढूंढ रहा है, एक सितार ढूंढ रहा है, दिल सैयारा ढूंढ रहा है.

यहां देखें अहान पंडे की पहली फिल्म का टीजर

टीजर में आगे अहान की झलक दिखाई जाती है. वो बाइक पर एंट्री करते हैं. आगे वो हाथ में गीटार लिए कहीं परफॉर्म करते नजर आ रहे हैं. वो काफी डैशिंग लग रहे हैं. उनके साथ अनीत पड्डा की केमिस्ट्री भी दिखाई जाती है. दोनों की जोड़ी काफी खूबसूरत लग रही है.

तुम एक्ट्रेस नहीं बन सकती, जिस हीरोइन को डायरेक्टर ने कही थी ये बात, उसने बॉलीवुड के 5-5 कपूर संग किया काम

बॉलीवुड में हमेशा से ही देखा जाता रहा है कि कभी सेलेब्स को लुक्स तो कभी रंगत के चलते डायरेक्टर-प्रोड्यूसर रिजेक्ट कर देते हैं. लेकिन, ऐसे कई सेलेब्स हैं जिन्हें फिल्ममकेर्स ने कम आंका और बाद में वो फिल्म इंडस्ट्री का बड़ा नाम बन गए. दिग्गज एक्ट्रेस हेमा मालिनी को भी छोटी उम्र में एक डायरेक्टर ने अपनी फिल्म से बाहर कर दिया था.हेमा मालिनी किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं. बॉलीवुड में सालों तक राज करने वाली हेमा अब भाजपा की सांसद हैं. 16 अक्टूबर 1948 को तमिलनाडु के तिरुच्चिराप्पल्ली में जन्मी हेमा ने महज 14 साल की छोटी सी उम्र में तमिल फिल्म 'इंधु साथियम' में छोटी सी भूमिका के जरिए अपनी शुरुआत कर दी थी.

फिल्म से निकाल दिया था

14 साल की उम्र में हेमा मालिनी काफी दुबली पतली हुआ करती थी और ऐसे में उन्हें एक डायरेक्टर ने अपनी फिल्म से निकाल दिया था. तमिल डायरेक्टर सीवी श्रीधर ने हेमा को अपनी एक फिल्म के लिए कास्ट किया था. लेकिन, बाद मे उन्होंने ये कहते हुए एक्ट्रेस को बाहर कर दिया कि तुम बहुत दुबली-पतली हो और एक्ट्रेस नहीं बन सकती. बताया जाता है कि फिल्म से बाहर होने के बाद हेमा डिप्रेशन में चली गई थीं. हालांकि उन्होंने हार नहीं मानी.

बड़े नाम के साथ किया काम

बॉलीवुड में आने से पहले हेमा मालिनी ने साउथ फिल्म इंडस्ट्री में कई छोटे मोटे किरदार निभाए थे. हिंदी सिनेमा में उनकी शुरुआत 1968 की फिल्म 'सपनों का सौदागर' से हुई थी. इस पिक्चर में उन्होंने दिग्गज एक्टर-डायरेक्टर राज कपूर के साथ काम किया था.

हेमा को अपनी फिल्म में लेने के दौरान ही राज कपूर ने ये साफ कह दिया था कि ये लड़की एक दिन बहुत आगे जाएगी.बॉलीवुड में हेमा को अपने करियर की शुरुआत में ही राज कपूर जैसी दिग्गज शख्सियत के साथ काम करने का मौका मिल गया था. इसके बाद हेमा ने अपने लंबे और सफल करियर में राज कपूर के परिवार के शम्मी कपूर, शशि कपूर, रणधीर कपूर और ऋषि पूर के साथ भी फिल्में कीं. वहीं कई दिग्गज एक्टर्स संग भी स्क्रीन शेयर की और 'ड्रीम गर्ल' कहलाई.